Postal Regn No./C.G./RYP DN/48/2022-24

website- www.dvpnews.in

रायपुर (छ.ग.) एवं झांसी (उ.प्र.) से एक साथ प्रकाशित राष्ट्रीय हिन्दी पत्र

दैनिक विश्व परिवार

● अंक : 266 ● वर्ष : 12 ● रायपुर, मंगलवार 15 अप्रैल 2025 ● पृष्ठ : 08 ● मूल्य : 3 रूपए ● संस्थापक : कीर्तिशेष- श्री कैलाश चन्द्र जैन

सुविचार

अर्थकारी विद्या परमार्थ के लिए बाधक होती है।

Lucrative knowledge is hindrance to the final bliss.

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज

संक्षिप्त समाचार

छत्तीसगढ़ खादी तथा ग्रामोद्योग बोर्ड के नवनियुक्त अध्यक्ष राकेश पांडेय ने पदभार ग्रहण किया

रायपुर (विसं)। मुख्यमंत्री श्री साय छत्तीसगढ़ खादी तथा ग्रामोद्योग बोर्ड के नवनियुक्त अध्यक्ष श्री राकेश पांडेय के पदभार ग्रहण कार्यक्रम में हुए शामिलमुख्यमंत्री श्री साय छत्तीसगढ़ खादी तथा ग्रामोद्योग बोर्ड के नवनियुक्त अध्यक्ष श्री राकेश पांडेय के पदभार ग्रहण कार्यक्रम में शामिल हुए। उन्होंने श्री पांडेय को नए दायित्व के लिए बहुत-बहुत बधाई और शुभकामनाएं दीं।

1800 करोड़ रुपए की 300 किलो ड्रग्स जब्त

नई दिल्ली (एजेंसी)। गुजरात में इंडियन कोस्ट गार्ड ने 300 किलो ड्रग्स जब्त की है, जिसकी कीमत करीब 1,800 करोड़ रुपए बताई जा रही है। जब्त ड्रग्स मेथामफेटामाइन हो सकता है। गुजरात एंटी-टेररिस्ट स्क्वाड और कोस्ट गार्ड ने 12-13 अप्रैल की रात ज्वाइंट ऑपरेशन के तहत पोरबंदर से 190 किमी दूर समुद्र से ड्रग्स की खेप को पकड़ा है। कोस्ट गार्ड ने अंतरराष्ट्रीय समुद्री सीमा रेखा की ओर सर्च के लिए जहाज भेजा था।

छत्तीसगढ़ में पेट्रोल पम्प के लिए लाइसेंस की जरूरत खत्म, पेट्रोल पम्प खोलना हुआ आसान

रायपुर (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ सरकार ने एक बड़ा फैसला लेते हुए पेट्रोलियम रिटेल आउटलेट्स यानी पेट्रोल पंप के लिए राज्य स्तर पर लाइसेंस की अनिवार्यता को खत्म कर दिया है। यह बदलाव 14 नवंबर 2024 को खाद्य नागरिक आपूर्ति और उपभोक्ता संरक्षण विभाग की ओर से जारी एक अधिसूचना के जरिए लागू किया गया है। अब पेट्रोल पंप खोलने के लिए व्यवसायियों को सिर्फ केंद्रीय पेट्रोलियम अधिनियम के नियमों का पालन करना होगा। पहले की दोहरी अनुमति की प्रक्रिया को हटाकर इसे आसान बना दिया गया है।

क्या बदला और क्यों है यह अहम- पहले पेट्रोल पंप शुरू करने के लिए व्यवसायियों को कलेक्टर के माध्यम से खाद्य विभाग से क्रय विक्रय का लाइसेंस प्राप्त करना होता था। प्रत्येक वर्ष अथवा तीन वर्ष में एक बार लाइसेंस का रिन्यूवल कराना होता था। राज्य शासन और केंद्र, दोनों जगह से अनुमति लेने की दोहरी प्रक्रिया से समय और पैसा दोनों खर्च होते थे, साथ ही कागजी कार्रवाई भी बढ़ जाती थी। अब केवल केंद्र के नियमों का पालन करना काफी होगा। इससे व्यवसायियों को राहत मिलेगी और पेट्रोल पंप खोलने की प्रक्रिया तेज और सस्ती हो जाएगी। यह कदम छत्तीसगढ़ में व्यवसाय को बढ़ावा देने और नियमों को सरल बनाने की दिशा में बड़ा बदलाव है।

व्यवसायियों को कैसे होगा फायदा- अब कम कागजी कार्रवाई और एक ही स्तर की अनुमति से पेट्रोल पंप जल्दी शुरू हो सकेंगे। नए व्यवसायी, खासकर छोटे उद्यमी और तेल कंपनियां, बिना ज्यादा परेशानी के अपना काम शुरू कर सकेंगे। यह सुधार ग्रामीण और दूरदराज के इलाकों में पेट्रोल पंप खोलने को बढ़ावा देगा, जहां अभी ईंधन की पहुंच कम है।

राज्य और जनता को क्या लाभ- इस बदलाव से छत्तीसगढ़ में ईंधन की उपलब्धता बढ़ेगी, जिससे लोगों को पेट्रोल-डीजल आसानी से मिल सकेगा। खासकर उन इलाकों में, जहां अभी पेट्रोल पंप कम हैं, वहां सुविधा बेहतर होगी। साथ ही, नए पेट्रोल पंप खुलने से राज्य में निवेश बढ़ेगा और बुनियादी ढांचे का विकास होगा। यह सरकार के उस लक्ष्य को भी पूरा करता है, जिसमें व्यवसाय करने में आसानी और आर्थिक विकास पर जोर दिया गया है।

छत्तीसगढ़ बन रहा व्यवसाय के लिए आकर्षक

मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय का कहना है कि छत्तीसगढ़ सरकार राज्य में व्यवसायों के लिए अनुकूल माहौल बनाने को लेकर गंभीर है। नियमों को सरल करके और अनावश्यक बाधाओं को हटाकर राज्य उद्योग, व्यवसाय को सहूलियत और निवेश को प्रोत्साहित करने की दिशा में काम कर रही है। इससे न सिर्फ व्यवसायियों को फायदा होगा, बल्कि राज्य की जनता को भी बेहतर सेवाएं मिलेंगी। छत्तीसगढ़ सरकार के इस निर्णय से पेट्रोल पंप खोलना आसान हो गया है। यह कदम न केवल सभी क्षेत्रों में ईंधन की पहुंच बढ़ाएगा, बल्कि राज्य की अर्थव्यवस्था को भी मजबूत करेगा।

छत्तीसगढ़ में मोदी की एक और गारंटी हुई पूरी

प्रदेश की 1460 ग्राम पंचायतों में 24 अप्रैल पंचायत दिवस से शुरू होगी नगद भुगतान की सुविधा सहित अन्य डिजिटल सेवाएं

कॉमन सर्विस सेंटर के सेवा प्रदाता और सरपंचों के बीच हुआ एमओयू

प्रधानमंत्री मोदी ने छत्तीसगढ़ की जनता से ग्राम पंचायतों में नगद भुगतान की सुविधा शुरू करने का किया था वादा

मुख्यमंत्री साय ने अटल पंचायत डिजिटल सुविधा केंद्र के लिए आयोजित एमओयू कार्यक्रम को किया संबोधित

रायपुर (विश्व परिवार)। भारत रत्न डॉ. भीमराव अंबेडकर की जयंती के अवसर पर छत्तीसगढ़ में मोदी की एक और गारंटी पूरी होने जा रही है। प्रदेश की 1460 ग्राम पंचायतों में 24 अप्रैल, पंचायत दिवस से नगद भुगतान सहित अन्य डिजिटल सेवाएं शुरू की जाएंगी। मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय की उपस्थिति में प्रदेश के प्रत्येक विकासखंड की 10-10 ग्राम पंचायतों में 'अटल पंचायत डिजिटल सुविधा केंद्र' के लिए एमओयू किया गया। इन सुविधा केंद्रों में ग्रामीणों को अब बहुत सारी सुविधाएं एक ही छत के नीचे मिल सकेंगी। वे अपने खाते से आसानी से पैसे निकाल सकेंगे, अपने

खाते से किसी अन्य के खाते में पैसे भेज सकेंगे, बिजली-पानी बिल का भुगतान कर सकेंगे तथा पेंशन-बीमा जैसी अनेक सुविधाओं का लाभ अपने पंचायतों में ही ले सकेंगे।

अटल पंचायत डिजिटल सुविधा केंद्र के लिए कॉमन सर्विस सेंटर के सेवा प्रदाताओं और सरपंचों के बीच आज एमओयू हुआ। यह कार्यक्रम प्रदेश के सभी जिला मुख्यालयों में आयोजित किया गया। इन सुविधा केंद्रों के आरंभ होने से ग्रामीणों को छोटे-छोटे कार्यों के लिए विकासखंड और जिला मुख्यालय नहीं जाना पड़ेगा। गांव में ही उन्हें बहुत-सी सुविधाओं का लाभ मिल सकेगा।

मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय ने अपने निवास कार्यालय से वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से जिला मुख्यालयों में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि छत्तीसगढ़ के लिए आज ऐतिहासिक दिन है। मोदी की गारंटी की एक और गारंटी पूरी करने जा रहे हैं। विधानसभा चुनाव के दौरान प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने छत्तीसगढ़ की जनता से ग्राम पंचायतों में नगद भुगतान की सुविधा शुरू करने का वादा किया था, जो अब पूरा होने जा रहा है। मुख्यमंत्री ने कहा कि ग्राम पंचायतों में शुरू हो रहे इन सुविधा केंद्रों से किसान धान का भुगतान, महतारी वंदन योजना, पेंशन तथा अन्य योजनाओं की राशि का भुगतान ले सकेंगे, साथ ही जन्म-मृत्यु प्रमाण पत्र सहित अन्य सुविधाओं का भी लाभ ले सकेंगे।

पीएम मोदी ने हिसार-अयोध्या फ्लाइट को दिखाई हरी झंडी, नए टर्मिनल भवन का शिलान्यास भी किया

हिसार (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने हिसार को पहले एयरपोर्ट की सौगात दी। उन्होंने एयरपोर्ट से हिसार-अयोध्या फ्लाइट को हरी झंडी दिखाई और बटन दबाकर नए टर्मिनल का शिलान्यास भी किया। हरियाणावासियों को इस शुभ दिन की बधाई देते हुए उन्होंने कहा, यह शुरुआत हरियाणा के विकास को नई ऊंचाइयों पर लेकर जाएगी।

पीएम मोदी ने कहा, आज हरियाणा से अयोध्या धाम के लिए फ्लाइट शुरू हुई है। यानी अब श्रीकृष्ण जी की पावन भूमि हरियाणा, श्रीराम जी की भूमि से सीधी जुड़ गई है। बहुत जल्द यहां से दूसरे शहरों के लिए भी उड़ानें शुरू होंगी। आज हिसार एयरपोर्ट की नई टर्मिनल बिल्डिंग का शिलान्यास भी हुआ है। यह शुरुआत हरियाणा के विकास को नई ऊंचाइयों पर लेकर जाएगी। हरियाणा के लोगों को इस नई शुरुआत के लिए ढेर सारी बधाई देता हूं। मेरा आपसे वादा रहा है कि हवाई चप्पल पहनने वाला भी हवाई जहाज में उड़ेगा।

प्रधानमंत्री ने एक आंकड़े की जुबानी आम लोगों की हवाई यात्रा की कहानी सुनाई। उन्होंने कहा, बीते दस सालों में करोड़ों भारतीयों ने जीवन में पहली बार हवाई सफर किया है। हमने वहां भी नए एयरपोर्ट बनाए, जहां कभी अच्छे रेलवे स्टेशन तक नहीं थे। 2014 से पहले देश में 74 एयरपोर्ट थे, 70 साल में 74। आज देश में एयरपोर्ट की संख्या 150 के पार हो गई है।

पीएम मोदी ने अंबेडकर जयंती के खास अवसर पर लोगों को बधाई देते हुए कहा, आज का दिन हम सभी के लिए, पूरे देश के लिए और खासकर दलित, पीड़ित, वंचित, शोषित के लिए बहुत महत्वपूर्ण दिन है। उनके जीवन में ये दूसरी दिवाली है। आज संविधान निर्माता बाबा साहेब अंबेडकर की जयंती है। उनका जीवन, उनका संघर्ष, उनका संदेश हमारी सरकार की 11 साल की यात्रा का प्रेरणा स्तंभ बना है। हर दिन, हर फैसला, हर नीति, बाबा साहेब अंबेडकर को समर्पित है।

इससे पहले पीएम मोदी ने हिसार से अपने पुराने रिश्ते का जिक्र किया। बोले, खाटे जवान, खाटे खिलाड़ी, और थारा भाईचारा जो है हरियाणा की पहचान। हिसार से मेरी इतनी यादें जुड़ी हुई हैं। जब भाजपा ने मुझे हरियाणा की जिम्मेदारी दी थी, तो यहां अनेक साथियों के साथ मैंने लंबे समय तक काम किया।

कोलकाता हाईकोर्ट ने चुनाव आयोग की प्रक्रियाओं पर जताया पूर्ण संतोष

मुख्य न्यायाधीश टी.एस. शिवगननम की अध्यक्षता में दिया गया महत्वपूर्ण निर्णय

रायपुर (विश्व परिवार)। कोलकाता हाईकोर्ट ने एक जनहित याचिका पर सुनवाई करते हुए भारत निर्वाचन आयोग (ECI) द्वारा अपनाई गई नामांकन और नागरिकता सत्यापन की प्रक्रियाओं पर पूर्ण संतोष व्यक्त किया है।

WPA(P)/85/2025- Manik Fakir @ Manik Mondal vs Union of India & Ors. नामक इस मामले में याचिकाकर्ता ने आरोप लगाया था कि निर्वाचित प्रतिनिधियों के लिए पूर्ण नागरिकता सत्यापन अनिवार्य होना चाहिए, और यह कार्य चुनाव आयोग द्वारा उचित रूप से नहीं किया गया है। साथ ही यह चिंता भी जताई गई कि कुछ विदेशी नागरिक अवैध रूप से भारतीय नागरिकता प्राप्त कर चुनाव प्रक्रिया में भाग ले सकते हैं, विशेषकर आगामी 2026 पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव में।

इस पर माननीय मुख्य न्यायाधीश टी. एस. शिवगननम ने स्पष्ट किया कि चुनाव आयोग तब कार्य करता है जब चुनाव अधिसूचित हो जाता है और उम्मीदवार नामांकन दाखिल करता है। आयोग द्वारा अपनाई गई प्रक्रियाओं में पहले से ही पर्याप्त जांच और संतुलन हैं।

यदि कोई शिकायत पूर्ण रूप में प्राप्त होती है, तो उस पर निश्चित रूप से कार्रवाई की जाती है। कोई भी नागरिक किसी उम्मीदवार के नामांकन की वैधता को लेकर आपत्ति दर्ज करा सकता है।

अदालत ने यह भी कहा कि नए प्रकार की प्रक्रिया लागू करना एक विधायी कार्य है, जिसे न्यायालय अपने अधिकार क्षेत्र (अनुच्छेद 226) के अंतर्गत नहीं कर सकता। अंतत:, अदालत ने याचिका को इन टिप्पणियों के साथ निस्तारित कर दिया और चुनाव आयोग की प्रक्रियाओं को वैध और संतोषजनक करार दिया।

नक्सलियों के सामूहिक आत्म समर्पण पर दोगुना इनाम

रायपुर (विश्व परिवार)। नक्सल प्रभावित छत्तीसगढ़ में अब हिंसा छोड़कर समाज की मुख्यधारा में लौटने वाले नक्सलियों को सरकार और अधिक प्रोत्साहन देगी। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में तैयार नई नक्सल आत्मसमर्पण नीति के तहत सामूहिक आत्मसमर्पण करने वालों को न केवल घोषित इनाम की दोगुनी राशि मिलेगी, बल्कि नक्सल मुक्त घोषित ग्राम पंचायतों में एक करोड़ के विशेष विकास कार्य भी कराए जाएंगे।

गांव के नक्सल मुक्त होने पर 1 करोड़ रुपए के होंगे विकास कार्य, छत्तीसगढ़ की नई नक्सलवादी आत्मसमर्पण नीति में विशेष प्रावधान

नक्सली संगठन की किसी फॉर्मेशन इकाई के यदि 80 प्रतिशत या उससे अधिक सक्रिय सदस्य सामूहिक रूप से आत्मसमर्पण करते हैं, तो उन्हें उनके विरुद्ध घोषित इनामी राशि की दोगुनी राशि प्रदान की जाएगी। इसके साथ ही सुकमा, बीजापुर, दंतेवाड़ा, नारायणपुर और कांकेर जैसे अति नक्सल प्रभावित जिलों में यदि किसी ग्राम पंचायत क्षेत्र में सक्रिय समस्त नक्सली व मिलिशिया सदस्य आत्मसमर्पण करते हैं, और ग्राम पंचायत को नक्सल मुक्त घोषित किया जाता है, तो वहां एक करोड़ रूपए के विकासात्मक कार्य स्वीकृत किए जाएंगे। नई नीति के तहत यदि पति-पत्नी दोनों आत्मसमर्पण करते हैं, तो उन्हें पृथक इकाई मानते हुए अलग-अलग पुनर्वास योजनाओं का लाभ दिया जाएगा। हालांकि यदि किसी योजना में दोनों को एक इकाई माना जाता है, तो वहीं के अनुसार लाभ मिलेगा।

लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने डॉ. अम्बेडकर नगर-कोटा-नई दिल्ली एक्सप्रेस का कोटा एवं डॉ. अम्बेडकर नगर रेलवे स्टेशनों से हरी झण्डी दिखाकर शुभारंभ किया

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव, केंद्रीय रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से जुड़कर हरी झंडी दिखाई

दिल्ली (विश्व परिवार)। देश में रेल संपर्क सुविधा को बेहतर बनाने के उद्देश्य से माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के दृष्टिकोण के अनुरूप और भारतीय संविधान निर्माता बाबासाहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर जयंती की पूर्व संध्या पर रविवार 13 अप्रैल 2025 को नई रेलगाड़ी डॉ. अम्बेडकर नगर-कोटा-नई दिल्ली एक्सप्रेस ट्रेन, जो मध्य प्रदेश एवं राजस्थान राज्यों को भारत की राजधानी नई दिल्ली से सीधे जुड़ने की सौगात मिली। इस अवसर पर माननीय अध्यक्ष लोकसभा ओम बिरला जी द्वारा रविवार 13 अप्रैल 2025 को डॉ. अम्बेडकर नगर एवं कोटा रेलवे स्टेशनों पर डॉ. अम्बेडकर नगर-कोटा-नई दिल्ली एक्सप्रेस ट्रेन का शुभारंभ कर हरी झण्डी दिखाकर रवाना किया गया। इस कार्यक्रम के दौरान नई ट्रेन डॉ. अम्बेडकर नगर-कोटा-नई दिल्ली एक्सप्रेस को वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम से माननीय मुख्यमंत्री मध्य प्रदेश डॉ. मोहन यादव और माननीय केंद्रीय रेल, सूचना एवं प्रसारण, इलेक्ट्रॉनिकी एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री अश्विनी वैष्णव ने भी नई ट्रेन को हरी झण्डी दिखाकर रवाना किया।

इस अवसर पर डॉ. अम्बेडकर नगर रेलवे स्टेशन से माननीया महिला एवं बाल विकास राज्य मंत्री सावित्री ठाकुर, माननीय सांसद उज्जैन अनिल फिरोजिया, माननीय सांसद इंदौर शंकर लालवानी एवं माननीया सांसद राज्यसभा कविता पाटीदार उपस्थित रहे। इनके अलावा कोटा एवं डॉ. अम्बेडकर नगर शहर के अन्य सांसदों/विधायकों और शहरों के गणमान्य नागरिकों तथा बड़ी संख्या में स्थानीय जनसमूहों के रूप में मौजूद रहते हुए कार्यक्रम में हिस्सा लिया। इस कार्यक्रम के दौरान कोटा रेलवे स्टेशन से पश्चिम मध्य रेलवे के कोटा मण्डल से मण्डल रेल प्रबंधक एवं डॉ.अम्बेडकर नगर रेलवे स्टेशन से पश्चिम मध्य रेल के रतलाम मण्डल से मण्डल रेल प्रबंधक सहित दोनों मंडलों के वरिष्ठ अधिकारी भी मौजूद थे।

इस अवसर पर ओम बिरला जी ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में बीते 10 वर्षों में रेलवे की दिशा और दशा दोनों बदली है। अब रेलवे केवल एक परिवहन साधन नहीं, बल्कि भारत के विकास का इंजन बन चुकी है। वंदे भारत और नमो भारत जैसी आधुनिक ट्रेनें भारत की गति, आत्मनिर्भरता और आत्मविश्वास की प्रतीक हैं। स्पीकर बिरला ने कहा कि यह केवल एक ट्रेन की शुरुआत नहीं, बल्कि विकास, संपर्क और सामाजिक समावेशन की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

दैनिक
विश्व परिवार
रायपुर/दुर्ग-भिलाई/बलौदाबाजार
रायपुर, मंगलवार 15 अप्रैल 2025
www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com
2

संक्षिप्त समाचार

राज्यपाल रमेन डेका ने भारत रत्न डॉ. भीमराव अंबेडकर को दी श्रद्धांजलि

रायपुर (विश्व परिवार)। राज्यपाल श्री रमेन डेका ने आज राजभवन में भारत रत्न एवं भारतीय संविधान के शिल्पकार डॉ. भीमराव अंबेडकर की जयंती पर उनके छायाचित्र पर माल्यार्पण कर श्रद्धासुमन अर्पित किए। इस अवसर पर राजभवन के अधिकारियों-कर्मचारियों ने भी श्रद्धासुमन अर्पित किए। राज्यपाल श्री डेका ने कहा कि बाबा साहेब का जीवन संघर्षो से भरा हुआ था। उन्होंने सामाजिक भेदभाव, छूआछूत, असमानता के विरुद्ध आजीवन संघर्ष किया। उन्होंने शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन का सबसे सशक्त माध्यम माना और स्वयं इसके उदाहरण बने। कठिन परिस्थितियों में भी उन्होंने अनेक उपाधियाँ प्राप्त कीं और देश के पहले विधि मंत्री के रूप में अपनी भूमिका का निर्वहन किया। राज्यपाल श्री डेका ने कहा कि डॉ. भीमराव अम्बेडकर न्याय व समतामूलक समाज के निर्माण के लिए सदैव प्रयत्नशील रहे। उन्होंने समाज के शोषित, पीड़ित एवं कमजोर तबके के लोगों के सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आज जब हम बाबा साहेब को याद कर रहे हैं, तब यह आवश्यक है कि हम केवल औपचारिकताएं न करें, बल्कि उनके विचारों को व्यवहार में उतारें। समता, बंधुत्व और न्याय के सिद्धांत को हमें समाज के प्रत्येक स्तर पर स्थापित करना होगा। इस अवसर पर राज्यपाल के विधिक सलाहकार श्री भीष्म प्रसाद पाण्डेय, उप सचिव श्रीमती हिना अनिमेष नेताम सहित राजभवन के अधिकारी-कर्मचारी उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय छत्तीसगढ़ मनवा कुर्मी क्षत्रिय समाज के महाअधिवेशन में हुए शामिल

रायपुर (विश्व परिवार)। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय आज राजधानी रायपुर के बलवीर सिंह जुनेजा इंडोर स्टेडियम में आयोजित छत्तीसगढ़ मनवा कुर्मी क्षत्रिय समाज रायपुर राज के 79वें महाधिवेशन में शामिल हुए। इस अवसर पर उन्होंने ग्राम नरदहा में कुर्मी समाज के सामाजिक भवन हेतु 50 लाख रुपये की घोषणा की। कार्यक्रम की शुरुआत अतिथियों द्वारा भारत माता, छत्तीसगढ़ महतारी और प्रदेश की महान विभूतियों के छायाचित्रों पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलन के साथ हुई। इस अवसर पर राजस्व मंत्री श्री टंक राम वर्मा, पूर्व राज्यपाल श्री रमेश बैस, रायपुर सांसद श्री बृजमोहन अग्रवाल, रायपुर ग्रामीण विधायक श्री मोतीलाल साहू, तथा छत्तीसगढ़ मनवा कुर्मी क्षत्रिय समाज के केंद्रीय अध्यक्ष श्री खोड़स राम कश्यप सहित समाज के अन्य पदाधिकारी एवं बड़ी संख्या में जनप्रतिनिधिगण उपस्थित थे। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने महाधिवेशन को संबोधित करते हुए कहा कि कुर्मी समाज एक परिश्रमी और आत्मनिर्भर समाज है, जो परंपरागत रूप से खेती-किसानी से जुड़ा रहा है और विकास के पथ पर निरंतर अग्रसर है।

देवपुरी क्षेत्र में 16वें नवकार जाप का आयोजन

रायपुर (विश्व परिवार)। नवकार जाप ग्रुप द्वारा प्रत्येक माह के द्वितीय रविवार को सकल जैन समाज की सभी परम्पराओं के साथ सभी ग्रंथों व पथों में एक रुपेण मान्य शाश्वत मंत्र 'नवकार महामंत्र' के जाप का आयोजन किया जाता है। इसी क्रम में दिनांक 13 अप्रैल 2025, रविवार को 16वें नवकार जाप का आयोजन रायपुर देवपुरी स्थित श्री जैकी संचेती के निवास अर्हम टावर में देवपुरी-कमल विहार-एंबियंस जैन श्री संघ के संयुक्त तत्वावधान में नवकार जाप ग्रुप द्वारा किया गया। जिसमें सकल जैन समाज के श्रावक-श्राविकाओं की सहभागिता रही। नवकार जाप के पश्चात नवकार ग्रुप द्वारा स्थानीय जैन श्री संघ के अभय दुग्गड, जैकी संचेती, डॉ. अर्पण चतुर्मुथा व संघ के अन्य सदस्यों को मोमेंटो देकर सम्मानित किया गया। नवकार जाप में विशेष रूप से आशीष जैन, राजेन्द्र पारख, वीरेंद्र डागा, निकुंज साचला उपस्थित रहे। -**वीरेंद्र डागा**

बीजापुर में 7 माओवादी गिरफ्तार, विस्फोट बरामद

बीजापुर (विसं)। डीआरजी, थाना भैरमगढ़ एवं थाना मिरतुर, छत्तीसगढ़ सशस्त्र बल 15/ई वाहिनी की अलग अलग संयुक्त कार्यवाही के दौरान माओवादी गिरफ्तार किए गए हैं. एएसपी चंद्रकांत गोवर्ना जिले में चलाये जा रहे माओवादी विरोधी अभियान के तहत 14 अप्रैल को थाना भैरमगढ़ से डीआरजी, पुलिस कोलनार, डालेर की ओर एरिया डॉमिनेशन पर निकली था. अभियान के दौरान डालेर के जंगल से विस्फोटक के साथ 06 सक्रिय माओवादियों को पकड़ा गया.

माओवादियों के कब्जे से ये सामान बरामद हुए- टिफिन बम, कार्डेक्स वायर, जिलेटीन स्टीक, डेटोनेटर, बैटरी, इलेक्ट्रिक वायर, जमीन खोदने का औजार।

ये नक्सली गिरफ्तार- आयतु ओयाम ऊर्फ गुर्जु (कोलनार आरपीसी जनताना सरकार सदस्य) पिता बुला ओयाम उम्र 50 वर्ष निवासी कोलनार थाना भैरमगढ़। फागु मिच्चा (कोलनार आरपीसी DAKMS सदस्य) पिता हड़मा उम्र 45 वर्ष निवासी कोलनार थाना भैरमगढ़। रामू वेको (कोलनार आरपीसी मिलिशिया प्लाटून सदस्य) पिता मासो उम्र 24 वर्ष निवासी कोलनार थाना भैरमगढ़। लक्ष्मण वेको (कोलनार आरपीसी मिलिशिया प्लाटून सदस्य) पिता दासू उम्र 21 वर्ष निवासी कोलनार थाना भैरमगढ़। रानू पोड़ियाम (कोलनार आरपीसी मिलिशिया प्लाटून सदस्य) पिता भीमा उम्र 20 साल कोलनार थाना भैरमगढ़। चमरू ओयाम (कोलनार आरपीसी संघम सदस्य) पिता स्व0पाण्डू उम्र 38 वर्ष निवासी कोलानार थाना भैरमगढ़।

वहीं थाना मिरतुर और कैम्प चेरली 15/ई वाहिनी की संयुक्त कार्रवाई में बेचापाल गांडुकलपारा मोड़ से 1 माओवादी को पकड़ा गया. जिसके कब्जे से पिट्ठू बैग में टिफिन बम, बैटरी, बिजली का तार, पटाखा बरामद किया गया. इस माओवादी का नाम अजय ऊर्फ गुण्डी कोरसा है. वह मिलिशिया सदस्य है. एटेपाल बड़ेपारा थाना मिरतुर जिला बीजापुर का निवासी है.

पुलिस अधिकारी ने बताया कि सभी पकड़े गये माओवादियों के खिलाफ भैरमगढ़ और मिरतुर में अलग अलग वैधानिक कार्रवाई के बाद बीजापुर कोर्ट में पेश किया गया जहां से उन्हें न्यायिक रिमांड पर भेज दिया गया है.

कलेक्ट्रेट परिसर में डॉ. भीमराव अंबेडकर जयंती पर सामाजिक समरसता दिवस का आयोजन

रायपुर (विश्व परिवार)। डॉ. भीमराव अंबेडकर जयंती के अवसर पर कलेक्ट्रेट परिसर स्थित रेडक्रॉस हॉल में सामाजिक समरसता दिवस का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से रायपुर समेत अन्य जिलों से जुड़े और सभी उपस्थित जनप्रतिनिधियों को सामाजिक समरसता दिवस और अंबेडकर जयंती की बधाई देते हुए ग्राम पंचायत भवनों को सुसज्जित करने तथा ग्रामीणों को बेहतर सुविधाएं देने की घोषणा की । उन्होंने प्रदेशभर में वाटर हार्वेस्टिंग शुरू करने और प्रधानमंत्री आवास योजना के लाभार्थियों के दायरे को बढ़ाने के लिए शीघ्र सर्वेक्षण कराने की निर्देश भी दिए। मुख्यमंत्री ने बताया कि सामाजिक समरसता दिवस पर प्रधानमंत्री आवास ग्रामीण अंतर्गत मोर दुआर, साय सरकार महाअभियान के तहत आवास प्लस 2.0 सर्वेक्षण के लिए पखवाड़ा का आयोजन किया जाएगा, उन्होंने सभी पात्र परिवारों से सर्वे में शामिल होने की अपील की।

सुनहरे पेटिंग से सजाये जा रहे हैं, नगर निगम भिलाई के चौंक-चौराहे

भिलाईनगर (विश्व परिवार)। नगर पालिक निगम भिलाई क्षेत्र के प्रमुख चौंक-चौराहे, प्लाई ओवर ब्रिज के नीचे, अंडरब्रिज आदि जगहो पर आकर्षक पेटिंग करके दिवालों को सजाये जा रहे है। खैरागढ़ के इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय के कलाकारों द्वारा यह पेटिंग किया जा रहा है। इस पेटिंग की विशेषता है कि यह लंबी अवधि तक चलेगा और पानी से घुलाई कर देने पर पुन: नये जैसे दिखने लगता है। वर्तमान में नेशनल हाईवे से लगे हुए नेहरू नगर चैंक, ब्रिज के नीचे सुपेला चैंक, प्लाई ओवर के खम्बो पर जन जागरूकता, पर्यावरण, स्वच्छता, वृक्षारोपण, प्राकृतिक सौंदर्य आदि को प्रतिबिम्बित करते हुए बनाया गया है। इसके पश्चात सभी जोन के प्रमुख चौंक-चौराहो जहां पर उपयुक्त स्थल मिलेगा, वहां पर पेटिंग की जायेगी।

कुछ स्थानों पर आते जाते राहगिरों द्वारा सेल्फी भी लिया जा रहा है। नगर निगम भिलाई द्वारा ऐसे लोगो को सचेत किया जाता है कि सेल्फी लेते समय यातायात नियमो का पालन करें। कहीं भी गाड़ी खड़ा करके सेल्फी न ले, इससे दुर्घटना होने की संभवना बनी रहती है। नगर को साफ-सुथरा स्वच्छ बनाने में नगर निगम भिलाई के साथ-साथ आम नागरिको की भी महत्वपूर्ण भूमिका है, उन्हे भी ध्यान देना होगा। कि इस प्रकार का किये गये अच्छे कार्यो के नीचे कचरा न फेंकें, उसे खीरोचकर गंदा न करें।

नगर निगम भिलाई द्वारा सभी प्रकार के पोस्टर, बैनर लगाने वाले एजेंसियों को निर्देशित किया जाता है कि किसी भी व्यक्ति के कहने से कहीं पर भी बैनर, पोस्टर मत लगवावें। ऐसी जानकारी मिली है कि एजेंसियों को कार्य का आर्डर मिलने पर उन्ही के आदमीयों द्वारा बैनर, पोस्टर लगाया जाता है। जब तक लिखित में निगम का आदेश बैनर, पोस्टर लगाने के स्थल का नहीं होगा। तब तक कहीं पर भी बैनर, पोस्टर लगाना नगर निगम अधिनियम 1956 के तहत अवैध है। सीधे एजेंसी के आदमियों के खिलाफ एफ.आई.आर दर्ज किया जाएगा। इसकी पुरी जिम्मेदारी एजेंसी की होगी। उनका गुमशता एवं ट्रेड लाईसेंस भी निरस्त कर दिया जाएगा। पुरे नगर के चौंक-चौराहो को बैनर पोस्टर लगाकर खराब किया जा रहा है। इससे दुर्घटना होने की पुरी संभावना बनी रहती है। सुनदरता के लिए लगाये गये स्ट्रीट लाईट भी खराब हो रहे है।

फिल्टर प्लांट में खराबी, पानी सप्लाई हुआ बाधित, 18 घंटे चला सुधार कार्य

महापौर, जलघर प्रभारी व एमआईसी सदस्यों के साथ निरीक्षण करने रात्रि 12 बजे पहुंच

सुबह विधायक गजेंद्र यादव, महापौर श्रीमती अलका बाघमार व आयुक्त सुमित अग्रवाल ने भी किया जायजा

दुर्ग (विश्व परिवार)। नगर पालिक निगम सीमा क्षेत्र अंतर्गत रायपुर नाका 42 एमएलडी फिल्टर प्लांट में स्थित विद्युत सब स्टेशन के ट्रांसफार्मर में आई बड़ी खराबी के चलते बघेरा पोटिया, बोरसी सहित शहर के 8 बड़ी टंकियों में पानी नहीं भर पाने के कारण रविवार सुबह व सोमवार सुबह पानी सप्लाई प्रभावित हुई जिसे जल गृह विभाग के तकनीकी कर्मियों द्वारा विद्युत मंडल के सहयोग से 18 घण्टे की मशक्कत के बाद सुधार कर लिया इस दौरान जानकारी मिलने पर चल रहे रिपेयर कार्य का निरीक्षण करने आधी रात को महापौर अलका बाघमार जल गृह प्रभारी लीना दिनेश देवांगन सहित अन्य एम आई सी सदस्य भी फिल्टर प्लांट पहुंचे और एक घंटे से अधिक समय रहकर तकनीकी खराबी दूर करने अधिकारियों को आवश्यक निर्देश दिए वही सुबह तक स्थिति सामान्य नही होने की जानकारी मिलने पर जायजा लेने विधायक गजेंद्र यादव भी फिल्टर प्लांट पहुंचकर अधिकारियों को शीघ्र दूर करने के निर्देशित किया। रात्रि में निरीक्षण के अवसर पर आयुक्त सुमित अग्रवाल, लोक कर्म प्रभारी देव नारायण चंद्राकर, चंद्रशेखर चंद्राकर नरेंद्र बंजारे ज्ञानेश्वर ताम्रकार सहित विभागीय अधिकारी मौजूद थे।

इस प्रभावित क्षेत्रों में टैंकरों के माध्यम से पानी सप्लाई करने का प्रयास किया गया।रायपुर नाका फिल्टर प्लांट सब स्टेशन में रविवार को सुबह 11बजे ट्रांसफार्मर में मीगर वेल्यू नहीं बनने के कारण बार बार डीओ उड़ता गया और ट्रांसफार्मर का चार्जिग भी उतर गया था जिसे मौके पर मौजूद कर्मचारियों ने सुधारने का प्रयास किया किंतु देर शाम रात तक फॉल्ट ठीक नही हुआ और बड़ी खराबी होने के कारण महापौर व जलगृह प्रभारी तथा उच्च अधिकारियों की जानकारी पश्चात रायपुर से विद्युत संबंधी तकनीकी जानकर को बुलाकर सोमवार सुबह 9बजे फिल्टर प्लांट में शट डाउन कर सब स्टेशन में सुधार कार्य पूर्ण किया गया तत्पश्चात बोरसी पोतिया बघेरा पुलगांव गंज मंडी रायपुर नाका, सिकोला बस्ती की टंकियां में पानी भरने का कार्य प्रारंभ हुआ और देर शाम रात्रि तक पानी सप्लाई चालू होंगे।

सरकार से आहत अनियमित कर्मचारियों ने किया जंगी प्रदर्शन, प्रदेशभर के कर्मचारी हुए शामिल

रायपुर (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ के सरकारी ऑफिसों में काम कर रहे अनियमित कर्मचारी अब सरकार की अनदेखी से परेशान होकर 13 अप्रैल 2025 (रविवार) को नवा रायपुर, तुता में बड़ा प्रदर्शन किया। प्रदर्शन के साथ ही मुख्यमंत्री निवास का घेराव किया जाएगा। जिसमें प्रदेश भर से हजारों कर्मचारी शामिल हुए। प्रदर्शन कर रहे छत्तीसगढ़ प्रगतिशील अनियमित कर्मचारी फेडरेशन का कहना है कि जब भाजपा विपक्ष में थी, तब उनके कई बड़े नेता मंच पर आकर अनियमित कर्मचारियों की मांगों को समर्थन देते थे। उन्होंने वादा किया था कि सरकार बनने के बाद इन मांगों को पूरा किया जाएगा। 2023 के मोदी की गारंटी पत्र में भी यह लिखा गया था कि एक समिति बनाई जाएगी और उस समिति में अनियमित कर्मचारियों को भी शामिल किया जाएगा। लेकिन अब तक बनी समिति में अनियमित संघों को शामिल नहीं किया गया है, जिससे कर्मचारी निराश हैं। मिली जानकारी के अनुसार पदाधिकारियों ने आगे कहा सरकार1.5 वर्ष वर्षों में अनियमित कर्मचारियों के कुछ नहीं किया/ वादा के विपरीत अनियमित कर्मचारियों की छटनी की जा रही है, अनेक विभागों में वेतन लंबित है, संविदा वेतन अनुसार वेतन नहीं दिया जा रहा है, न्यूनतम वेतन में विगत 8 वर्षों से वृद्धि नहीं की गई है, अनेक विभाग में श्रम सम्मान राशि नहीं दी जा रही है। अनियमित संघो के पदाधिकारियों ने अपने मांगो/समस्याओं को लेकर निरंतर आवेदन निवेदन करते आ रहे है, साय सरकार से काफी उम्मीद था परन्तु सरकार अनदेखी से अनियमित कर्मचारी आहत एवं आक्रोशित है।

कलेक्टरेट परिसर में डॉ.भीमराव अम्बेडकर जी की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित कर श्रद्धासुमन अर्पित

विधायक व महापौर, कहा- बाबा साहेब का जीवन और संघर्ष अपने आप में एक शिक्षा है

दुर्ग (विश्व परिवार)। नगर पालिक निगम सीमा क्षेत्र अंतर्गत।आज कलेक्टरेट परिसर में स्थित डॉ.भीमराव अम्बेडकर जी की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित कर उन्हें श्रद्धासुमन अर्पित किया।इस अवसर पर विधायक गजेंद्र यादव, महापौर श्रीमति अलका बाघमार, सभापति श्याम शर्मा, जिलाध्यक्ष सुरेंद्र कौशिक, एमआईसी सदस्यगण, पार्षदगण एवं भाजपा सहित परिवारजन उपस्थित रहे।विधायक गजेंद्र यादव एवं महापौर श्रीमती अलका बाघमार ने बाबा साहेब डॉ.भीमराव अंबेडकर जयंती पर कलेक्ट्रेट परिसर के पास स्थित अंबेडकर प्रतिमा पर पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजलि दी।

इस अवसर पर विधायक गजेंद्र यादव ने कहा कि भारतीय संविधान के शिल्पकार बाबा साहेब ने हमें संविधान के माध्यम से वास्तविक आजादी दिलाई।बाबा साहेब ने सामाजिक रूढ़ियों को समाप्त करते हुए महिला, दलित व वंचित वर्ग के उत्थान के साथ समानता का अधिकार दिया।वे एक न्यायविद, अर्थशास्त्री और समाज सुधारक थे।

महापौर श्रीमती अलका बाघमार ने कहा कि देश के हर नागरिक के लिए सम-विधान का निर्माण करने वाले अंबेडकर का जीवन एवं संघर्ष अपने आप में एक शिक्षा है।उन्होंने ये भी कहा कि हमें बाबा साहेब के विचारों को अपनाते हुए समानता व भाईचारे की भावना को कायम रखना है।जिन्होंने भारत के संविधान का मसौदा तैयार करने वाली समिति का नेतृत्व किया और स्वतंत्र भारत के प्रथम कानून मंत्री के रूप में कार्य किया।

इस मौके पर देवनारायण चन्द्राकर, नरेंद्र बंजारे, ज्ञानेश्वर ताम्रकर, शिव नायक, नीलेश अग्रवाल, पार्षद गुलाब वर्मा, कमल देवांगन, कुलेश्वर साहू, श्रीमती ललिता ठाकुर, युवराज कुंजाम सरिता चंद्राकर सहित पार्षदगण, पदाधिकारी और मंडल पदाधिकारी गण उपस्थित रहे।

आयुक्त सुमित अग्रवाल पहुँचे सफाई व्यवस्था का निरीक्षण करने

आयुक्त ने नागरिकों से की अपील, वे अपने घरों और आसपास के क्षेत्रों को साफ-सुथरा रखें और कचरा निर्धारित स्थानों पर ही डालें

दुर्ग (विश्व परिवार)। नगर निगम के आयुक्त सुमित अग्रवाल ने 26 एवं 27 दो वार्डों में साफ-सफाई व्यवस्था का अधिकारियों के साथ निरीक्षण किया।इस निरीक्षण में उन्होंने सफाई कर्मचारियों की उपस्थिति और सफाई व्यवस्था का जायजा लिया।

साथ ही, उन्होंने नागरिकों से भी फीडबैक लिया और उनसे सुझाव मांगे.निरीक्षण के दौरान, आयुक्त ने पाया कि सड़को व नालियों में सफाई व्यवस्था में सुधार की आवश्यकता थी. उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि सफाई व्यवस्था पर विशेष ध्यान दिया जाए और सफाई व्यवस्था को और भी सुधारा जाए.उन्होंने नागरिकों से भी अपील की कि वे अपने घरों और आसपास के क्षेत्रों को साफ-सुथरा रखें और कचरा निर्धारित स्थानों पर ही डालें.आयुक्त सुमित अग्रवाल ने यह भी कहा कि नगर निगम को स्वच्छता और सफाई के लिए नागरिकों का सहयोग चाहिए और वे सभी मिलकर एक स्वच्छ शहर बना सकते हैं।

आयुक्त ने सड़कों के किनारे व बाजार क्षेत्रो में निरंतर विशेष सफाई के लिए दोनों पालियों में सफाई के निर्देश दिए.नगर आयुक्त के द्वारा वार्डों के भीतर की सफाई व्यवस्था के निरीक्षण में वार्ड 26 व 27 सड़कों एवं नालियों के सफाई का जायजा लेते हुए गलियों की सफाई एवं नालियों के मरम्मत का निर्देश दिया गया।इस क्रम में निगम के कार्यपालन अभियंता मोहन पूरी गोस्वामी, हरिशंकरसाहू, परमेश्वर, शशि यादव, ईश्वर साहू, गौतम, विनीत वर्मा, राजू सिंह सहित अन्य मौजूद रहें।

रिसाली के 01 से 34 वार्ड में बुधवार और गुरुवार को नहीं खुलेगा नल

रिसाली (विश्व परिवार)। नगर पालिक निगम रिसाली के 1 से 34 वार्ड में बुधवार को पूर्ण और गुरुवार को आंशिक रूप से नल नहीं खुलेगा। प्रभारी उप अभियंता गोपाल सिन्हा ने बताया कि रिसाली निगम को भिलाई फिल्टर प्लांट से पानी उपलब्ध कराया जाता है। शिवनाथ से बिछाए गए पाइप लाइन 1000 एम एम डाया पाइप लाइन गंजपारा दुर्ग के निकट क्षतिग्रस्त हो गया है। जिसका मरम्मत कार्य मंगलवार को किया जाएगा। इस वजह से बुधवार को पूर्ण रूप से और गुरुवार को आंशिक रूप से रिसाली के 34 वार्ड में पेयजल आपूर्ति ठप्प रहेगी। आवश्यकता अनुसार पेयजल टैंकर से उपलब्ध कराया जाएगा।

DEBTS RECOVERY TRIBUNAL, JABALPUR
2nd and 3rd Floor, Sanchar Vikas Bhawan, 9BSNL Building Near Head Post Office, Residency Road Jabalpur (M.P.) 482001 **Form No.7**
[See Regulation- 15 (1) (e)]
Appeal No.1/2025
Baljeet singh Walia **Appellants**
Versus
Kotak Mahindra Bank and Others **Respondents**
To, 1.Kotak Mahindra Bank Ltd. Office At: 36-38A, Nariman Bhavan, Nariman Point, Mumbai 400 021
4.Vison Industries Pvt. Ltd. NH-6, Near Hotel Chidambara, B-SJK Dhaba, Telibandha, Raipur, CG 492003 Through its Director
1.WHEREAS the above named appellant has preferred an appeal under R.D.D.B.F.I. Act against the order passed by the Recovery Officer in OA Ex 176/2013 under Section 30 of RDDBFI Act on 06/12/2024.
2.Take notice that the said appeal will be taken up for hearing by the Tribunal at 10.30am or at such time immediately thereafter according to the convenience of the Tribunal on 17/04/2025
3. You are hereby required to appear in person or by a pleader/ Advocate duly instructed as the case my be, at the aforesaid time and place.
4. if you do not appear on the date of hearing, the appeal shall be decided in your absence.
Given under my hand and the seal of this Tribunal on this **11th** day of **April,2025**
By order of Tribunal, Registrar

दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे
ई-निविदा सूचना
क्रमांक संख्या (1) निविदा संख्या :- एस. ई. सी. आर. - मुख्यालय - इंजी. - बी.एल.-25-26-01
कार्य : बिलासपुर मंडल में वरिष्ठ अनुभाग अभियंता (पुल) / शहडोल के अधिकार क्षेत्र में पुल संख्या 157 के अप एंड डाउन और वरिष्ठ अनुभाग अभियंता (पुल) / बिलासपुर के अधिकार क्षेत्र में पुल संख्या 86 अप, 86 थर्ड लाईन एवं 63सीजी डाउन के ओपन वेब गर्डर पर टॉप कॉर्ड निरीक्षण क्रेडल का प्रावधान । **अनुमानित लागत:-** रू. 3,79,32,236.03 **प्रतिभूति राशी :-** 3,39,700/- **बोली प्रक्रिया की प्रारंभ तिथि :** 16.04.2025 **निविदा की अंतिम तिथि समय :-** दिनांक 30.04.2025 को 16:30 बजे ।
क्रमांक संख्या (2) निविदा संख्या :- एस. ई. सी. आर. - मुख्यालय-इंजी.- बी.एल.-25-26-02 कार्य : बिलासपुर मंडल में वरिष्ठ अनुभाग अभियंता (पुल) / बिलासपुर के अधिकार क्षेत्र में आईबी - ब्रजराजनगर के मध्य पुल संख्या 182 थर्ड एंड फोर्थ लाईन के स्टील गर्डर का दोषपूर्ण रोलर एवं रॉकर बियरिंग का बदलाव का कार्य ।
अनुमानित लागत:- रू. 55,90,000.00 **प्रतिभूति राशी :-** रू.1,11,800/- **बोली प्रक्रिया की प्रारंभ तिथि :-**16.04.2025 **निविदा की अंतिम तिथि समय :** दिनांक 30.04.2025 को 16:30 बजे ।
उपरोक्त कार्य की आवश्यक एवं पुर्ण जानकारी उप मुख्य अभियंता पुल / मुख्यालय कार्यालय या **www.ireps.gov.in** वेबसाईट से प्राप्त किया जा सकता है। **उप मुख्य अभियंता पुल मुख्यालय**
सीपीआर/10/AM/10 **द.पू.म.रेलवे/बिलासपुर**
South East Central Railway @secrail

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

बिलासपुर संभाग

रायपुर मंगलवार 15 अप्रैल 2025

बाबा साहब भीमराव अंबेडकर भारतीय संविधान के वास्तुकार थे -अनूप सिन्हा

भाजपा ने संविधान निर्माता डॉ अंबेडकर की जयंती समरसता दिवस के रूप में मनाई

सूरजपुर ब्यूरो(दैनिक विश्व परिवार) -भाजपा प्रदेश संगठन एवं जिला संगठन के निर्देशानुसार आज 14 अप्रैल को संविधान निर्माता भारत रत्न डॉ भीमराव अंबेडकर जी की जयंती शिवनंदनपुर मंडल के ग्राम सतपता में डॉ भीमराव अंबेडकर मंच पर मनाया ।

बाबा भीमराव अंबेडकर जी के जीवनी पर प्रकाश डालते हुए भाजपा के युवा नेता एवं जिला उपाध्यक्ष अनूप सिन्हा ने कहा कि डॉक्टर भीमराव अंबेडकर भारतीय संविधान का वास्तुकार थे ।भारतीय संविधान के मसौदा समिति के अध्यक्ष थे, उन्होंने समता ,स्वतंत्रता ,बंधुत्व पर आधारित संविधान की रचना की, उन्होंने भारत के प्रत्येक नागरिक को अभिव्यक्ति जीवन जीने का अधिकार दिया। ऐसे महान पुरुष का भारतीय जनता पार्टी इज्जत करती है सम्मान करती है भारत जैसे महान पुरस्कार भारत रत्न से सम्मानित करती है परंतु कांग्रेस ने बाबा साहब भीमराव अंबेडकर को हमेशा अपेक्षित रखा ,उन्हें अपमानित किया परंतु बीजेपी ने उन्हें हमेशा नजर से देखा और सम्मानित किया।

नगर पंचायत विश्रामपुर के उपाध्यक्ष एवं भाजपा मंडल प्रभारी दीपेंद्र सिंह चौहान ने बाबा साहब पर प्रकाश डालते हुए कहा कि बाबा साहब एक महान व्यक्तित्व एक प्रतिष्ठित व्यक्तित्व से ऊपर है वह समाज का जीवंत सेवा की ।उन्होंने भाईचारा और एकता का संदेश दिया परंतु विपक्षी पार्टियों ने बाबा को हमेशा गलत समझे और उनके कार्यों की गलत व्याख्या की उन्हें हमेशा उपेक्षित किया यहां तक कि उन्हें हराने के लिए कांग्रेस लगी रही और चुनाव में परास्त किया।भाजपा ने बाबा साहब को

एक महान पुरुष मानकर भारत रत्न से सम्मानित किया जिसके बाबा साहब हकदार थे।

इस अवसर पर नगर पंचायत शिवनंदनपुर के अध्यक्ष कृष्ण कुमार अग्रवाल बलू ने कहा कि बाबा साहब एक महान वकील, महान अर्थशास्त्री, महान नेता, महान समाज सुधारक एवं संविधान निर्माता थे ।उन्होंने छुआछूत जातीय भेदभाव के खिलाफ बड़ा आंदोलन खड़ा किया उनके कार्यों को देश हमेशा याद करेगा।

इस अवसर पर वरिष्ठ पत्रकार गोपाल सिंह विद्रोही ने कहा कि बाबा साहब का कहना था कि एक महान व्यक्ति एक प्रतिष्ठित व्यक्ति से ऊपर होता है क्योंकि वह समाज का सेवा के करने के लिए हमेशा तात्पर्य रहता है। समानता एक कल्पना हो सकता है फिर इसे मात्र है इसे एक गवर्निंग सिद्धांत के रूप में स्वीकार करना होगा। जीवन लंबा होने की बजाय महान होना चाहिए। सोच के विकास के लिए कोई गुंजाइश नहीं है ।श्री विद्रोही ने कहा कि बाबा साहब जिस संगठन में रहे उस संगठन ने इन्हें कभी महत्व नहीं दिया परंतु बीजेपी की सरकार आते ही उन्हें देश का महान सम्मान भारत रत्न से नवाजा जिसके लिए बाबा साहब हकदार थे। यह सम्मान उन्हें सबसे पहले मिलना चाहिए था परंतु भारत रत्न केवल एक ही पार्टी ने अपने ही लोगों को सम्मान देती रही जो इस सम्मान का अपमान था।

भाजपा के अन्य नेताओं ने बाबा साहब भीमराव अंबेडकर द्वारा देश के लिए किए गए बहुत सारे कार्यों को लोगों को बताया एवं भारतीय जनता पार्टी के द्वारा ही बाबा साहब भीमराव अंबेडकर जी को भारत रत्न देने का काम किया कांग्रेस एस सी समुदाय को हमेशा वोट बैंक के रूप में उपयोग करते आया है। उक्त अवसर पर भाजपा के मंडल प्रभारी दीपेंद्र सिंह चौहान, भाजपा ज़िला उपाध्यक्ष अनूप सिन्हा, मंडल अध्यक्ष हरीश राजवाड़े ,अशोक गुप्ता ,नगर पंचायत शिवनंदनपुर अध्यक्ष कृष्ण कुमार गोयल ,उपाध्यक्ष श्यामू साहू, देवधन राम बिनझिया, लखन कुर्रे,देवेंद्र सोनवानी,बहुआ,भागवत प्रजापति,नरेंद्र प्रजापति, महेश जायसवाल,राम प्रताप,मनी बग्गा,शिव कुमार, सचिन तायल,तिलकधारी सोनवानी, मनीष सोनवानी , हरीश कुर्रे, अशोक सोनवानी दुर्गा गुप्ता, विनोद साहा,दुर्गा यादव, हंस, बुलचु, दल साय, सतपता सरपंच पति, कामेश सोनी, मान सिंह,यश सोनी पार्षद रविशंकर बउआ आदि कार्यकर्ताओं ने बाबा भीमराव अंबेडकर की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्वलित एवं पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजलि दी।

संक्षिप्त समाचार

कलेक्टर एस. जयवर्धन ने अंबेडकर जयंती पर किया उन्हें नमन

सूरजपुर ब्यूरो (दैनिक विश्व परिवार)। भारत रत्न डॉ. भीमराव अंबेडकर की जयंती के अवसर पर आज सूरजपुर कलेक्टर एस. जयवर्धन ने कलेक्टोरेट परिसर स्थित अंबेडकर प्रतिमा पर माल्यार्पण कर उन्हें नमन किया । इस दौरान उन्होंने बाबा साहब के विचारों और उनके योगदान को स्मरण करते हुए जिलेवासियों को अंबेडकर जयंती की शुभकामनाएं दीं। इस अवसर पर कलेक्टर जयवर्धन ने कहा कि बाबा साहब का जीवन संघर्ष, समर्पण और संविधान निर्माण में उनकी भूमिका हम सभी के लिए प्रेरणास्रोत है। कार्यक्रम में अपर कलेक्टर श्री जगन्नाथ वर्मा सहित जिला संयुक्त कार्यालय के सभी अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे। सभी ने डॉ. अंबेडकर के विचारों को आत्मसात करने का संकल्प लिया और सामाजिक समरसता एवं संविधान की मर्यादा बनाए रखने का संदेश दिया।

सहकारी केंद्रीय बैंक शाखाओं में किसानों की उमड़ रही भीड़

कोरबा(विश्व परिवार)। सहकारी केंद्रीय बैंक की शाखाओं में किसानों की लंबी कतार लग रही है। इस समस्या को दूर करने बैंक प्रबंधन भी ध्यान नहीं दे रहा है। कोरबा, पाली, बरपाली, कटघोरा में सबसे अधिक भीड़ लगती है। हरदी बाजार में भी यही हाल है। घंटों धूप में खड़े रहने के बाद भी किसानों को पूरी रकम नहीं मिल पाती। जिसके कारण कई बार बैंक का चक्कर काटना पड़ता है।जिला सहकारी बैंक में नई शाखा खोलने का प्रस्ताव भेजा था, लेकिन अभी तक रिजर्व बैंक से मंजूरी नहीं मिल पाई है। बैंकों में ना तो काउंटर बढ़ाए जा रहे हैं और न ही अतिरिक्त कर्मचारियों की नियुक्ति की जा रही है। समर्थन मूल्य पर धान बेचने के बाद किसानों को एक साथ राशि नहीं मिल पाती है। यही नहीं, कोरबा शाखा में भी किसान सुबह 8 बजे से ही बैंक पहुंच जाते हैं। बैंक खुलने के बाद राशि मिल जाए यह भी संभव नहीं रहता। बैंकों ने इसके लिए यह सिस्टम बनाया है कि समिति के हिसाब से दिन निर्धारित है। इसके बाद भी पर्याप्त राशि नहीं मिल पाती। बक्साही के किसान रामधन गोड़ ने बताया कि पाली बैंक में कई किसान तो रात में ही पहुंच जाते हैं। धान बिक्री किए 3 महीने से अधिक समय हो गया लेकिन पर्याप्त राशि नहीं मिल पाती। किसानों ने बताया कि धान बिक्री करने के बाद पैसा निकालने के लिए अव्यवस्था का सामना करना पड़ रहा है। यह समस्या हर साल होती है। इसके बाद भी बैंक प्रबंधन ध्यान नहीं देता। किसानों की परेशानी को लेकर अभी तक कोई उपाय नहीं किए गए हैं। बैंकों में 25 हजार तक लिमिट रखी जाती है। जिसके कारण कई बार बैंक आने की मजबूरी है। सहकारी समितियों में धान बेचने वाले किसानों को दूसरे बैंकों में सुविधा नहीं सहकारी समितियों में धान बेचने के लिए किसानों को जिला सहकारी बैंक में ही खाता खुलवाना होता है। इसकी वजह से ही किसानों को परेशानी होती है। अगर दूसरे बैंकों में खाता खोलने की सुविधा मिले तो यह परेशानी कम हो सकती है। सहकारी बैंक ने एटीएम की भी शुरुआत की है लेकिन उसका फायदा भी अधिक लोगों को नहीं मिलता।

ट्रैलर पलटने से सड़क पर बिखर गया राखड़ वाहन चालक घायल

कोरबा(विश्व परिवार)। दर्री से राखड़ लेकर पाली की ओर आ रही ट्रैलर पाली के निकट राष्ट्रीय राजमार्ग के ग्राम पाली-कोसाबाड़ी के पास अनियंत्रित होकर पलट गया। उक्त घटना में वाहन चालक घायल हो गया। उसे राहगीरों की मदद से पाली सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र ले जाया गया। वाहन के पलटने से इसमें लोड राखड़ सडक पर बिखर गया। लोगों ने बताया कि वाहन चालक का नियंत्रण अचानक खो गया इससे यह हादसा हुआ। उल्लेखनीय हैं की कोरबा में विभिन्न कंपनियों का राखड़ बांध स्थित है। यहां से रोजाना भारी मात्रा में राख को ट्रैलर या हाइवा पर लोड कर अलग-अलग दिशाओं में भेजा जा रहा है। इस कार्य में कई ट्रांसपोर्ट कंपनियां शामिल हैं, जो भाड़े पर गाड़ी लेकर राख का परिवहन कर रही है, लेकिन आरोप हैं की तय मापदंडों के अनुसार राख का परिवहन नहीं हो रहा है। इससे लोगों के लिए गंभीर समस्या खड़ी हो गई है। सबसे गंभीर स्थित वायु प्रदूषण को लेकर हो रही है। यहां से राख लेकर आने-जाने वाली अधिकतर गाड़ियां तिरपाल से सही तरह राख को नहीं ढंक रही है। जिस मार्ग से ये गाड़ियां आना-जाना करती हैं उस पर राख उड़ रही है और लोगों के चलने से राख के कण लोगों के आंख में समा जाते हैं।

मोर दुआर, साय सरकार महाअभियान के तहत् आवास प्लस 2 सर्वेक्षण के लिए पखवाड़ा का होगा आयोजन

तीन हितग्राहियों को वितरित किए गए ख़ुशियों की चाबी एवं उपहार

अच्छा प्रदर्शन कर रहे 6 आवास मित्र हुए सम्मानित

सूरजपुर ब्यूरो (दैनिक विश्व परिवार)- आज अम्बेडकर जयंती के उपलक्ष्य में प्रधानमंत्री आवास योजना ग्रामीण अंतर्गत आवास प्लस 2.0 सर्वेक्षण - विशेष पखवाड़ा(मोर दुआर, साय सरकार महाअभियान) के क्रियान्वयन करने के दिशा निर्देश जारी किया गया। जिले के कलेक्टर श्री एस जयवर्धन ने शासन के महत्वपूर्ण योजना पीएम आवास ग्रामीण के बारे में होने वाले इस सर्वे हेतु शासन से प्राप्त दिशा निर्देश पर प्रकाश डाला। प्रथम चरण में दिनांक 15 अप्रैल से 19 अप्रैल तक मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय एवं अन्य जनप्रतिनिधियों द्वारा सांकेतिक रूप से एक

एक परिवार का सर्वेक्षण किया जाना है। इसका व्यापक प्रचार प्रसार एवं पीएम आवास पंचायत एम्बेसडर नामित किया जाना है। द्वितीय चरण दिनांक 20/04/25 से 28/04/25 में सर्वेयर की प्रक्रिया का प्रस्तुतिकरण एवं सर्वेक्षित परिवारों का ग्राम सभा में पठन व वाचन का कार्य। तृतीय चरण दिनांक 29/04/25 से 30/04/25 तक में शत प्रतिशत सर्वेक्षण के संतृप्तता का पूर्णता प्रमाण पत्र जिला कार्यालय को प्रेषित किया जाना है और अंत में अच्छा कार्य करने वाले एम्बेसडर/ जनप्रतिनिधि/ स्वयंसेवी/ संगठन जिन्होंने सर्वेक्षण में विशेष कार्य किया है उन्हें सम्मानित किए जाने का कार्य किया जाना है।

प्रेमनगर विधानसभा के विधायक श्री भूलन सिंह मरावी ने पीएम आवास के इस वृहद स्वीकृति के लिए केंद्र एवं राज्य शासन का धन्यवाद ज्ञापित किया एवं इस सर्वे का लाभ जिले के सभी परिवार को प्राप्त करने हेतु अपील किया गया। योजना के जिला समन्वयक ने बताया कि जिले में अब तक 68625 आवासों की स्वीकृति पूर्ण की जा चुकी है जिसमें तेजी से निर्माण कार्य कराया जा रहा है। अब तक की स्वीकृति सामाजिक आर्थिक जाति जनगणना 2011 एवं आवास प्लस 2018 की सूची पर निर्भर थी। उक्त दोनों सूची लगभग संतृप्तता की स्थिति में है। इसलिए पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग मार्गदर्शिका में संशोधन करते हुए आवास प्लस 2.0 के माध्यम से सर्वे का कार्य कराया जा रहा है। आज दिनांक तक 68576 परिवारों का सर्वे पूर्ण किया जा चुका है। अंतिम 15 दिवस में इसे महाअभियान का रूप देकर और शेष बचे परिवारों को सर्वेक्षित किया जाना है।

इसी क्रम में वित्त वर्ष 2024-25 में अच्छा एवं गुणवत्तापूर्ण आवास बनाने वाले 03 हितग्राही क्रमशः सुभान सिंह, आनंद राम एवं रमेश प्रजापति को खुशियों की चाबी व उपहार देकर सम्मानित किया गया। साथ ही जिले में अच्छा प्रदर्शन कर रहे आवास मित्रों को सम्मानित किया गया जिसमें भैयाथान जनपद पंचायत से आशिया परवीन, ओड़गी से अरुण पैकरा, प्रतापपुर से अकरम रजा, प्रेमनगर से तराना परवीन, रामानुजनगर से भीष्म राजवाड़े एवं सूरजपुर जनपद पंचायत से महेंद्र साहू को शामिल है।

कोरबा पुलिस की मादक पदार्थों एवं अवैध शराब के विरुद्ध कार्रवाई

कोरबा(विश्व परिवार)। जिले के पुलिस अधीक्षक कोरबा सिद्धार्थ तिवारी के निर्देशन में जिले में मादक पदार्थों, अवैध शराब तथा अन्य प्रतिबंधित सामग्रियों के विरुद्ध विशेष अभियान सतत रूप से संचालित किया जा रहा है। इसी क्रम में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक नीतिश ठाकुर, यातायात एवं साइबर सेल प्रभारी रविंद्र कुमार मीना तथा नगर पुलिस अधीक्षक श्री भूषण एक्का के मार्गदर्शन में कोरबा जिले की विभिन्न पुलिस इकाइयों द्वारा समन्वित एवं सघन कार्रवाई की गई। थाना दर्री, दीपका, सीएसईबी, कोतवाली, कुसमुंडा एवं बांकीमोंगरा क्षेत्र अंतर्गत कुल 12 प्रकरणों में कार्यवाही करते हुए 15 आरोपियों को गिरफ्तार किया गया। गिरफ्तार आरोपियों में चंदन चैहान, दीपक रोहिदास, राधे पांडे एवं पदम दास वैष्णव शामिल हैं, शेष सभी अन्य महिला आरोपी हैं। इन सभी के विरुद्ध आबकारी अधिनियम एवं एनडीपीएस अधिनियम की विभिन्न धाराओं के तहत विधिसम्मत कार्रवाई करते हुए उन्हें न्यायिक अभिरक्षा में भेजा गया है।

अग्निशमन सेवा सप्ताह का शुभारंभ आज से

कलेक्टर ने हरी झंडी दिखाकर जागरूकता रैली को कलेक्ट्रेट से किया रवाना

14 से 20 अप्रैल तक चलेगा जागरूकता अभियान

गोपाल सिंह विद्रोही

सूरजपुर ब्यूरो(दैनिक विश्व परिवार)-अग्निशमन सेवा सप्ताह का शुभारंभ आज कलेक्ट्रेट से किया गया। इस अवसर पर अग्नि सुरक्षाकर्मी शहीदों के सम्मान में 02 मिनट का मौन धारण कर श्रद्धांजलि अर्पित किया गया 7 तत्पश्चात कलेक्टर श्री एस.जयवर्धन द्वारा जन जागरुकता बाइक रैली को हरी झंडी

दिखाकर रवाना किया गया। उन्होंने बचाव ही बेहतर सुरक्षा है का संदेश देते हुए कहा कि हर नागरिक को आग से बचाव के लिए सावधानी बरतनी चाहिए। उन्होंने बताया कि अग्निशमन सेवा सप्ताह के दौरान फायर सेफ्टी, अवेयरनेस ड्राइव, मॉक ड्रिल और प्रशिक्षण सत्र जैसे विभिन्न गतिविधियों का आयोजन कर दमकल विभाग द्वारा जागरुकता अभियान चलाया जायेगा। अग्निशमन सेवा सप्ताह 14 अप्रैल से 20 अप्रैल तक मनाया जायेगा। इस अवसर पर जिला अग्निशमन अधिकारी श्री संजय गुप्ता ने बताया कि अग्निशमन सेवा सुरक्षा सप्ताह के दौरान कई जागरूकता कार्यक्रम आयोजित होंगे। जिसके अंतर्गत अग्निशमन केंद्र सुरजपुर की ओर से मल्टीप्लेक्स, बहुमंजिला इमारत, शिक्षण संस्थानों, हॉस्पिटल सहित ग्रामीण क्षेत्रों में आमजन और कर्मचारियों को आग बुझाने के तरीके को समझाया जायेगा। फायर कर्मचारी द्वारा आग बुझाने और आग लगने के दौरान बिल्डिंग में फंसे लोगों को सुरक्षित बाहर निकलने का डेमो भी दिया जायेगा। जिला अग्निशमन अधिकारी ने बताया कि 14 अप्रैल सन् 1944 में मुंबई के विक्टोरिया डॉक यार्ड में हुए भीषण अग्निकांड के दौरान शहीद हुए 67 अग्निशमन कर्मचारी और अधिकारियों की शहादत को याद करने के साथ आमजन को अग्नि दुर्घटनाओं से सजग करने के लिए यह अग्निशमन सेवा सुरक्षा सप्ताह मनाया जाता है। आज के कार्यक्रम में अपर कलेक्टर श्री जगन्नाथ वर्मा, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्री संतोष महतो, जिला सेनानी सूरजपुर, नगर सेना के कर्मचारी, सैनिक व फायर कर्मी उपस्थित थे 7

ऑडिटोरियम सूरजपुर में सामाजिक समरसता दिवस मनाई गई

बाबा साहेब का जीवन हम सभी के लिए प्रेरणादायक - विधायक शभूलन सिंह मराबी

डॉ. भीमराव आंबेडकर के आदर्शों को आत्मसात करने की जरूरत- कलेक्टर

सूरजपुर ब्यूरो (दैनिक विश्व परिवार) -बाबा साहेब डॉ. भीमराव अंबेडकर की जयंती को सामाजिक समरसता दिवस के रूप में आज सूरजपुर ऑडिटोरियम में मनाया गया। इस अवसर पर उपस्थित मुख्य अतिथि श्री भूलन सिंह मरावी व अन्य जनप्रतिनिधियों द्वारा उनके छायाचित्र पर पुष्प अर्पित कर उन्हें श्रद्धापूर्वक नमन किया।

कार्यक्रम के दौरान संविधान की प्रस्तावना का सामूहिक वाचन किया गया और उपस्थित गणमान्य नागरिकों के समक्ष डॉ अम्बेडकर की के जीवन के उपलब्धियों व संघर्ष का वर्णन किया गया।

कार्यक्रम में प्रेमनगर विधायक श्री भूलन सिंह मराबी ने कहा कि बाबा साहेब का संपूर्ण जीवन संघर्ष की अनुपम मिसाल है। उन्होंने कहा कि डॉ. अम्बेडकर ने हमें एक ऐसा संविधान दिया जो भारत को लोकतंत्र, समानता और न्याय की मजबूत नींव प्रदान करता है।

इस अवसर पर जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती चंद्रमणि पैकरा व पूर्व विधायक श्रीमती रजनी रवि शंकर त्रिपाठी द्वारा भी भारत रत्न बाबा साहब डॉ भीमराव अंबेडकर के संबंध में उनके विचार प्रस्तुत किये गये ।

कार्यक्रम में कलेक्टर श्री एस.जयवर्धन ने उपस्थित जनों को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि आज का दिन हमें यह संकल्प लेने

का अवसर देता है कि हम डॉ भीमराव अंबेडकर के आदर्शों पर चलें और एक समावेशी, समतामूलक और न्यायप्रिय समाज के निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाएं।

इसके अतिरिक्त कार्यक्रम में अटल पंचायत डिजिटल सुविधा केंद्र स्थापना के क्रम में 60 ग्राम पंचायत के सरपंच व सीएससी के वीएलसी के मध्य एमओयू की कार्यवाही सम्पन्न की गई।इसके उपरांत प्रधानमंत्री आवास योजना अंतर्गत उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले आवास मित्रों को सम्मानित किया गया तथा आवास पूर्ण करने वाले 03 हितग्राहियों को 'खुशियों की चाबी' प्रदान किया गया।

सम्मानित होने वाले आवास मित्र में सभी जनपद से 01 आवास मित्र का चयन भी किया गया। प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रामीण) के अंतर्गत पंचायत एंबेसडर की भूमिका को और प्रभावी बनाने हेतु कार्यक्रम में सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करने की बात कही गई और मोर दुआर साय सरकार विशेष पखवाड़ा (15 से 30 अप्रैल) के अंतर्गत चल रहे सर्वेक्षण कार्य की जानकारी दी गई। इसके साथ ही भूजल संरक्षण हेतु जनजागरूकता बढ़ाने और जल संरक्षण का संकल्प भी दिलाया गया।

इसके साथ ही कार्यक्रम में स्वच्छ भारत मिशन ग्रामीण का सफल क्रियान्वयन करने वाले जनपद पंचायत सूरजपुर के ग्राम पंचायत जय नगर के संगवारी एसएचजी तथा जनपद पंचायत रामानुजनगर के ग्राम पंचायत कृष्णपुर मनीषा एसएचजी के अध्यक्ष, सदस्य को मुख्य अतिथि द्वारा उपहार देकर सम्मानित किया गया ।

विडिओ कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से जुड़े मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय एवं उप मुख्यमंत्री श्री विजय शर्मा के उद्बोधन उपरांत कार्यक्रम का समापन हुआ ।

कार्यक्रम में जनपद पंचायत सूरजपुर अध्यक्ष श्रीमती स्वाति सिंह, मुरली मनोहर सोनी, राजेश महलवाला, संदीप अग्रवाल, राजलाल राजवाड़े, शशिकांत गर्ग, ललित गोयल, मनमत, शैलेश अग्रवाल, योगेश्वरी राजवाड़े, पुनिया राजवाड़े, राजेश्वर तिवारी, प्रमोद तायल, दीपक गुप्ता, अरविंद मिश्रा, एच.एन.चतुर्वेदी, लक्ष्मण राजवाड़े, अजय मित्तल, रमेश अग्रवाल, धनेश्वरी, सुखमेन राजवाड़े, हेमलता राजवाड़े, अन्य जनप्रतिनिधि, एसडीएम श्रीमती शिवानी जायसवाल व अन्य जिला अधिकारी उपस्थित थे ।

दैनिक
विश्व परिवार

विचार-पक्ष

रायपुर मंगलवार 15 अप्रैल 2025

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

संपादकीय

टैरिफ का अर्थव्यवस्था पर नहीं होगा अधिक प्रभाव

दुनियावी दखल अंदाजी बर्दाश्त नहीं होगा.....

उम्मीद विधेयक राज्य सभा से भी पारित हो गया और अब इसके विधिवत कानून बनने में राष्ट्रपति के हस्ताक्षर की औपचारिकता भर रह गई है। इस पर करीब 13 घंटे की लंबी बहस राज्य सभा में भी हुई। सरकारी पक्ष ने अपने उन्हीं तकरे को और अधिक वजनदारी के साथ आगे बढ़ाया जो उसने लोक सभा में रखे थे। यहां उम्मीद थी कि विपक्ष के खामियों का समुचित जवाब देंगे जो खामियां इस विधेयक को लाने का कारण बनी, लेकिन मुस्लिम वक्ताओं के साथ-साथ विपक्षी वक्ता भी इसे असंवैधानिक बताते रहे। यानी वे मुसलमान के इसी तर्क की पुष्टि करते रहे कि वक्फ बोर्ड अल्लाह के लिए है, इस्लामी कानून के तहत है, शरीयत की विधियों से संचालित है। इसलिए इसमें दुनियावी दखलअंदाजी बर्दाश्त नहीं की जा सकती। इस बहस ने कथित धर्मनिरपेक्षता का वह चेहरा फिर से उजागर कर दिया कि इस्लामी विधियों और प्रावधानों के साथ खड़े होना, भले ही वह आधुनिक युग में कितने भी निर्थक क्यों ना हो गई हो, धर्मनिरपेक्षता है। यह धर्मनिरपेक्षता अंतत: उन्हें कहां ले जाएगी यह तो भविष्य बताएगा, लेकिन हाल-फिलहाल इसकी बुरी तरह पराजय हुई है। विपक्ष अगर सचमुच इस मामले में अपनी साख बचाना चाहता है तो उसे यह स्वीकार कर लेना चाहिए कि वक्फ कानून नये संशोधनों के साथ अस्तित्व में आ गया है। अब उसको ध्यान इस पर केंद्रित करना चाहिए कि इस नये कानून के आलोक में वक्फ बोर्ड भू-माफियाओं और निजी लाभ को पाने वाले स्वार्थी समूह की गिरफ्त से बाहर आए और उसका लाभ मुसलमान तक पहुंचे जो उसके वास्तविक हकदार हैं। विपक्ष को मुल्ला, मौलानाओं और मुसलमान की राजनीति करने वाले राजनेताओं का मोह त्याग कर पसमांदा और सबसे निचली पायदान पर खड़े मुसलमानों के हित की वास्तविक लड़ाई लड़नी चाहिए। ध्यान रखना चाहिए कि मुस्लिम राजनीति गरीब मुसलमानों की आंख पर पट्टी बांधकर उनका दोहन, शोषण करती रही है और उन्हें अपने राजनीतिक हितों का मोहरा बनती रही है। इन मुसलमानों को कट्टरपंथी और स्वार्थी समूहों के चंगुल से बाहर निकलना समय की मांग है। उम्मीद की जानी चाहिए कि विपक्ष इस मांग को सुनेगा और अपनी मौजूदा नीति से बाहर निकाल कर निम्नवर्गीय मुसलमानों के हित में संघर्ष करेगा।

प्रह्लाद सबनानी

विभिन्न देशों से अमेरिका में आयात होने वाले उत्पादों पर 10 प्रतिशत की दर से न्यूनतम टैरिफलगाया गया है। साथ ही, कुछ अन्य देशों यथा चीन से आयातित उत्पादों पर 34 प्रतिशत टैरिफ लगाने की घोषणा अमेरिकी राष्ट्रपति ने की है। दिनांक 2 अप्रैल 2025 को अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प द्वारा, विभिन्न देशों से अमेरिका में होने वाले आयातित उत्पादों पर की गई टैरिफ सम्बंधी घोषणा के साथ ही अंतत: अमेरिका द्वारा पूरे विश्व में टैरिफके माध्यम से व्यापार युद्ध छेड़ दिया गया है। अभी, अमेरिका ने विभिन्न देशों से अमेरिका में होने वाले आयात पर विभिन्न दरों पर टैरिफ लगाया है। अब इनमें से कई देश अमेरिका से आयातित वस्तुओं पर टैरिफलगाने की घोषणा कर रहे हैं, जैसे चीन ने अमेरिका से चीन में आयात होने वाले उत्पादों पर दिनांक 10 अप्रैल 2025 से 34 प्रतिशत की दर से टैरिफलगाने की घोषणा की है। टैरिफके माध्यम से छेड़े गए व्यापार युद्ध का भारत पर कोई बहुत अधिक विपरीत प्रभाव पड़ने की सम्भावना कम ही है। दरअसल, अमेरिका ने विभिन्न देशों से आयातित उत्पादों पर अलग अलग दर से टैरिफलगाने की घोषणा की है और साथ ही कुछ उत्पादों के आयात पर फ्लिहाल टैरिफकी नई दरें लागू नहीं की गई हैं। टैरिफ की यह दरें 9 अप्रैल 2025 से लागू होंगी। विभिन्न देशों से अमेरिका में आयात होने वाले उत्पादों पर 10 प्रतिशत की दर से न्यूनतम टैरिफलगाया गया है। साथ ही, कुछ अन्य देशों यथा चीन से आयातित उत्पादों पर 34 प्रतिशत टैरिफलगाने की घोषणा अमेरिकी राष्ट्रपति ने की है। इसी प्रकार, वियतनाम से आयातित उत्पादों पर 46 प्रतिशत, ताईवान पर 32 प्रतिशत, थाईलैंड पर 36 प्रतिशत, भारत पर 26 प्रतिशत, दक्षिण कोरिया पर 25 प्रतिशत, इंडोनेशिया पर 32 प्रतिशत, स्विट्जरलैंड पर 31 प्रतिशत, मलेशिया पर 24 प्रतिशत, कम्बोडिया पर 49 प्रतिशत, दक्षिणी अफ्रीका पर 30 प्रतिशत, बांग्लादेश पर 37 प्रतिशत, पाकिस्तान पर 29 प्रतिशत, श्रीलंका पर 44 प्रतिशत और इसी प्रकार अन्य देशों से आयातित वस्तुओं पर भी अलग अलग दरों से टैरिफ लगाने की घोषणा अमेरिकी राष्ट्रपति ने की है। कुछ उत्पादों जैसे, स्टील, एल्यूमिनियम, ऑटो, ताम्बा, फार्मा उत्पाद, सेमीकंडक्टर, एनर्जी, बुलीयन एवं अन्य महत्वपूर्ण मिनरल्स को अमेरिका में आयात पर टैरिफ के दायरे से बाहर रखा गया है। अमेरिका का मानना है

कि वैश्विक स्तर पर अन्य देश अमेरिका में उत्पादित वस्तुओं के आयात पर भारी मात्रा में टैरिफ लगाते हैं, जबकि अमेरिका में इन देशों से आयात किए जाने वाले उत्पादों पर अमेरिका द्वारा बहुत कम दर पर टैरिफ लगाया जाता है अथवा बिलकुल नहीं लगाया जाता है। जिससे, अमेरिका से इन देशों को निर्यात कम हो रहे हैं एवं इन देशों से अमेरिका में आयात लगातार बढ़ते जा रहे हैं। इस प्रकार, अमेरिका का व्यापार घाटा असहनीय स्तर पर पहुंच गया है। इसके साथ साथ, अमेरिका में विनिर्माण इकाईयां बंद होकर अन्य देशों में स्थापित हो गई हैं और इससे अमेरिका में रोजगार के नए अवसर भी निर्मित नहीं हो पा रहे हैं। अब ट्रम्प प्रशासन ने अमेरिका को पुन: विनिर्माण इकाईयों का हब बनाने के उद्देश्य से अमेरिका को पुन: महान बनाने का आह्वान किया है और इसी संदर्भ में विभिन्न देशों से आयातित उत्पादों पर भारी मात्रा में टैरिफ लगाने का निर्णय लिया गया है ताकि अमेरिका में आयातित उत्पाद महंगे हों और अमेरिकी नागरिक अमेरिका में ही निर्मित वस्तुओं का उपयोग करने की ओर प्रेरित हों। वर्तमान में बढ़े हुए टैरिफका बोझ अमेरिकी नागरिकों को उठाना पड़ेगा और उन्हें अमेरिका में महंगे उत्पाद खरीदने होंगे, क्योंकि नई विनिर्माण इकाईयों की स्थापना में तो वक्त लग सकता है, विभिन्न वस्तुओं का उत्पादन तुरंत तो बढ़ाया नहीं जा सकता अत: जब तक नई विनिर्माण इकाईयों की अमेरिका में स्थापना हो एवं इन विनिर्माण इकाईयों में उत्पादन शुरू हो तब तक अमेरिकी नागरिकों को महंगे उत्पाद खरीदने हेतु बाध्य होना पड़ेगा। इससे अमेरिका में एक बार पुन: मुद्रा स्फीति की समस्या उत्पन्न हो सकती है एवं ब्याज दरों के कम होने के चक्र में भी देरी होगी, बहुत सम्भव है कि मुद्रा स्फीति को कम करने की दृष्टि से एक बार पुन: कहीं ब्याज दरों के बढ़ने का चक्र प्रारम्भ न हो जाए। लम्बे समय में जब अमेरिका में विनिर्माण इकाईयों की स्थापना हो जाएगी एवं इन इकाईयों में उत्पादन प्रारम्भ हो जाएगा तब जाकर कहीं मुद्रा स्फीति पर अंकुश लगाया जा सकेगा। विभिन्न देशों से आयातित उत्पादों पर टैरिफसम्बंधी घोषणा के साथ ही, डॉलर पर दबाव पड़ना शुरू भी हो चुका है एवं अमेरिकी डॉलर इंडेक्स घटकर 102 के स्तर पर नीचे आ गया है जो कुछ समय पूर्व तक लगभग 106 के स्तर पर आ गया था। इसी प्रकार अमेरिका में सरकारी प्रतिभूतियों की 10 वर्ष की बांड यील्ड पर भी दबाव दिखाई दे रही है और यह घटकर 4.08 के स्तर पर नीचे आ गई है, यह कुछ समय पूर्व तक 4.70 के स्तर से भी ऊपर निकल गई थी। अमेरिकी डॉलर के मुकाबले भारतीय रुपए की कीमत अंतरराष्ट्रीय बाजार में बढ़नी प्रारम्भ हो गई है एवं यह पिछले चार माह के उच्चतम स्तर, लगभग 85 रुपए प्रति अमेरिकी डॉलर, पर आ गई है। ट्रम्प प्रशासन के टैरिफ सम्बंधी लिए गए निर्णयों का अमेरिकी अर्थव्यवस्था पर सकारात्मक असर लम्बी अवधि में तो हो सकता है परंतु छोटी अवधि में तो निश्चित ही यह अमेरिकी अर्थव्यवस्था को विपरीत रूप से प्रभावित करते हुए दिखाई दे रहा है। अमेरिकी पूंजी बाजार (शेयर बाजार) केवल दो दिनों में ही लगभग 10 प्रतिशत तक नीचे गिर गया है और अमेरिकी निवेशकों को लगभग 5 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर का नुक्सान हुआ है। इतनी भारी गिरावट तो वर्ष 2020 में कोविड महामारी के दौरान ही देखने को मिली थी। यदि यही स्थिति बनी रही तो अमेरिकी अर्थव्यवस्था कहीं मंदी की चपेट में न आ जाय। यदि ऐसा होता है तो पूरे विश्व की अर्थव्यवस्था भी विपरीत रूप से प्रभावित हुए बिना नहीं रहेगी। अत: ट्रम्प प्रशासन का टैरिफसम्बंधी उक्त निर्णय अति जोखिम भरा ही कहा जाएगा। जब पूरे विश्व की अर्थव्यवस्था विपरीत रूप से प्रभावित हुए बिना नहीं रहेगी तो भारत की अर्थव्यवस्था पर भी कुछ तो विपरीत असर होगा ही। इस संदर्भ में किए गए विश्लेषण से यह तथ्य उभरकर सामने आ रहा है कि बहुत सम्भव है कि ट्रम्प प्रशासन द्वारा भारत से आयातित वस्तुओं पर लगाए गए 26 प्रतिशत के टैरिफ का भारतीय अर्थव्यवस्था पर बहुत अधिक विपरीत प्रभाव नहीं हो। क्योंकि, एक तो भारत से अमेरिका को निर्यात बहुत अधिक नहीं है। यह भारतीय सकल घरेलू उत्पाद का मात्र लगभग 3-4 प्रतिशत ही है। वैसे भी भारतीय अर्थव्यवस्था निर्यात पर निर्भर नहीं है एवं यह विभिन्न उत्पादों की आंतिरक मांग पर अधिक निर्भर है। भारत से सकल घरेलू उत्पाद का केवल लगभग 16 प्रतिशत (वस्तुएं एवं सेवा क्षेत्र मिलाकर) ही निर्यात किया जाता है। दूसरे, भारत से अमेरिका को निर्यात किए जाने कुछ उत्पादों को उक्त टैरिफ व्यवस्था से फ्लिहाल मुक्त रखा गया है, जैसे फार्मा उत्पाद, सेमीकंडक्टर, स्टील, अल्यूमिनियम, ऑटो, ताम्बा, बुलीयन, एनर्जी आदि। संभवत: इन उत्पादों के भारत से अमेरिका को होने वाले निर्यात पर कुछ भी असर नहीं होने जा रहा है। तीसरे, भारतीय कम्पनियों (26 प्रतिशत टैरिफ) को रेडीमेड गार्मेंट्स के अमेरिका को निर्यात में पड़ौसी देशों, यथा, बांग्लादेश (37 प्रतिशत टैरिफ), पाकिस्तान (29 प्रतिशत टैरिफ), श्रीलंका (44 प्रतिशत टैरिफ), वियतनाम (46 प्रतिशत टैरिफ), चीन (34 प्रतिशत टैरिफ), इंडोनेशिया (32 प्रतिशत टैरिफ), आदि के साथ अत्यधिक स्पर्धा का सामना करना पड़ता है। परंतु, उक्त समस्त देशों से अमेरिका को होने वाले रेडीमेड गार्मेंट्स के निर्यात पर भारत की तुलना में अधिक टैरिफलगाए जाने की घोषणा की गई है। अत: इन देशों से रेडीमेड गार्मेंट्स के अमेरिका को निर्यात भारत की तुलना में महंगे हो जाएंगे, इससे रेडीमेड गार्मेंट्स के क्षेत्र में भारत के लिए लाभ की स्थिति निर्मित होती हुई दिखाई दे रही है।

आलेख

गर्मी ने पानी का गणित बिगाड़

पंकज चतुर्वेदी

भारत के सबसे बड़े महानगरों में से एक मुंबई की प्यास बुझाने का दारोमदार जिन सात जलाशयों पर है, उनमें मार्च के चौथे हफ्ते में ही महज 37.67 प्रतिशत पानी बच रह गया। इन जलाशयों में फिलहाल 5 लाख 45 हजार 183 मिलियन लीटर पानी है। दावा है कि यह जल बमुश्किल मई महीने तक चल पाएगा। हर दिन 400 करोड़ लीटर पेयजल की मांग वाले इस महानगर में समय से पहली आई गर्मी ने पानी का गणित बिगाड़ दिया है। गर्मी के कारण जलाशयों में वाष्पीकरण तेज हो गया है। इसलिए जलस्तर तेजी से नीचे जा रहा है। देश के दूसरे संरक्षित जलाशयों के हालात भी मुंबई से बेहतर नहीं हैं। केंद्रीय जल आयोग (सीडब्ल्यूसी) की ताजा रिपोर्ट के मुताबिक, देश के अधिकांश बड़े जलाशयों में पानी उनकी कुल क्षमता के मुकाबले 45न तक कम हो गया है। वहीं, मौसम विभाग ने मार्च से मई के बीच भीषण गर्मी की चेतावनी दी है, तीखी गर्मी यानी जमा जल का अधिक वाष्पीकरण। सीडब्ल्यूसी के अनुसार, देश के 155 प्रमुख जलाशयों में फिलहाल 8,070 करोड़ क्यूबिक मीटर (बीसीएम) पानी बचा है, जबकि इनकी कुल क्षमता 18,080 करोड़ क्यूबिक मीटर है। जलाशय आरक्षित जल-कुंड हैं, जो खेती-किसानी की जान होते हैं। अभूत से कल-कारखाने भी इनके पानी पर निर्भर हैं। पेयजल तो है ही। यदि इन जलाशयों में पानी पर वाष्पीकरण की चोट गहरी हुई तो जान लें कि रबी और खरीफ के बीच तीसरी फसल लेने वाले खेत खाली ही रहेंगे। यदि जलाशय खाली, नदी सूखी तो बहुत सी जल विद्युत परियोजनाओं का ठप होना भी तय है। चिलचिलाती गर्मी में बिजली की कमी बड़े स्तर पर हाहाकार का न्योता है। संकट अकेले जलाशयों का नहीं है, नदियां भी समय से पहले सूख रही हैं। नदियों का सूखना अकेले पानी की कमी ही नहीं होता, इससे समूचे पर्यावरणीय तंत्र का नुकसान होता है। जमीन की नमी कम होने से ले कर जल-जंगल के जीव तक इससे प्रभावित होते हैं, और यह समूचा तंत्र जंगलों के नुकसान का कारण बनता है। खून से लाल बस्तर की जीवन रेखा कहलाने वाली इंद्रावती नदी फरवरी के अंतिम हफ्ते में ही मैदान बन गई। बालाघाट की बावन थड़ी नदी हो या फिर अम्बिकापुर की बांकी नदी या बदायूं की सोत नदी, हर जगह जलधर की जगह रेत का मैदान है और लगता है कि नदी वास्तव में पानी के लिए नहीं, बल्कि बालू के लिए होती है। यह बात सीडब्ल्यूसी कह रहा है कि देश की 20 नदी घाटियों में से 14 में मौजूदा जल भंडार उनकी क्षमता के मुकाबले आधे से भी कम है। इन नदी बेसिनों में से गंगा अपनी सक्रिय क्षमता के मुकाबले मात्र 50 फीसद पर है, जबकि गोदावरी में 48, नर्मदा में 47 और कृष्णा में 34 फीसद पानी ही शेष बचा है। यह परिदृश्य भूजल के लिए सबसे बड़ा खतरा है और हमारे देश की अधिकांश ग्रामीण जल योजनाएं भूजल पर ही निर्भर हैं। बढ़ती गरमी, घटती बरसात और जल संसाधनों की नैसर्गिकता से लगातार छेड़छाड़ का ही परिणाम है कि बिहार की 90 फीसद नदियों में पानी नहीं बचा। कुछ दशक पहले तक राज्य की बड़ी नदियां-कमला, बलान, फल्गू, घाघरा आदि-कई-कई धाराओं में बहती थीं जो आज नदारद हैं। झारखंड की 141 नदियों के गुम हो जाने की बात फाइलों में दर्ज हो चुकी है। राज्य की राजधानी रांची में करमा नदी देखते देखते अतिक्रमण के घेर में मर गई। हरमू और जुमार नदियां नाला बना चुकी हैं। चतरा, देवघर, पाकुड़, पूर्वी सिंहभूम घने जंगल वाले जिले हैं, जहां कुछ ही सालों में सात से 12 नदियों की जल धारा मर गई। यह सवाल हमारे देश में लगभग हर तीसरे साल खड़ा हो जाता है कि 'औसत से कम' पानी बरसा या बरसेगा, अब क्या होगा? देश के 13 राज्यों के 135 जिलों की कोई दो करोड़ हेक्टेयर कृषि भूमि प्रत्येक दस साल में चार बार पानी के लिए त्राहि-त्राहि करती है। अभी तक तो कम बरसात की आंशका होते ही दाल, सब्जी व अन्य उत्पादों के दाम बाजार में आसमानी हो जाते थे लेकिन अब बाजार पर सबसे अधिक असर गर्मी के आंकड़ों का है। इसके बावजूद बढ़ते तापमान के साथ पानी के इस्तेमाल की हमारी आदतें नहीं सुधर रहीं। असल में हमने पानी को ले कर अपनी आदतें खराब कीं। जब कुएं से रस्सी डाल कर पानी खींचना होता था या चापाकल चला कर पानी भरना होता था तो जितनी जरूरत होती थी, उतना ही जल उलींचा जाता था। घर में टोंटी वाले नल लगने और उसके बाद बिजली या डीजल पंप से चलने वाले ट्यूबवेल लगने के बाद तो एक गिलास पानी के लिए बटन दबाते ही दो बाल्टी पानी बर्बाद करने में भी हमारी आत्मा नहीं कांपती है।

साइबर युग में फंसती जा रही आने वाली पीढ़ी

नृपेंद्र अभिषेक नृप

आज के समय में डिजिटल मीडिया हमारी जिंदगी का एक अभिन्न अंग बन चुका है। बच्चों और किशोरों के लिए इंटरनेट केवल एक मनोरंजन का माध्यम नहीं रहा, बल्कि यह उनके मानसिक विकास, सामाजिक पहचान और मूल्यों को आकार देने में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है, लेकिन सवाल यह उठता है कि क्या यह डिजिटल युग हमारे बच्चों के लिए सुरक्षित है? क्या सोशल मीडिया कंपनियां मुनाफे की दौड़ में बच्चों की सुरक्षा को नजरअंदाज कर रही हैं? हाल के वर्षों में कई घटनाओं और शोध ने इस चिंता को और प्रबल कर दिया है कि किस प्रकार सोशल मीडिया के प्रभाव से किशोरों की मानसिकता और उनके व्यवहार पर नकारात्मक असर पड़ रहा है। फिक्की-ईवाई की हालिया रिपोर्ट के अनुसार, 2024 में डिजिटल मीडिया ने टेलीविजन को पछाड़कर मनोरंजन उद्योग में सबसे अधिक राजस्व अर्जित करने वाला माध्यम बन गया है। भारत में 40 फीसद से अधिक मोबाइल फोन उपयोग का समय सोशल मीडिया पर बिताया जाता है। यह आंकड़ा बताता है कि इंटरनेट अब न केवल संचार का साधन है, बल्कि यह बच्चों की दुनिया का एक बड़ा हिस्सा बन चुका है। किशोरों के लिए सोशल मीडिया एक ऐसा मंच बन गया है जहां वे अपनी पहचान बनाते हैं, दोस्त बनाते हैं और खुद को अभिव्यक्त करते हैं, लेकिन इस जुड़ाव के गंभीर परिणाम भी सामने आ रहे हैं। नेटफ्लिक्स की चार-भागों वाली डॉक्यूमेंट्री 'किशोरावस्था' ने इस मुद्दे को और गहराई से उजागर किया है। इसमें एक 13 वर्षीय लड़के द्वारा अपनी सहपाठी की हत्या की घटना को दिखाया गया है। यह एक चरम मामला हो सकता है, लेकिन इससे यह स्पष्ट होता है कि ऑनलाइन प्रभाव किस हद तक किशोर मन को प्रभावित कर सकता है। इंटरनेट पर मौजूद 'टॉक्सिक मैस्कुलिनिटी', घृणास्पद विचारधाराएं, और चरमपंथी विचारधाराएं किशोरों के मन में गहरी पैठ बना सकती हैं। सोशल मीडिया प्लेटफार्म्स का एल्गोरिदम उपयोगकर्ताओं की रुचि के अनुसार कंटेंट प्रदर्शित करता है। इस एल्गोरिदम का उद्देश्य अधिक से अधिक उपयोगकर्ताओं को प्लेटफार्म पर बनाए रखना है, भले ही इसके परिणाम किशोरों की मानसिकता पर नकारात्मक हों। एक बार अगर कोई किशोर किसी विशेष प्रकार की सामग्री देखने लगता है, तो एल्गोरिदम उसे लगातार उसी तरह की सामग्री दिखाने लगता है। यह प्रक्रिया किशोरों को 'रेबिट होल' में धकेल सकती है, जहां वे खुद को एक अंधकारमय और हानिकारक डिजिटल दुनिया में फंसा पाते हैं। जब भी किशोरों के गलत कार्य की बात होती है, तो स्वाभाविक रूप से माता-पिता पर जिम्मेदारी आती है, लेकिन सवाल यह भी उठता है कि क्या माता-पिता अकेले ही इस समस्या को हल कर सकते हैं? ऑनलाइन प्लेटफार्म्स पर बच्चों की गतिविधियों पर निगरानी रखना आज के दौर में अत्यंत कठिन हो गया है। बच्चे अक्सर अपने माता-पिता से छुपाकर सोशल मीडिया का उपयोग करते हैं और कई बार वे अपने वास्तविक उम्र से बड़ी उम्र का प्रमाण देकर प्रतिबंधों को पार कर लेते हैं। ऑस्ट्रेलिया जैसे कुछ देशों में 16 वर्ष से कम आयु के बच्चों के सोशल मीडिया उपयोग पर प्रतिबंध लगाने का प्रस्ताव लाया गया है, लेकिन विशेषज्ञों का मानना है कि ऐसे नियम व्यावहारिक रूप से प्रभावी नहीं हो सकते, क्योंकि किशोर अक्सर तकनीकी उपायों से इन प्रतिबंधों को दरकिनार कर सकते हैं। यह समस्या केवल परिवार तक सीमित नहीं है, बल्कि व्यापक स्तर पर नीति-निर्माण और सामाजिक चेतना का भी विषय है। फेसबुक की पूर्व कर्मचारी फ्रांसेस हॉगन ने 2021 में इस बात का खुलासा किया था कि कंपनी के आंतरिक अध्ययन से यह सामने आया कि सोशल मीडिया पर मौजूद चरमपंथी विचारधाराएं, आत्मघाती प्रवृत्तियां, और अवसादग्रस्त करने वाली सामग्री किशोरों के लिए हानिकारक साबित हो रही हैं। इसके बावजूद, कंपनी ने अपने मुनाफे को प्राथमिकता दी और इन खतरों को रोकने के लिए पर्याप्त कदम नहीं उठाए। इसलिए यह आवश्यक हो गया है कि इन प्लेटफार्मोकी जवाबदेही तय की जाए। इस गंभीर समस्या का समाधान केवल व्यक्तिगत प्रयासों से संभव नहीं है, बल्कि इसके लिए व्यापक सामाजिक और सरकारी हस्तक्षेप की आवश्यकता है। । यह एक चरम मामला हो सकता है, लेकिन इससे यह स्पष्ट होता है कि ऑनलाइन प्रभाव किस हद तक किशोर मन को प्रभावित कर सकता है। इंटरनेट पर मौजूद 'टॉक्सिक मैस्कुलिनिटी', घृणास्पद विचारधाराएं, और चरमपंथी विचारधाराएं किशोरों के मन में गहरी पैठ बना सकती हैं। सोशल मीडिया प्लेटफार्म्स का एल्गोरिदम उपयोगकर्ताओं की रुचि के अनुसार कंटेंट प्रदर्शित करता है। इस एल्गोरिदम का उद्देश्य अधिक से अधिक उपयोगकर्ताओं को प्लेटफार्म पर बनाए रखना है, भले ही इसके परिणाम किशोरों की मानसिकता पर नकारात्मक हों।सबसे पहले, कानूनी नियमन के तहत सरकारों को सोशल मीडिया प्लेटफार्म्स के लिए सख्त नियम लागू करने होंगे, ताकि वे बच्चों की सुरक्षा सुनिश्चित कर सकें। उदाहरण के लिए, आयु सत्यापन प्रणाली को अधिक प्रभावी बनाना आवश्यक है, जिससे नाबालिगों को अनुचित सामग्री से बचाया जा सके और उनकी ऑनलाइन गतिविधियों पर बेहतर नियंत्रण रखा जा सके। इसके साथ ही, शिक्षा और जागरूकता भी इस समस्या के समाधान में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। माता-पिता, शिक्षकों और बच्चों को डिजिटल साक्षरता के प्रति जागरूक किया जाना चाहिए। यदि इस मुद्दे को जल्द ही गंभीरता से नहीं लिया गया, तो आने वाली पीढ़ी एक ऐसे साइबर युग में फंस जाएगी, जहां मुनाफे की दौड़ में उनकी मानसिक और सामाजिक सुरक्षा दांव पर लगी होगी।

अगड़ी जातियों के खिलाफ राहुल गांधी का हल्ला बोल

संतोष कुमार पाठक

कांग्रेस के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष और लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी भी अपनी पार्टी के जनाधार को लगातार बढ़ाने के लिए बिहार का दौरा कर रहे हैं। वर्ष 2025 में ही राहुल गांधी अब तक तीन बार बिहार जा चुके हैं। बिहार में इसी वर्ष अक्टूबर-नवंबर में विधानसभा का चुनाव होना है। तमाम राजनीतिक दल इस विधानसभा चुनाव को लेकर अभी से तैयारियों में जुट गए हैं। एक तरफजेडीयू के मुखिया नीतीश कुमार के नेतृत्व में एनडीए गठबंधन है, जिसमें विधायकों की संख्या के आधार पर बीजेपी नंबर वन की भूमिका में है। वहीं दूसरी तरफ आरजेडी के नेतृत्व में विपक्षी महागठबंधन है,जिसमें कांग्रेस दूसरे नंबर की बड़ी पार्टी है। हालांकि यह भी एक तथ्य है कि कांग्रेस के नेता विपक्षी गठबंधन के लिए महागठबंधन शब्द की बजाय इंडिया गठबंधन का ही प्रयोग करने लगे हैं। कांग्रेस के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष और लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी भी अपनी पार्टी के जनाधार को लगातार बढ़ाने के लिए बिहार का दौरा कर रहे हैं। वर्ष 2025 में ही राहुल गांधी अब तक तीन बार बिहार जा चुके हैं। अपने मिशन बिहार के तहत राहुल गांधी सोमवार (7 अप्रैल) को बिहार की धरती पर थे। पिछले कुछ महीनों के दौरान उनकी यात्राओं की बात करें तो यह राहुल गांधी का तीसरा बिहार दौरा था। इससे पहले राहुल गांधी 18 जनवरी और 4 फरवरी को बिहार के दौरे पर गए थे। लेकिन अपने बिहार दौरे के दौरान, राहुल गांधी ने सोमवार को जिस अंदाज में अपर कास्ट यानी अगड़ी जातियों पर हमला बोला,वो सबके लिए काफी चौंकाने वाला रहा। राहुल गांधी ने कहा कि, इस देश में अगर आप अपर कास्ट के नहीं हैं, तो आप सेकंड क्लास सिटिजन हैं। ये बात मैं यूंही नहीं कह रहा। यह बात इसलिए कह रहा हूं, क्योंकि मैंने सिस्टम को बहुत गहराई से देखा और समझा है। हमने तेलंगाना में जातिगत जनगणना की और उसके परिणामों को देखते हुए तेलंगाना में आरक्षण बढ़ा दिया। मैंने खुद नरेंद्र मोदी के सामने कहा है कि अगर आपकी सरकार आरक्षण की दीवार नहीं खत्म करेगी तो हम आरक्षण में 50 प्रतिशत की सीमा वाली दीवार तोड़ देंगे। राहुल गांधी यहीं नहीं थमे। उन्होंने अगड़ी जातियों के खिलाफ बाकायदा एक माहौल बनाने की कोशिश करते हुए आगे कहा,हमने कांग्रेस के जिला अध्यक्ष चुनें और ये बहुत जरूरी कदम है। पहले हमारे जिला अध्यक्षों में अपर कास्ट के लोग थे, लेकिन अब नई लिस्ट में दो तिहाई लोग- ईबीसी, ओबीसी, दलित, पिछड़ा वर्ग और अल्पसंख्यक वर्ग से हैं।

मैंने और खरगे जी ने बिहार की टीम को साफ संदेश दे दिया है कि आपका काम-बिहार की गरीब जनता का प्रतिनिधित्व करना है। दलितों, ईबीसी, ओबीसी, गरीब सामान्य वर्ग और महिलाओं को जगह देना है। बिहार का यह दुर्भाग्य रहा है कि वहां के नेताओं ने बिहार को जातियों के आधार पर खंड-खंड बांटने का काम किया है। रही-सही कसर नीतीश कुमार ने ओबीसी में से ईबीसी और दलितों में से महादलितों को निकाल कर पूरी कर दी है। ऐसे में राहुल गांधी कांग्रेस के कार्यकर्ताओं का जोश बढ़ाने और कांग्रेस के जनाधार को मजबूत बनाने के लिए ओबीसी, ईबीसी, दलित, महादलित और महिलाओं की बात करें, तो इसमें कुछ भी गलत नहीं है। लेकिन कांग्रेस जैसी राष्ट्रीय और सबसे पुरानी पार्टी के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष और वर्तमान में भी पार्टी आलाकमान की भूमिका निभा रहे राहुल गांधी से अगड़ी जातियों को लेकर इस तरह की भाषा की उम्मीद तो कतई नहीं की जा सकती है। जबकि कांग्रेस और खासतौर से गांधी परिवार ने बीडीएम अर्थात बी से ब्राह्मण (इसमें तमाम अगड़ी जातियों को जोड़ा जाता है), डी से दलित और एम से मुस्लिम फॉर्मूले के आधार पर दशकों तक देश पर राज किया है। बिहार में भी इसी फॉर्मूले के आधार पर दशकों तक कांग्रेस की सरकारें बनती रही हैं। यह भी एक सर्वविदित तथ्य है कि दलित और ओबीसी मतदाताओं को एक साथ नहीं साधा जा सकता। उत्तर प्रदेश में मायावती की पार्टी बीएसपी के साथ गठबंधन करने के बावजूद यूपी के दलितों ने अखिलेश यादव के उम्मीदवारों को वोट नहीं दिया था। बिहार में भी लालू यादव अपनी ही पार्टी के दिग्गज दलित नेता और बिहार के दूसरे दलित मुख्यमंत्री रहे रामसुंदर दास को जनता दल विधायक दल की बैठक में हरा कर ही 1990 में पहली बार राज्य में मुख्यमंत्री बने थे। ऐसे में राहुल गांधी जिस अंदाज में एक ही साथ पिछड़ों और दलितों को साधने की कोशिश कर रहे हैं, उसका असफल होना तय माना जा रहा है। राहुल गांधी को शायद यह पता नहीं है या हो सकता है कि उन्हें अब तक उनके करीबी लोगों ने यह नहीं बताया है कि बीजेपी समेत बिहार में चुनाव लड़ रहे तमाम राजनीतिक दलों ने ओबीसी, ईबीसी, दलित और महादलित को जातियों के हिसाब से बांट कर, उस पर अपना कब्जा जमा लिया है। ऐसे में कांग्रेस के लिए वहां बहुत ही कम स्कोप बचता है। कांग्रेस को यह भी याद रखना चाहिए कि अगड़ी जातियों के लिए अपशब्दों का इस्तेमाल कर, राजनीति का सफर शुरू करने वाली मायावती भी पूर्ण बहुमत हासिल कर अपने दम पर उत्तर प्रदेश जैसे बड़े राज्य की मुख्यमंत्री तभी बन पाई थी, जब उन्होंने अगड़ी जातियों को भी बसपा के साथ जोड़ा था।

दिगम्बर जैन संतों में खून का रिश्ता नहीं, रत्नत्रय आदि गुणों का रिश्ता होता है : भावलिंगी संत श्रमणाचार्य श्री विमर्श सागर जी महामुनिराज

नई दिल्ली (विश्व परिवार)। संघ शिरोमणि भावलिंगी संत श्रमणाचार्य श्री 108 विमर्शसागर जी महामुनिराज की जिनागम पंथ प्रभावना यात्रा राजधानी दिल्ली में पदविहार करते हुये आज 13 अप्रैल रविवार की प्रात: बेला में लक्ष्मीनगर के बैंक एन्क्लेव स्थित श्री 1008 महावीर जिनालय में विशाल चतुर्विध संघ के साथ पहुंची। बैंक एन्क्लेव में पूर्व से विराजमान क्रान्तिवीर मुनिश्री 108 प्रतीकसागर जी मुनिराज ने आचार्य श्री के विशाल चतुर्विध का भव्य मंगल स्वागत स्थानीय जैन समाज के साथ किया।

दोनों ही संघों के मिलन के साथ आचार्य श्री वे विशाल धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए कहा

मन का फूल खिलायें हम,
अन्तर्दीप जलायें हम राग-द्वेष को दूर करें,
चेतन रस बरसायें हम। आतम निर्मलता,
हो-ही-2, ज्ञानी को भाये रे ॥
जीवन है पानी की बूंद, कब मिट जाये रे ॥

भगवान महावीर का दर्शन अनन्तसंसार को नाश करने वाला शाश्वत दर्शन है। जैन दर्शन वीतरागता का दर्शन है। परमात्मा मात्र दो ही जगह हैं, एक तो विदेह क्षेत्र के समयधारण में विराजमान जिनेन्द्र भगवान और दूसरा अपने ही आत्मा में विद्यमान परमात्म स्वरूप। बाहर के जिनेन्द्र भगवान का संबंध सिर्फ हमारे मन से है हमारी आत्मा से नहीं है। हम अपने मन में जिनेन्द्र भगवान को विष्ठाजमान करते हैं और हमारा आत्मा परमात्म स्वरूप को प्रगट करने लगता है।

संतों का परस्पर में मिलन ही प्रवचन है- संतों का परस्पर में मिलन ही।

अपने आप में एक सर्वश्रेष्ठ प्रवचन है। क्योंकि यह मात्र शब्दों तक सीमित नहीं होता अपितु यह संत मिलन आंतरिक निर्मलता को प्रगट करता है। संत मिलन समाज को जीने की कला सिखाता है। आपके आपस में खून के रिश्ते होते हैं, हम संतों का भी आपस में रत्नत्रय गुणों के रिश्ते होते हैं। आपके खून के रिश्ते जीवन की अंतिम श्वास तक चल सकते हैं, हम संतों के रत्नत्रय आदि गुणों के रिश्ते सिद्धालय तक अनवरत चला करते हैं।

आचार्यश्री की आगवानी कर मुनिश्री प्रतीक सागर जी ने कहा- आपको अपने भाई से मिलकर जितनी खुशी नहीं होगी, उससे कहीं जादा खुशी मुझे मेरे बड़े भाई से मिलकर होती है। आन्यार्यश्री से पुन: शीघ्र मिलन हुआ अवश्य ही यह कोई इस जन्म का नाता नहीं है यह तो जन्मों जन्मों का नाता मेरा आचार्यश्री से है जो जल्दी-जल्दी अनायास ही आचार्य श्री से मिलन हो जाता है।

महावीर मेमोरियल में आचार्यश्री विमर्शसागर जी महामुनिराज के त्रय शिष्य मुनिश्री विचिन्त्य सागर जी (3) एवं विभिन्न श्वेतांबर साधु-साध्वियों के सानिध्य में मनाया भगवान महावीर स्वामी जन्म कल्याणक महोत्सव। **-हर्ष जैन**

अपनी संतान को शिक्षा ऐसी दिलायें जिससे वे कुलवंश व धर्म की रक्षा कर सकें : भावलिंगी संत श्रमणाचार्य श्री विमर्थ सागर जी मुनिराज

नई दिल्ली (विश्व परिवार)। राग जलाता है हमको, द्वेष जलाता है हमको। वीतरागता प्रगटाओ, कर्म जलाता है हमको। रक्षा ही शिक्षा हो हो, बिन धर्म न पाये रे।। जीवन है पानी की बूंद, कब मिट जाये रे ॥ प्राचीन काल में गुरुकुलों का प्रचलन था। राजघराने के बच्चे भी उन गुरुकुलो में सब सुख-सुविधाओं को त्यागकर अध्ययन के लिए जाया करते थे। आज वर्तमान में आपके बच्चे शिक्षा के नाम पर उच्चत्तम शिक्षा प्राप्त तो कर रहे हैं किन्तु आज की

बैंक एन्क्लेव में ही जैन कुल एवं जैन धर्म की रक्षार्थ सिरी विमर्श वाणी

शिक्षा आपकी सन्तान को निर्बल बना रही है। उस शिक्षा को प्राप्तकर वे बच्चे न तो अपनी ही रक्षा कर पा रहे हैं और न ही अपनों की तथा कुल व धर्म की रक्षा में शक्तिहीन बने हुए हैं।

आप आगामी पीटी को क्या दे रहे हैं। क्या आपकी सन्तान आपकी बुढ़ापे की लाठी बन पायेंगे, भौतिक शिक्षा को प्राप्तकर, क्या आपकी सन्तान आपके कुलवंश की रक्षा में कामयाब हो पा रही है। जिनमंदिरों से पराङ्मुखता क्या मापको सुख शान्ति दे सकती है। धार्मिक शिक्षा के बिना मात्र लौकिक शिक्षा क्या धर्म की रक्षा कर सकती है। क्या आप अपने परिवार के समक्ष कोई आदर्श उपस्थित कर पा रहे हैं। आज आप अपने आपको कमजोर बनाने में लगे हुए हैं। आज आप लोग जिनमंदिरों के पास से अपने घरों को बेचकर बहाँ बसते जा रहे हो जहाँ दूर-दूर तक कोई जैन मंदिर दिखाई नहीं देता। आपको अन्यत्र जाकर ही बसना है तो बसिए किन्त जिनमंदिर के समीप बने हुए अपने पूर्वजों के प्राचीन घरों को बेचिये नहीं, अपितु अपने घरों को जिनमंदिर के लिए सौंपकर जाइये ताकि सभी घरों को मिलाकर मंदिर समिति एक नयी जैन कॉलोनी डवलप कर सके। आज आप ही जिनमंदिर के समीपस्थ अपने घर को किसी भी व्यक्ति को बेन्च देते हैं जिसे हिंसा-अहिंसा को कोई भी विवेक नहीं होता पश्चात् आप ही कहते पाये जाते हैं कि अपने मंदिरों की अपने धर्म की रक्षा कैसे हो। आज आपको भी स्वयं सतर्क होने की आवश्यकता है- आप अपने बच्चों को धार्मिक शिक्षा के साथ-साथ धार्मिक शिक्षा अवश्य प्रदान करें, करवायें।

जिनमंदिर के समीपस्थ मकानों को अन्य मतावलम्बियों को न बेचें। आपके घर का प्रत्येक सदस्य मंदिर प्रतिदिन जाने का संकल्प ले।

आप किसी तीर्थक्षेत्र पर वन्दनार्थ जावें तो वहाँ पर सुविधाओं के अभाव की आलोचना न करें अपितु आप स्वयं अथवा अपनी समाज के बीच बैठकर उस अभाव को ही अभाव कर देवें। यदि किसी तीर्थ क्षेत्र की सुरक्षार्थ बाउण्ड्री बाल नहीं है तो यदि आप समर्थ हों तो स्वयं ही अथवा मिल-जुलकर क्षेत्र की सुरक्षार्थ संकल्प करें कि अबकी साल, इस क्षेत्र की बाउण्ड्रीबाल हमारी समाज मिलकर करायेगी।

अतिशय क्षेत्र नवागढ़ के अधिष्ठाता प्रतिष्ठाचार्य ब्र. जयकुमार जी निशांत ने आचार्य श्री 108 विमर्थ सागर जी महामुनिराज के दर्शनकर जिनधर्म की रक्षार्थ अपनी चिंता व्यक्त करते हुए कहा- जिनमंदिरों से आज हमारा समाज पलायन करता जा रहा है, यदि ऐसा ही रहा तो भविष्य भयानक अंधकार में है।

चमत्कारोदय तीर्थ बोहरीवंद में प्रभु का मनाया तप कल्याणक

जब-जब हमें फीलिंग हो कि हमारा कर्म ठीक नहीं है हमें उसके अनुसार जीना पड़ेगा- मुनिश्री सुधासागरजी महाराज

वोहरी वंद-कटनी (विश्व परिवार)। जब-जब हमें फीलिंग हो कि हमारा कर्म ठीक नहीं है, हमें कर्म के अनुसार जिंदगी जीना पड़ रही है, समझ लेना आप औदायिक भाव में चले गए, आपकी जिंदगी का सबसे बड़ा अपशगुन है ये। तुम बहुत कार्य करने में समर्थ हो लेकिन जैसे ही तुम्हारे मन में ये भाव आ जाए कि होना तो वही है जो निश्चित है, समझ लेना उस समय तुम्हारी शक्ति इतनी क्षय हो जाती है, जैसी किसी गाड़ी में से हवा निकल जाती है। होगा तो वही जो निश्चित है, किसी भी कार्य करते समय ये परिणाम अपनी जिंदगी में मत आने देना। बस इतना सा भाव कार्य करते समय आ जाए कि वही होगा मैं जो करना चाहता हूँ, वही जियूँगा जो मैं आज जीना चाहता हूँ, वही सोचूँगा जो मैं आज सोचना चाहता हूँ, वही देखूँगा जो मैं आज देखना चाहता हूँ, यदि प्रथम क्षण में कार्य करते समय तुम्हारे अंदर ये परिणाम आ जाये, जाओ दुनिया की कोई ताकत तुम्हारा अमंगल नहीं कर सकती। तुमने खुद अपना मंगलाचरण कर लिया। उस प्रथम क्षण को पकड़ना, चाहे व्यापार करना, चाहे सुबह उठना। कभी सुबह उठते ही समय एकदम पहला क्षण आज वही जिंदगी होगी जो मैं जीना चाहता हूँ। आप देखना पग पग पर

1008 कलशों से होगा शान्ति नाथ भगवान का महा मस्तिष्काभिषेक

तुम बढ़ते जाओगे, अंधेरा दूर होता जाएगा। तुम कांटों को कुचलते हुए चले जाओगे, कोई कांटा तुम्हें रोक नहीं पाएगा क्योंकि तुम्हारी जिंदगी का सबसे बड़ा शगुन- कर्म चेतना का अर्थात अंदर से सहज भाव, हमारे पुरुषार्थ से नहीं।

मुनि पुंगव के कर कमलों से हुई मुनि श्री आदि सागर जी की दीक्षा- मध्यप्रदेश महासभा संयोजक विजय धुर्रा ने बताया कि चमत्कारोदय तीर्थ बोहरी वंद जिला कटनी में चल रहे श्री मद् जिनेन्द्र पंच कल्याणक महोत्सव में आज राजा रिषभ देव ने नीलांजना के नृत्य के दौरान देह त्याग की घटना को देख कर वैराग्य को प्राप्त हो गये उनके वैराग्य की अनुमोदन करने लौकांतिक देव उपस्थित हुए और प्रभु के वैराग्य की सराहना करने लगे वैराग्य के वाद प्रभु वन गमन कर दिया जहां निर्यापक श्रमण मुनि पुंगव श्रीसुधासागरजी महाराज ने राजा रिषभ देव के पंच मुस्ठी कैशलोंच किए व दीक्षा के संस्कार देकर भक्तों की जय जय कार के बीच मुनिश्री आदि सागर नाम घोषित किया इस दौरान निर्यातक श्रमण मुनि श्री प्रसाद सागर जी महाराज मुनिश्री पद्म सागर जी महाराज मुनिश्री शीतल सागर जी महाराज क्षुल्लक श्री गंभीर सागर जी महाराज क्षुल्लक श्री वरिष्ठ सागर जी महाराज क्षुल्लक श्री विदेह सागर जी महाराज ससंघ मंच पर विराजमान रहे इसके पहले प्रतिष्ठा चार्य प्रदीप भइया द्वारा राज्य संचालन सहित अन्य क्रियाएं दिखाई गई कल अंतिम दिवस पर भगवान श्री शांतिनाथ स्वामी का एक हजार आठ रिद्धिमंत्रो का उच्चारण परम पूज्य गुरुदेव के श्री मुख से होते हुए महा मस्तिष्काभिषेक किया जायेगा। **-विजय धुर्रा**

कोयला में हीरा होता है, सम्यक रत्नत्रय पाकर पुरुष हीरा सा श्रेष्ठ पुरुष हो जाता है : निर्यापक श्रमण श्री समता सागर जी महाराज

कोरबा (विश्व परिवार)। कोयला में हीरा बनने की संभावना रहती है, निश्चित परिष्करण की प्रक्रिया से कोयला हीरा बन जाता है। ऊर्जा नगरी कोरबा में प्रथम नगर प्रवास आगमन पर आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के उत्कृष्ट आज्ञानुवर्ती निर्यापक मुनि श्री समता सागर महाराज ने अपने संक्षिप्त उपयोगी उद्बोधन में कोयला के माध्यम से जैन दर्शन में निर्वाण का बोध कराते हुए कहा कि यहां धूल धक्कड़ धुआं प्रदूषण के साथ कोयला का भी प्रचुर भंडार है जो कि हीरा बनने की क्षमता रखता है/बनता है।

निर्यापक मुनि श्री समता सागर महाराज ने कहा कि श्रावकों के साथ कोरबा की श्राविकाओं ने भी लगभग ढाई किलोमीटर मुनि संघ के साथ विहार किया। श्राविकाओं को भी विहार में श्रम की अनुभूति प्राप्त कर ये जता दिया कि श्राविकाएं भी श्रावकों से कम नहीं है। मुनि श्री ने कहा कि कोरबा की भौगोलिक स्थिति ऐसी है कि श्रावक मंदिर से कई किलोमीटर दूर से आते हैं। देव शास्त्र गुरू की श्रध्दा व आस्था पूर्वक पूजन सम्यक दर्शन का परिचायक है। सम्यक दर्शन के साथ सम्यक ज्ञान और चारित्र मिलने से सम्यक रत्नत्रय की उपलब्धि हो जाती है जिससे निर्वाण का मार्ग प्रशस्त हो जाता है।

इसके पूर्व मुनि संघ के ऊर्जा नगरी कोरबा आगमन पर नगर के जैन समाज ने मुनि संघ की भव्य अगवानी की।नगर से लगभग ढाई किलोमीटर दूर सर्व मंगला चौक पर जैन समाज ने मुनि संघ का पाद प्रक्षालन किया।

डा.प्रदीप जैन, डा. प्रिंस जैन, अजित जैन, राकेश, मुकुल, शांतकुमार, वीरेंद्र नारद, राजा नारद, आशीष जैन, दीपांशु, दीपेश, चक्रेश, दिनेश, अखिलेश, कपूर चंद, मनीष, अभय जैन, देवेन्द्र जैन, ओमप्रकाश जैन आदि के साथ बड़ी संख्या में महिलाओं ने भी मुनि संघ की अगवानी की।

-वेदचन्द जैन

हर प्रतिमा खंडित है मानो करूणा के प्रतिमान की, दुनिया को है बहुत जरूरत महावीर भगवान की

महावीर जयंती पर कवि सम्मेलन में प्रख्यात कवियों ने देररात तक खूब लूटी श्रोताओं की वाह-वाही

ललितपुर (विश्व परिवार)। जैन धर्म के चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी के जन्मकल्याणक पर एक शाम महावीर के नाम अखिल भारतीय कविसम्मेलन का आयोजन स्थानीय लोहापीतल बाजार में दिगम्बर जैन पंचायत समिति के तत्वावधान में हुआ।जिसमें कवियों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से देर रात्रि तक श्रोताओं की वाहवाही लूटी। कार्यक्रम का शुभारम्भ भगवान महावीर के चित्र के सम्मुख दीप प्रज्जवलित कर हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रख्यात कवि गीतकार यशपाल %यश% फिरोजाबाद ने की जबकि संचालन डां0 कमलेश जैन बसंत द्वारा किया गया। दिगम्बर जैन पंचायत के पदाधिकारियों ने कार्यक्रम के प्रारम्भ में आमंत्रित कवियों का परम्परागत स्वागत किया।गीतकार शीतल देवयानी इन्दौर की रचना अधर-अधर पर आहे उपजी नयन नीर ने जन्म लिया, दीपों तक हत्या कर दी जब अधियारी रातों ने, तब आशा कि किरण सरीखा महावीर ने जन्म लिया के मंगलाचरण से शुरू हुए कविसम्मेलन में अनिल तेजस टीकमगढ़ ने भगवान महावीर और जैनदर्शन पर अपनी रचनाएं सुनाई।जबकि मुकेश मनमौजी छपारा ने अपनी रचना में कहा तमाम उम्र वो सबको प्यार देती दुआए औलाद को बेशुमार देती, जाने कैसा जादू मां तेरे हाथों में सिर पर हाथ फेरती तो बुखार उतार देती पर खूब वाहवाही लूटी। वीर रस के कवि पंकज अंगार ने कहा हिंसा चोरी लूट धाके चीख कर कहते हैं, दुनिया को बहुत जरूरत है महावीर भगवान की। हर प्रतिमा खंडित है मानों करूणा के प्रतिमान की शाख दाव पर लगी हुई है भारत के सम्मान की। कवि अमित शुक्ला रीवा की रचना गलती नहीं है बेटा इसमें तुम्हारी कोई जान लो ये प्रभु में दुख क्यों दिखाए है। चार-चार बेटियों की भ्रूण हत्या करने के बाद तुम जैसे बेटे को जो पाए हैं।

कवि वीरेन्द्र विद्रोही की रचना वन के आंखों में आँसू वो नीर हो गए वो खो गए जहां से तो तस्वीर हो गए।करूणा दया का पाठ पढ़ाकर चले गए ऐसे महान संत महावीर हो गए।श्रोताओं द्वारा खूब सराही गई। हास्य कलाकार लक्ष्मण नेपाली ने अपनी रचनाओं के माध्यम से श्रोताओं को खूब लोटपोट किया। कवि सम्मेलन में स्थानीय कवि अखिलेश शाडिल्य, महेश नामदेव मास्साब, स्वदेश सोनी, मंजू कटारे की मौजूदगी ने एक शाम महावीर के नाम को गरिमा प्रदान की। कार्यक्रम के दौरान महावीर जयंती महोत्सव में उल्लेखनीय सेवाओं के लिए स्वयंसेवी संस्थाओं को जैन पंचायत के अध्यक्ष डॉ. अक्षय टडैया की अध्यक्षता एवं महामंत्री आकाश जैन के संचालन में सम्मानित किया गया। व्यवस्थाओं में धार्मिक आयोजन समिति के संयोजक प्रतीक इमलया, राकेश जैन रिंकू का योगदान प्रसंशनीय रहा।इस मौके पर जैन पंचायत के पूर्व अध्यक्ष अनिल जैन अंचल, मंत्री कैप्टन राजकुमार जैन आदि मौजूद रहे। **-अक्षय अलया**

पावापुरी ऊन में जैनेश्वरी दीक्षा एवं तप कल्याणक में उमड़ा श्रद्धा का सैलाब

सानिध्य पट्टाचार्य विशुद्ध सागर जी, मूल संघ श्री विवर्धन सागर जी, विश्व नायक सागर जी, गणिनी लक्ष्मी भूषण माताजी, गणिनी श्री विशिष्ट श्री माताजी

पावागरी ऊन बड़वानी (विश्व परिवार)। स्वर्ण भद्रादि चार महामुनियों की निर्वाण भूमि सिद्ध क्षेत्र पावागिरि ऊन में परम पूज्य भारत गौरव, गणाचार्य श्री 108 विराग सागर जी गुरुदेव के पट्टाचार्य श्री 108 विशुद्ध सागर जी महाराज के पावन सानिध्य में अनवरत चल रहे जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव में दीक्षा तप कल्याणक महावीर जयंती पट्टाचार्य श्री जी के आचार्य पदारोहण एवं गणिनीआर्यिका लक्ष्मी भूषण व गणिनी श्री विशिष्ट श्री माताजी के दीक्षा दिवस के सुअवसर पर गणिनी विशिष्ट श्री माताजी ने 2 भव्य जैनेश्वरी दीक्षाये प्रदान की।

इस अवसर पर पट्टाचार्य श्री के कर कमलो से लगभग 1100 जिनबिम्ब प्रतिमाओं के दीक्षा संस्कार हुए साथ ही गुरुदेव के ही मुखारविंद से मंत्रोच्चारण पूर्वक दीक्षार्थियों के संस्कार पूज्य माताजी ने किये। दीक्षा कार्यक्रम के पूर्व दीक्षार्थी क्षुल्लिका विपय श्री माताजी विशाल पंडाल के मध्य समस्त आचार्य संघ, आर्यिका संघ,क्षुल्लक- क्षुल्लिका व गृहस्थिक परिवार व संसार के समस्त जीवों से क्षमा याचना पूर्वक जैनेश्वरी दीक्षा की प्रार्थना की।

दीक्षार्थी जय श्री दीदी जो पूर्व में भारतीय जनता पार्टी छतरपुर में राजनेता के पद पर रह चुकी हैं उन्होंने भी क्षमा याचना पूर्वक वैराग्य भाव प्रगट करते हुए कहा कि मैं अभी राजनीति के नेता के रूप में देश की रक्षा कर रही थी किंतु अब मैं मोक्ष मार्ग के नेता के पथ पर आगे बढ़कर अपनी आत्मा की रक्षा करना चाहती हूं अत: परम पूज्य गणाचार्य भगवन श्री 108 विराग सागर जी गुरुदेव के आशीर्वाद से आज पूज्य माता जी को गुरु मां के रूप में स्वीकार करती हूं।

तत्पश्चात गणिनी आर्यिका श्री 105 विशिष्ट श्री माताजी ने गुरु उपकारों को स्मरण करते हुए कहा-पूज्य गुरुदेव ने मुझे आज के दिन संयम प्रदान किया था, गुरुदेव तो आज हमारे बीच नहीं है किंतु हम उनके आदर्शों, शिक्षाओं व परंपराओं को प्राणपन से पालन करेंगे और रही बात दीक्षा की तो आज जो दीक्षाये हो रही है वह मेरी नहीं पूज्य गुरुदेव की ही धरोहर है जिनको हम मोक्ष मार्ग पर परम पूज्य पट्टाचार्य श्री जी की विशुद्ध देशना व छत्रछाया में मोक्ष पथ के पथिक बना रहे हैं। अंत में पूज्य माताजी ने दीक्षार्थियों को मोक्ष मार्ग की कठिन साधना, तलवार की धार पर चलने की तरह गुरु संघ व आगमिक सूत्रों को बताते हुए उनके वैराग्यमय भावों को जान जैनेश्वरी दीक्षा के संस्कार किये।

इस सुअवसर पर बाहर से पधारे गुरु भक्तों में श्री अरुण जी कोठारिया अहमदाबाद, कमल कुमार जी कमलाकुर, जय कुमार जी कानपुर, भरत सेठ पत्रकार घुवारा, नरेंद्र जी गुरु कृपा रायपुर ने चित्र अनावरण कर दीप प्रज्वलन किया व बालिकाओं द्वारा मंगलाचरण से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। साथ ही गुरु भक्तों व पूज्य माताजी ने प्रात: काल की बेला में गुरुदेव का पाद पक्षालन व शास्त्र भेंट किया।

तत्पश्चात गुरु उपकार दिवस पर विशेष संगीतमय गुरु पूजन की गई। विशेष अतिथि के रूप में खरगोन नगर पालिका अध्यक्ष श्रीमति छाया जी जोशी, अध्यक्ष बालकृष्ण जी पाटीदार, पूर्व जिला पंचायत से जगदीश जी पटेल, संतोष जी पाटीदार, छोटू लाल जी कुशवाह आदि ने पधारकर गुरुदेव को श्रीफल चढ़ा, कार्यक्रम का लाभ प्राप्त किया।

7 अप्रैल से 12 अप्रैल 2025 तक भव्याति भव्य जिन बिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन बड़े ही हर्षोल्लास के साथ संपन्न हुआ है। जिसमें 7 अप्रैल को क्षेत्र पर परम पूज्य गणाचार्य श्री जी के मूल संघ के श्रमण गणधर मुनि श्री 108 विवर्धन सागर जी, प्रवर्तक मुनि श्री 108 विश्वनायक सागर जी एवं गणिनी आर्यिका यशस्वनी माताजी, लक्ष्मी भूषण माताजी एवं गणिनी आर्यिका विशिष्ट श्री माताजी ससंघ का भव्य मिलन हुआ, तत्पश्चात विशाल जुलूस घर यात्रा सहित कार्यक्रम स्थल पर पहुंचा जहां पंडित श्री धर्मचंद जी प्रतिष्ठाचार्य के निर्देशन में मंडप उद्घाटन व ध्वजारोहण का कार्यक्रम हुआ। पश्चात परम पूज्य पट्टाचार्य श्री जी ने अपने मंगल उद्बोधन में आगमिक सूत्रों के माध्यम से.गुरु भाई -बहनों व विशाल जैन समूह के मध्य पंच कल्याण प्रतिष्ठा के महत्व को बताते हुये कहा-पंचकल्याणक जैनागम की एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें पाषाण को भी सूरिमंत्र आदि के द्वारा परमात्मा बनाया जाता है जिस प्रकार मूर्ति बनने के पूर्व मूर्तिकार पाषाण में अनेकों बार चोट देता है तब कहीं चोट को सहन कर वह पाषाण मूर्ति का सुंदर व साकार रूप धारण करता है। इस प्रकार आज तक जितने भी सिद्ध परमात्मा हुए सभी ने शरीर को त्याग- तपस्या के माध्यम से तपाया और तप से होने वाले कष्टो को समतापूर्वक सहन किया तभी वे अष्ट कर्मों से रहित सिद्ध पद को प्राप्त हुये।

इसी प्रकार आगे गर्भकल्याणक, जन्म कल्याणक, तप, ज्ञान व मोक्ष कल्याणक की क्रियाओं में भगवान आदिनाथ के गर्भ से लेकर जन्म, जन्माभिषेक, बाल कीड़ा, षट्कर्मणका उपदेश, श्रेष्ठ प्रजा पालक, नीलांजना नृत्य, भरत- बाहुबली पुत्रों को अयोध्या व पोदनपुर राज्य की प्राप्ति व वैराग्य के अद्भुत दृश्य को मंच कलाकारों के द्वारा बहुत ही सुंदर दृष्टि से दर्शाया गया। तत्पश्चात वैराग्य होते ही ऋषभदेव के वन की ओर जाने पर राजा अंतिम कुलकर नाभिराय व माता मरू देवी के पुत्र वियोग का विलाप देख सारी जनता की आंखों में अश्रु धारा निकल पड़ी किंतु बैरागी होते हैं उन्हें मोहि प्राणियों .के मोह किंचित मात्र भी असर नहीं पड़ता अत: तप कल्याण के दिन ऋषभदेव संसार की मोह माया को छोड़ 4000 राजाओं के साथ दीक्षित हो महामुनिराज बन गए।

दीक्षा लेते ही मुनिराज मति, श्रुत, अवधि व मन पर्याय ज्ञान के धारी होन। दीक्षा के पश्चात 11 अप्रैल को प्रात: काल महा मुनिराज के आहारचर्या का मनोहरी दृश्य दिखाया गया जिसमें बड़े-बड़े राजा-महाराजाओ अपने-अपने देश की अमूल्य सामग्री प्रदान करना चाही, राज्य कन्याएं देकर मनाया कि आप हमारे यहां आहार कर लीजिए किंतु जैनागम की चर्चा वीरचार्य मानी जाती है वे अपनी विधि से निकलते हैं। हालांकि भगवान को आहार की आवश्यकता नहीं थी फिर भी वे आगमिक आहारचर्या का ज्ञान करने हेतु चार्य को निकले थे। लगभग 13 माह कुछ दिन के पश्चात हस्तिनापुर के सौभाग्यशाली पूर्व भव की श्रीमति, राजा श्रेयांश व सोम ने पड़गहन कर आहार कराया। मध्यान्ह काल में भगवान को केवल ज्ञान हुआ तथा विशाल समवशरण की रचना के मध्य गणधर परमेष्ठि के रूप परम पूज्य पट्टाचार्य श्री विशुद्ध सागर जी महाराज ने अपनी मंगल देशना के माध्यम से जीवादि सात तत्वों, नो पदार्थों,छह द्रव्यों आदि का स्वरूप समझाते हुए निश्चय- व्यवहार सम्यक्त्व पर विशुद्ध भावों को व्यक्त किया साथ ही सभा में उपस्थित भव्य जीवों के मन में उठने वाली जिज्ञासाओं का आगमिक समाधान दे उनके सम्यक दर्शन को मजबूत किया। **-भरत सेठ, पत्रकार घुवारा**

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

बस्तर संभाग

रायपुर मंगलवार 15 अप्रैल 2025

संक्षिप्त समाचार

पुलिस अधीक्षक सिद्धार्थ तिवारी ने किया कोतवाली थाने का औचक निरीक्षण

कोरबा(विश्व परिवार)। पुलिस अधीक्षक कोरबा सिद्धार्थ तिवारी द्वारा आज कोतवाली थाने का औचक निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान थाने में लंबित शिकायतों की समीक्षा की गई। तिवारी ने सभी विवेचकों को स्पष्ट निर्देश दिए कि लंबित शिकायतों का प्राथमिकता के आधार पर शीघ्र निराकरण सुनिश्चित किया जाए। उन्होंने यह भी निर्देशित किया कि प्रत्येक प्रकरण के निराकरण उपरांत संबंधित आवेदक को की गई कारवाही से अवगत कराया जाए। निरीक्षण के दौरान थाना परिसर की साफ-सफाई, रिकॉर्ड संधारण की स्थिति की भी समीक्षा की गई। उन्होंने अधिकारियों को जनता से सौहार्दपूर्ण व्यवहार करने तथा प्रत्येक फरियादी की बात ध्यानपूर्वक सुनने के निर्देश दिए।

मालगाड़ी के सामने कूदकर युवक ने की खुदकुशी

कोरबा(विश्व परिवार)। शनिवार को जिले के उरगा थाना क्षेत्र के सरगबुंदिया रेलवे समपार फाटक के पास एक अज्ञात युवक ने मालगाड़ी के सामने कूदकर जान दे दी। लोको पायलट के मुताबिक, युवक पटरी के किनारे चल रहा था। उन्होंने कई बार हॉर्न बजाया और गाड़ी की रफ्तार भी कम की। लेकिन युवक ने अचानक मालगाड़ी के सामने छलांग लगा दी। हादसे के बाद इमरजेंसी ब्रेक लगाकर गाड़ी रोकी गई और स्टेशन मास्टर को सूचना दी गई। मृतक की उम्र करीब 25-27 साल की है। वह जींस और शर्ट पहने हुए था। उसकी पहचान अभी तक नहीं हो पाई है। रेलवे आरपीएफ पुलिस ने घटना की जानकारी चांपा जीआरपी पुलिस को दी। युवक की पहचान के लिए उरगा थाना पुलिस गांव के कोटवारों के जरिए मुनादी करवा रही है। साथ ही व्हाट्सएप ग्रुप्स में भी उसकी फेटो शेयर की जा रही है। घटनास्थल सरगबुंदिया रेलवे स्टेशन के पास है। आगे की कार्रवाई के लिए पड़ोसी जिला जांजगीर-चांपा से जीआरपी पुलिस के आने का इंतजार किया गया।

मौसम में बदलाव: आंखों में जलन, खुजली व सूजन जैसी होने लगी शिकायतें

कोरबा(विश्व परिवार)। तापमान बढने के साथ ही लोगों को आंखों से जुड़ी कई समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। कोरबा में फिलहाल ऐसी शिकायतें लगातार आ रही है कि लोगों को आंखों से संबंधित समस्या है। ऐसे लोग कम खर्च पर उपचार करने स्वास्थ्य विभाग के संपर्क में है और अगर उनकी जेब मजबूत है तो वह निजी क्लीनिक भी पहुंच रहे हैं। मेडिकल कॉलेज की नेत्र रोग विशेषज्ञ ने बताया कि मौसम में बदलाव के कारण आंखों में जलन, खुजली और सूजन जैसी परेशानियां हो सकती हैं। नेत्र विशेषज्ञ ने बताया कि धूल और प्रदूषण भी इन समस्याओं को बढ़ा सकते हैं। ऐसे में जरूरी है कि लोग सतर्क रहें। उन्होंने सलाह दी कि आंखों में नमी बनाए रखने के लिए उन्हें दिन में कई बार साफपानी से धोना चाहिए। यदि किसी को आंखों से जुड़ी समस्या हो रही हो तो वह नजदीकी सरकारी अस्पताल में संपर्क कर सकता है। सभी सरकारी अस्पतालों में आंखों की जांच और इलाज की समुचित सुविधा उपलब्ध है।स्वास्थ्य विभाग ने कोरबा जिले के लोगों से अपील की कि अगर गर्मी के इस मौसम में आंखों से जुड़ी कोई भी समस्या हो, तो स्वयं इलाज करने के बजाय विशेषज्ञ से सलाह लें और उचित इलाज करवाएं, क्योंकि आपकी आंखें बेहद कीमती है।

बस्तर को माओवाद से मुक्त करने के संकल्प के साथ सुकमा पहुँचे उपमुख्यमंत्री विजय शर्मा

उपमुख्यमंत्री श्री विजय शर्मा ने सुकमा में पंचायत प्रतिनिधियों से किया संवाद

माओवाद मुक्त पंचायतों को मिलेगी 1 करोड़ रुपये की विकास निधिःगांवों को बस, मोबाइल सेवा और बिजली कनेक्टिविटी से जोड़ा जाएगा

रायपुर (विश्व परिवार)। प्रदेश के उपमुख्यमंत्री एवं गृहमंत्री श्री विजय शर्मा ने शनिवार को अपने एक दिवसीय सुकमा प्रवास के दौरान कलेक्ट्रेट कार्यालय में नक्सल प्रभावित संवेदनशील क्षेत्रों के सरपंचों, जनपद सदस्यों और जिला पंचायत प्रतिनिधियों के साथ माओवाद मुक्त बस्तर के निर्माण को लेकर व्यापक चर्चा की।

बैठक की शुरुआत में उपमुख्यमंत्री श्री शर्मा ने सभी पंचायत प्रतिनिधियों से परिचय प्राप्त किया और उनके क्षेत्रों की भौगोलिक स्थिति एवं मूलभूत सुविधाओं की उपलब्धता की जानकारी ली। उन्होंने कहा कि बस्तर में विकास की अपार संभावनाएँ हैं और यहाँ के बच्चे अत्यंत प्रतिभाशाली हैं। माओवाद के कारण विकास की प्रक्रिया बाधित होती है, जिसे समाप्त करने के लिए सभी को मिलकर कार्य करना होगा।उपमुख्यमंत्री श्री शर्मा ने पंचायत प्रतिनिधियों से आह्वान करते हुए कहा कि जो माओवाद की राह छोड़कर समाज की मुख्यधारा में आना चाहें, उनका पुनर्वास राज्य शासन द्वारा सुनिश्चित किया जाएगा। आत्मसमर्पित नक्सलियों को तत्काल 50 हजार रुपये की सहायता राशि दी जाएगी तथा उन्हें 4-5 महीने के आवासीय कौशल प्रशिक्षण में शामिल किया जाएगा, जिसमें रहने-खाने की सुविधा के साथ-साथ 10 हजार रुपये की आर्थिक सहायता भी दी जाएगी।

उन्होंने बताया कि माओवाद मुक्त पंचायत घोषित होते ही संबंधित ग्राम पंचायत को 1 करोड़ रुपये की विकास निधि स्वीकृत की जाएगी। जनपद एवं जिला पंचायत सदस्यों को भी पृथक से विकास कार्यों के लिए राशि दी जाएगी। साथ ही संबंधित गाँवों को बस सेवा, मोबाइल नेटवर्क और बिजली कनेक्टिविटी से भी जोड़ा जाएगा। उन्होंने पंचायत पदाधिकारियों से प्रधानमंत्री आवास प्लस योजना के तहत अधिक से अधिक पात्र हितग्राहियों के पंजीयन हेतु जागरूक करने का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि सरकार की मंशा स्पष्ट है ङ्क जनता के मन की बात को समझते हुए बस्तर को माओवाद से पूर्णत: मुक्त करना।

उपमुख्यमंत्री श्री शर्मा ने कहा कि केंद्रीय गृहमंत्री श्री अमित शाह के मार्गदर्शन और मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय के नेतृत्व में हम सभी मिलकर जल्द ही माओवाद मुक्त छत्तीसगढ़ का सपना साकार करेंगे।

इस अवसर पर महिला आयोग की सदस्य सुश्री दीपिका सोरी, आईजी श्री सुंदरराज पी., डीआईजी श्री कमलोचन कश्यप, कलेक्टर श्री देवेश कुमार ध्रुव, एसपी श्री किरण चव्हाण, जनप्रतिनिधिगण श्री धनीराम बारसे, जिला पंचायत अध्यक्ष व सदस्यगण, जनपद अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, सरपंचगण एवं अन्य अधिकारीगण उपस्थित थे।

बाबा साहेब डा.अंबेडकर का भाजपा ने किया पुण्य स्मरण

भाजपा नगर मण्डल ने मनायी बाबा साहेब की जन्म जयंती

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष किरण देव व सांसद महेश कश्यप ने डा.अंबेडकर की प्रतिमा में माल्यार्पण कर किया नमन

जगदलपुर (विश्व परिवार)। भारत रत्न बाबा साहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर की जयंती के अवसर पर आज सोमवार को भारतीय जनता पार्टी ने उनका पुण्य स्मरण किया व श्रद्धा सुमन अर्पित किये। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष किरण सिंह देव व बस्तर सांसद महेश कश्यप ने आज सुबह कार्यकर्ताओं के साथ शहर के अंबेडकर वार्ड में तिरंगा चौक एवं चंद्रशेखर वार्ड में लाल बाग मैदान में स्थित डा. अंबेडकर की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर उन्हें नमन किया।

इस मौके पर भाजपा प्रदेश अध्यक्ष किरण सिंह देव ने कहा कि सामाजिक न्याय, समानता और संविधान निर्माण में भारत रत्न बाबा साहेब के अमर योगदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता। बाबा साहेब का संपूर्ण जीवन हम सभी के लिए प्रेरणा का स्रोत है। वे महान समाज सुधारक, विधिवेता और संविधान निर्माता थे। उन्होंने जीवन भर सामाजिक भेदभाव, छुआछूत और असमानता के विरुद्ध संघर्ष किया और समता, स्वतंत्रता और बंधुत्व पर आधारित समाज की नींव रखी। बस्तर सांसद महेश कश्यप ने कहा कि डा. भीमराव अंबेडकर संविधान के निर्माता थे। देश के प्रति उनके योगदान को हमेशा याद रखा जायेगा। उनकी जयंती के अवसर पर हम सभी श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं।

इस अवसर पर प्रमुख रूप से भाजपा जिला अध्यक्ष वेदप्रकाश पाण्डेय,महापौर संजय पाण्डेय, निगम अध्यक्ष खेमसिंह देवांगन, योगेन्द्र पाण्डेय, नरसिंह राव, रजनीश पाणिग्रही, सुरेश गुप्ता,नगर मण्डल प्रकाश झा, मनोहर तिवारी, आलोक अवस्थी, सुधा मिश्रा,अविनाश श्रीवास्तव, सफीरा साहू,निर्मल पाणिग्रही,संग्राम सिंह राणा, राणा घोष, लक्ष्मण झा, आशा साहू, त्रिवेणी रंधारी, गिरजा गुप्ता, बसंती समरथ, संतोष गौर, श्याम सुंदर बघेल,खगेंद्र ठाकुर, पूनम सिन्हा, संजय विश्वकर्मा, पितामह नायक,राजपाल कसेर, रंजीत पाण्डेय, बी जयराम, शशिनाथ पाठक, केतन महानंदी,शैलेष श्रीवास्तव, आलेख राज तिवारी, लक्ष्मी कश्यप, किरण दीवान, अमित मेहरा, राजेश साव, रीना राय, सुजाता डहरिया इत्यादि सहित बड़ी संख्या में कार्यकर्ता व नागरिक मौजूद रहे।

रंग लाई सांसद की पहल, अब बस्तर को मिलेगा इंद्रावती से उसके हिस्से का 49 फिसदी पानी

लोकसभा में सांसद महेश कैसे अपने उठाया था इंद्रावती जल संकट का मुद्दा

केंद्रीय मंत्री सी आर पाटिल की अध्यक्षता में राष्ट्रीय जल परिषद की बैठक में राज्य सरकार ने भी उठाया मुद्दा

जगदलपुर (विश्व परिवार)। विगत एक माह से बस्तर जिला जल संकट से जूझ रहा था इसका कारण बस्तर की प्राण दाहिनी इंद्रावती नदी का जल जोरा नाल में अधिक मात्रा में प्रवाहित होना था। इस वजह से बस्तर में इंद्रावती नदी सूखने के कगार पर पहुंच गई थी और किसने की खड़ी फसल चौपट हो गई थी किसानों के संकट को देखते हुए और इंद्रावती के जल संकट को देखकर बस्तर सांसद महेश कश्यप ने इस विषय को विगत 3 अप्रैल को लोकसभा में उठाया था।

इसके बाद केंद्र सरकार इस समस्या के निराकरण का आश्वासन दिया था। छत्तीसगढ़ सरकार ने भी इस मुद्दे पर अहम भूमिका निभाते हुए केंद्र सरकार को इंद्रावती जल संकट के विषय में अवगत कराया था।

इस मुद्दे पर रविवार को ओडिशा सरकार ने कदम उठाते हुए छत्तीसगढ़ के हिस्से का 49 फीसदी पानी प्रदान करने का आश्वासन दिया है इस संदर्भ में उड़ीसा सरकार ने जोरा नाला एनीकेट में लगाई गई बोरियों को भी हटाया है,जिससे बस्तर की इंद्रावती नदी में जल का प्रवाह बढ़ा है। ज्ञात रहे की बस्तर अंचल के किसानों ने सांसद महेश कश्यप से मिलकर इंद्रावती जल संकट के विषय में गुहार लगाई थी इसके बाद सांसद महेश कश्यप प्रशासनिक स्तर पर इस समस्या के निदान का प्रयास कर रहे थे और लोकसभा में भी इस विषय को उठाया था। बस्तर सांसद और छत्तीसगढ़ सरकार के संयुक्त प्रयास से आने वाले समय में इंद्रावती में जल संकट ना हो इसके लिए नदी में साढ़े तीन करोड़ की लागत से इंद्रावती-जोरानाला के अपस्ट्रीम एवं डाउनस्ट्रीम में जमा सिल्ट,लूज बोल्डर,पत्थर,रेत की बोरी,मिट्टी इत्यादि को स्थाई रूप से नदी से बाहर करने हेतु उड़ीसा राज्य के द्वारा तैयारी किया जा रहा है जिससे पानी का बहाव नैसर्गिक तरीके से होता रहेगा एवं छत्तीसगढ़ राज्य को अपने हिस्से का 50 प्रतिशत पानी मिलना शुरू होगा। इस पर आने वाला खर्च भी उड़ीसा सरकार देगी। स्वीकृति मिलने के बाद एजेंसी तय कर जून 2025 तक कार्य पूरा करने का लक्ष्य रखा गया है।

जिला स्तरीय परीक्षा पर्व आयोजित किया गया

मोहला। राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग द्वारा प्रायोजित परीक्षा पर्व का जिला स्तरीय आयोजन शासकीय कन्या शिक्षा परिसर में आज आयोजित किया गया। कलेक्टर श्रीमती तुलिका प्रजापति के दिशा निर्देशन एवं जिला शिक्षा अधिकारी फत्ते राम कोसरिया की अध्यक्षता में विद्यार्थियों में परीक्षा के तनाव को कैसे कम किया जाए, विषय पर परीक्षा पर्व कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें जिले भर के 246 शैक्षिक समन्वयक, प्राचार्य, व्याख्याता एवं पालकों ने सहभागिता दी। विद्यार्थियों में परीक्षा का तनाव कम करने के लिए बालक, शिक्षक एवं पालक तीनों की भूमिका एवं संयुक्त प्रयास पर आधारित 28 मंत्र विद्यार्थियों के लिए एवं पालकों के लिए 6 मंत्रों पर धर्मेन्द्र प्रसाद सारस्वत ने विस्तार से चर्चा की। कार्यशाला में शिक्षकों एवं पालकों ने भी अपने विचार व्यक्त किये। परीक्षा पर्व के इस अवसर पर विकासखंड शिक्षा अधिकारी श्याम कुमार धीवर, स्रोत समन्वय संतोष पाण्डे, खोमलाल वर्मा एवं जाहिदा खान उपस्थिति रहे। शासकीय कन्या शिक्षा परिसर अंबागढ़ चौकी के प्राचार्य पुरुषोत्तम लाल साहू ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

दरभा क्षेत्र के ग्राम पंचायत मामड़पाल में जल संसाधन विभाग द्वारा 485.60 लाख रुपये की लागत से नहर एवं 53 नग स्ट्रक्चर निर्माण कार्य का भूमि पूजन संपन्न

जगदलपुर (विश्व परिवार)। आज ग्राम पंचायत मामड़पाल में जल संसाधन विभाग के अंतर्गत नहर निर्माण तथा 53 नग नहर स्ट्रक्चर निर्माण कार्य का भूमि पूजन समारोह सम्पन्न हुआ। यह कार्य कुल 485.60 लाख रुपये की अनुमानित लागत से किया जा रहा है। इस अवसर पर क्षेत्रीय विधायक एवं लोकप्रिय जनप्रतिनिधि श्री विनायक गोयल जी (चित्रकोट विधायक) मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। उनके करकमलों से भूमि पूजन कर कार्य का शुभारंभ हुआ। कार्यक्रम में ग्रामवासियों सहित जनप्रतिनिधियों, विभागीय अधिकारियों एवं बड़ी संख्या में आमजन की उपस्थिति रही। श्री गोयल जी ने अपने संबोधन में कहा कि यह परियोजना क्षेत्र की सिंचाई व्यवस्था को सुदृढ़ करेगी और किसानों को जल संकट से राहत दिलाएगी। उन्होंने यह भी कहा कि क्षेत्र के सर्वांगीण विकास हेतु राज्य सरकार प्रतिबद्ध है और ऐसी योजनाओं से ग्रामीणों को सीधा लाभ मिलेगा। ग्रामवासियों ने इस पहल के लिए विधायक श्री विनायक गोयल जी का आभार व्यक्त किया और भविष्य में भी इसी प्रकार के विकास कार्यों की अपेक्षा जताई। इस अवसर पर चित्रकोट विधायक विनायक गोयल जी, जिला पंचायत उपाध्यक्ष बलदेव मण्डावी जी, जिला पंचायत सदस्य श्रीमती सम्पत्ति नाग, पूर्व जिला पंचायत सदस्य रैतु राम बघेल, जनपद अध्यक्ष श्रीमती मानकदेई कश्यप, जनपद उपाध्यक्ष हरि प्रसाद कश्यप, श्री कमलु कवासी, सरपंच श्रीमती सुकड़ी पोडियामी, जिला उपाध्यक्ष संतोष बघेल, मण्डल अध्यक्ष देवीप्रसाद वेंजाम, सुनिल कुहरामी, पूर्व मण्डल अध्यक्ष फुलसिह सेठिया, महादेव कवासी, दुर्जन सिंह कश्यप, नारायण कुरानी, महादेव नाग, नरेश कापडे, एवं अन्य जनप्रतिनिधि कार्यकर्ता गण उपस्थित रहे।

समाज प्रमुखों का शॉल भेंटकर हुआ सम्मान, डॉ. भीमराव अम्बेडकर जयंती पर सामाजिक समरसता दिवस का आयोजन

गरियाबंद (विश्व परिवार)। भारत रत्न डॉ. भीमराव अम्बेडकर की जयंती के अवसर पर गरियाबंद जिले में सामाजिक समरसता दिवस के रूप में जिला स्तरीय कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का आयोजन जिला पंचायत सभाकक्ष में किया गया, जहाँ अतिथियों ने अम्बेडकर जी के छायाचित्र पर पुष्पांजलि अर्पित कर उन्हें श्रद्धांजलि दी। कार्यक्रम में मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय एवं उप मुख्यमंत्री विजय शर्मा का वर्चुअल उद्बोधन भी प्रसारित किया गया।

मुख्य अतिथि राजिम विधायक रोहित साहू ने संविधान निर्माता बाबा साहब को नमन करते हुए उनके विचारों को जीवन में आत्मसात करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि डॉ. अम्बेडकर के दिखाए मार्ग पर चलकर ही भारत तरक्की की राह पर अग्रसर है। इस अवसर पर विधायक साहू ने जल संरक्षण की शपथ लेते हुए हस्ताक्षरयुक्त शपथ पत्र कलेक्टर दीपक अग्रवाल को सौंपा।

कार्यक्रम के दौरान संविधान की प्रस्तावना का सामूहिक वाचन किया गया और समाज

के विभिन्न प्रमुखों को शॉल भेंटकर सम्मानित किया गया। साथ ही 'अटल पंचायत डिजिटल सुविधा केंद्र' की दिशा में बड़ी पहल करते हुए प्रत्येक विकासखंड की 10-10 ग्राम पंचायतों के सरपंचों एवं वीएलई प्रतिनिधियों के मध्य एमओयू का आदान-प्रदान किया गया। इस पहल के तहत ग्रामीणों को डिजीटल माध्यम से सरकारी सेवाएं, बैंकिंग, शैक्षणिक सुविधाएं, पीएम किसान, आयुष्मान कार्ड, ई-श्रम पंजीकरण जैसी सेवाएं सुलभ दरों पर अथवा नि:शुल्क प्राप्त होंगी। इसका औपचारिक शुभारंभ आगामी 24 अप्रैल को पंचायत राज दिवस पर होगा। वहीं, प्रधानमंत्री आवास योजना-ग्रामीण अंतर्गत 'आवास प्लस 2.0' सर्वेक्षण के तहत 15 से 30 अप्रैल तक विशेष अभियान चलाया जाएगा, जिससे कोई भी पात्र परिवार योजना से वंचित न रहे।

कार्यक्रम में भू-जल स्तर पर चिंता व्यक्त करते हुए जल संरक्षण के महत्व पर जोर दिया गया। विधायक रोहित साहू व कलेक्टर दीपक अग्रवाल ने 34 ग्राम पंचायतों में रेन वॉटर हार्वेस्टिंग कार्य प्रारंभ करने की जानकारी दी और उपस्थित नागरिकों को जल संरक्षण की शपथ दिलाई।

इस मौके पर जिला पंचायत अध्यक्ष गौरीशंकर कश्यप, सीईओ जी.आर. मरकाम, अपर कलेक्टर नवीन भगत, पंचायत उप संचालक के.एस. नागेश सहित अनेक जनप्रतिनिधि, अधिकारी, समाजसेवी व नागरिक बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

व्यापार समाचार

वैश्विक टेक्नोलॉजी विकास के लिए ग्लोबल हब के रूप में उभर रहा भारत !

नई दिल्ली(एजेंसी)। दिग्गज विशेषज्ञों ने शुक्रवार को कहा कि भारत तेजी से वैश्विक प्रौद्योगिकी विकास के लिए एक सेंट्रल हब बन रहा है। ग्लोबल टेक्नोलॉजी समिट के अवसर पर आईएएनएस से बातचीत में एक्सपर्ट्स ने टेक्नोलॉजी के भविष्य को आकार देने में अंतरराष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देने से लेकर डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर (डीपीआई) में इनोवेशन को लेकर भारत की भूमिका उजागर की। साइबर अफेयर्स और क्रिटिकल टेक्नोलॉजी के लिए ऑस्ट्रेलिया के राजदूत ब्रेंडन डॉवलिंग ने भारत की मेजबानी की सराहना की। इसे उन्होंने एक प्रमुख वैश्विक कार्यक्रम बताया। उन्होंने कहा कि यह समिट नीति निर्माताओं, उद्योग जगत के नेताओं और थिंक टैंकों को टेक्नोलॉजी और भू-राजनीति के बीच गहरे अंतर-संबंध पर चर्चा करने के लिए एक साथ लाता है। उन्होंने आईएएनएस से कहा, मुझे लगता है कि यह समिट वास्तव में एक प्रमुख वैश्विक आयोजन बन गया है। यह नीति निर्माताओं और उद्योग थिंक टैंकों को भू-राजनीति और टेक्नोलॉजी के बारे में बात करने के लिए एक साथ लाता है। उनके अनुसार, टेक्नोलॉजी अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा और समृद्धि के मूल में है और भारत का कुशल आईसीटी वर्कफोर्स और संपन्न सॉफ्टवेयर उद्योग इसे वैश्विक तकनीकी क्षमताओं को आगे बढ़ाने में एक आवश्यक भागीदार बनाता है। उन्होंने ऑस्ट्रेलिया और भारत के लिए एक मजबूत द्विपक्षीय टेक्नोलॉजी साझेदारी बनाने के अवसर पर भी जोर दिया और दोनों देशों की पूरक शक्तियों पर प्रकाश डाला। स्वीडिश प्रधानमंत्री कार्यालय के वरिष्ठ निदेशक जॉन साइमनसन ने तकनीकी प्रगति में सहयोग के महत्व को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि अधिकांश नई टेक्नोलॉजी को अलग कर विकसित नहीं किया जा सकता, बल्कि इसके लिए देशों, उद्योगों, शिक्षाविदों और सार्वजनिक संस्थानों के बीच संयुक्त प्रयासों की आवश्यकता होती है। उन्होंने समिट को एक बेहतरीन मंच बताते हुए कहा कि यह मंच साझा समझ, सहयोगात्मक कार्रवाई और यहां तक कि संयुक्त तकनीकी परियोजनाओं के निर्माण का अवसर प्रदान करता है। यूरोपियन काउंसिल ऑन फॉरेन रिलेशंस में एशिया कार्यक्रम की निदेशक और वरिष्ठ नीति फेलो जानका ओर्टेल ने भारत के समावेशी दृष्टिकोण, विशेष रूप से ग्लोबल साउथ, यूरोप और संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ इसके जुड़ाव की सराहना की। उन्होंने समिट को उभरती टेक्नोलॉजी से उत्पन्न चुनौतियों पर चर्चा करने के लिए एक महत्वपूर्ण स्थान के रूप में उजागर किया। उन्होंने आईएएनएस को बताया, भारत ने विशेष रूप से डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर के क्षेत्र में एक महत्वाकांक्षी एजेंडा तैयार किया है और यह गति भारत, यूरोप और दूसरे क्षेत्रों के बीच सार्थक सहयोग को जन्म दे सकती है।

पृथ्वी तिवारी और संचिता बनर्जी पहली बार एक साथ फ़िल्मी पर्दे पर गुम है किसी के प्यार में !

कुशीनगर ! भोजपुरी फिल्म उद्योग के उत्थान के लिए उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा प्रोत्साहित किये जाने के फल स्वरूप कुशीनगर में भोजपुरी फिल्म गुम है किसी के प्यार में की शूटिंग शुरू पगरा पड़री गांव में ग्राम प्रधान पप्पू कुशवाहा के घर पूजा पाठ के साथ पूरे विधि विधान से शुरू किया गया। भोजपुरी सितारों से भरे इस फ़िल्म के निर्देशक संदीप मिश्रा ने बताया कि भोजपुरी फिल्म गुम है किसी के प्यार में जो फिल्म जगत के इतिहास में मील का पत्थर साबित होंगी। यह दर्शकों को खूब पसंद आएगी। बताते चले क़ी इसके पूर्व भी ये कई शानदार फिल्मों का निर्देशन कर चुके है। कुशीनगर के तमकुही विकास खंड के गांव पगारा बसंतपुर निवासी संदीप मिश्रा ने बताया कि लक्स एंटरटेनमेंट के बैनर तले बनने वाली यह फिल्म पुरी तरह से पारिवारिक एवं दर्शकों में रोमांच पैदा करने वाली है साउथ की लगभग 10 फिल्मों में काम कर चुके अभिनेता पृथ्वी तिवारी फिल्म मे मुख्य भूमिका निभा रहे है तथा संचिता बनर्जी,संजुक्ता राय,मनोज सिंह टाइगर,साहब लाल धारी,प्रमोद पांडे,चेतन सिंह,अंशु तिवारी, रमेश यादव, मनमोहन मिश्रा ,अंशु तिवारी आदि प्रमुख भूमिका में है। इस फिल्म में अभिनेता पृथ्वी तिवारी और संचिता बनर्जी पहली बार एक साथ फ़िल्मी पर्दे पर अभिनय करते नज़र आयगे ,पृथ्वी तिवारी ने बताया की भोजपुरी फिल्मो में काम मेरा सपना था यह सपना सच होते नज़र आ रहा है वैसे तो मै भोजपुरी में कई वीडियो गाने कर चूका हु पर जिस में कई गाने को मिलियन व्यू मिल चुके है समर सिंह की आवाज में भोजपुरी एक्ट्रेस पक्खी हेगड़े के साथ मै हॉल ही में एक गाना शूट किया था जो काफी लोगो ने पसंद किया। मै भोजपुरी को और आगे ले जाना चाहता हु जिस से फिल्म जगत में सभी लोगो रोजगार मिले। फिल्म मै आज कल कुशीनगर में इस फिल्म की शूटिंग कर रहा हु मुझे यहाँ शूट करके बहुत अच्छा लग रहा है यहाँ के ग्रामीर लोग बहुत प्यारे है और मुझे बहुत अपना प्यार दे रहे है। इस फिल्म मे कथा संदीप मिश्रा,पटकथा और संवाद संजय तिवारी और चंदन सिंह, निर्देशक संदीप मिश्रा,छायांकन कृष्णा पांडे,एक्शन अशोक लाल यादव,गीतकार प्रमोद पांडे, रवि राज दीपू ,संगीतकार मधुकर आनंद प्रचारक संजय भूषण पटियाला ,सह निर्देशक संजय तिवारी, विशाल शर्मा व करिश्मा यादव है। गुम है किसी के प्यार में फ़िल्म का संगीत प्रसिद्ध संगीतकार मधुकर आनंद ने दिया है। फिल्म की शूटिंग कुशीनगर जनपद के विभिन्न क्षेत्रों में चल रही है । शूटिंग देखने के लिए लोगों का भारी भीड़ उमड़ पड़ रहा है।

मोहन बागान ने जीता आईएसएल का खिताब

फाइनल में बेंगलुरु एफसी को 2-1 से हराया

कोलकाता(एजेंसी)। मोहन बागान सुपर जायंट ने इंडियन सुपर लीग 2024-25 का खिताब अपने नाम किया. शनिवार को साल्ट लेक स्टेडियम में खेले गए फाइनल में बेंगलुरु एफसी पर 2-1 से जीत दर्ज की. जेमी मैकलारेन के एक्स्ट्रा टाइम के विजयी गोल ने खेल में अंतर पैदा किया और मोहन बागान को आईएसएल चैंपियन बना दिया. एक्स्ट्रा टाइम तक चले इस मुकाबले में मेजबान टीम की जीत में ऑस्ट्रेलियाई अटैकिंग मिडफील्डर जैसन कमिंग्स ने (पेनल्टी किक पर) 72वें मिनट और ऑस्ट्रेलियाई स्ट्राइकर जिमी मैक्लारेन ने 96वें मिनट में गोल दागे. मैच का निर्णायक गोल करने के लिए ऑस्ट्रेलियाई स्ट्राइकर जिमी मैक्लारेन को प्लेयर ऑफ द मैच घोषित किया गया. गोल्डन बूट का अवार्ड नॉर्थईस्ट यूनाइटेड के मोरोक्कन स्ट्राइकर अलाएद्दीन अजाराय (23 गोल, 7 असिस्ट) ने जीता. जबकि गोल्डन ग्लव्स अवार्ड मोहन बागान सुपर जायंट के गोलकीपर विशाल कैथ (15 क्लीन शीट, 74 बचाव) को दिया गया. इस खिताबी जीत के साथ ही मोहन बागान सुपर जायंट, मुंबई सिटी एफसी (2020-21 सीजन) के बाद लीग इतिहास में एक ही सीजन में लीग शील्ड और इंडियन सुपर लीग कप जीतने वाली दूसरी फुटबॉल टीम बन गई है. इससे स्पेनिश हेड कोच जोस मोलिना निश्चित रूप से खुश होंगे, क्योंकि उन्होंने दूसरी बार अपना लक्ष्य हासिल किया है। मोलिना ने 2016 में मोहन बागान के पूर्व एटीके को चैंपियन बनाया था. मोहन बागान अपने होम ग्राउंड में आईएसएल फाइनल जीतने वाली पहली टीम बन गई है, वो पूरे आईएसएल सीजन के लिए घरेलू मैदान पर अपराजित रहने वाली चौथी टीम भी हैं. इसे पहले 2023-24 में ओडिशा एफसी, 2018-19 में बेंगलुरू एफसी और 2016 में दिल्ली डायनामोज एफसी अपने-अपने होम ग्राउंड पर अपराजित रहीं थी.

भारत ने रचा इतिहास, ज्योति-ऋषभ की जोड़ी ने तीरंदाजी वर्ल्ड कप स्टेज 1 में जीता गोल्ड मेडल

ऑबर्नडेल (यूएसए)(एजेंसी)। कंपाउंड तीरंदाजी को 2028 लॉस एंजिल्स ओलंपिक खेलों में शामिल किए जाने के कुछ दिनों बाद, ज्योति सुरेखा वेन्नम और ऋषभ यादव की भारतीय टीम ने शनिवार को अमेरिका के फ्लोरिडा में 2025 तीरंदाजी विश्व कप स्टेज 1 में कंपाउंड मिक्स्ड टीम स्पर्धा में गोल्ड मेडल जीता. यह 2025 तीरंदाजी विश्व कप का पहला कंपाउंड मिक्स्ड टीम पदक मैच था. भारतीय टीम ने शनिवार सुबह कड़े मुकाबले में गोल्ड मेडल के लिए हुए मैच में चीनी ताइपे की हुआंग आई-जौ और चेन चिएन-लुन की जोड़ी को 153-151 से हराया. पूर्व विश्व कप विजेता ज्योति सुरेखा और ऋषभ की भारतीय जोड़ी ने पहला एंड हारने के बाद वापसी की, जिसमें प्रत्येक तीरंदाज ने 2 तीर (मिश्रित युगल के मामले में कुल 4) चलाए, 37-38 के स्कोर के साथ वे 9 और दो 10 के दो स्कोर बनाने में सफल रहे. उनके प्रतिद्वंद्वियों ने दो 9 और आंतरिक 10 सर्कल (एक्स) में तीर चलाए. भारतीयों ने दूसरा एंड 38-39 से गंवा दिया और कुल मिलाकर 75-77 से पीछे चल रहे थे, तीन 10 स्कोर करने के बावजूद 8 के स्कोर ने उन्हें पीछे कर दिया. चीनी ताइपे की जोड़ी ने एंड जीतने के लिए एक्स, 10, 10, एक्स शॉट लगाए.

अभिषेक शर्मा के तूफान में उड़ा पंजाब, लगातार चार हार के बाद हैदराबाद ने दर्ज की रिकार्ड जीत

हैदराबाद(एजेंसी)। आईपीएल 2025 का 27 वां मैच सनराइजर्स हैदराबाद और पंजाब किंग्स के बीच हैदराबाद के राजीव गांधी इंटरनेशनल स्टेडियम में खेला गया. जिस को हैदराबाद ने 8 विकेट से अपने नाम कर लिया है. लगातार चार हार के बाद ये एसआरएच की दूसरी जीत है. 246 रनों के विशाल लक्ष्य को अभिषेक शर्मा के 141 रन और हेड के 66 रनों ने टारगेट को आसान बना दिया और 18.3 ओवर में ही 2 विकेट खोकर लक्ष्य को हासिल कर लिया, जो लीग के इतिहास में दूसरा सबसे बड़ा सफल रन चेज बन गया. इस रिकॉर्ड-तोड़ जीत के सूत्रधार विस्फोटक अभिषेक शर्मा थे, जिन्होंने 55 गेंदों पर अपने करियर की सर्वश्रेष्ठ 141 रनों की पारी खेली. अभिषेक ने इस मैच से पहले टूर्नामेंट में एक भी छक्का नहीं लगाया था, लेकिन इस मैच में 14 चौके और 10 छक्के जड़ दिए. अभिषेक का शतक न केवल आईपीएल में उनका पहला शतक था, बल्कि उन्होंने सिर्फ 40 गेंदों में शतक बनाया, जो टूर्नामेंट के इतिहास में पांचवां सबसे तेज शतक है. अपने शतक का जश्न मनाते हुए अभिषेक ने अपना बल्ला उठाया और जेब से एक मुड़ा हुआ सफेद कागज निकाला - जिस पर लिखा था यह ऑरेंज आर्मी के लिए है वहीं हेड ने दूसरे छोर से गैप ढूंढते हुए, स्ट्राइक रोटेट करते हुए और कभी-कभी गलत गेंदों को दंडित करते हुए अपनी भूमिका निभाई.

दिल्ली में धूल भरी आंधी का कहर, उड़ानों पर दूसरे दिन भी असर; एयर-इंडिया ने जारी की एडवाइजरी

नई दिल्ली(एजेंसी)। राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली और आसपास के क्षेत्रों में शुक्रवार को आई भीषण धूल भरी आंधी का प्रभाव शनिवार को भी बरकरार रहा। खराब मौसम के कारण इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे (आईजीआई एयरपोर्ट) पर उड़ानों का संचालन बुरी तरह प्रभावित हुआ। कई विमानों को डायवर्ट करना पड़ा, कुछ रद्द कर दी गईं और दर्जनों उड़ानों में देरी हुई। इन हालातों को देखते हुए, एयर इंडिया ने शनिवार को एक यात्रा परामर्श जारी कर यात्रियों को सतर्क रहने की सलाह दी है। एयरलाइन ने आशंका जताई है कि शनिवार शाम 5ः30 बजे से रात 9ः00 बजे तक फिर से धूल भरी हवाएं चल सकती हैं, जिससे उड़ानों के संचालन में और बाधा आ सकती है। एयर इंडिया ने अपने आधिकारिक बयान में कहा है कि कल की तरह आज भी मौसम की प्रतिकूल परिस्थितियां उड़ानों को अन्यत्र मोड़ने, उनमें विलंब और हवाई यातायात में भीड़ का कारण बन सकती हैं। इसका असर उड़ानों के समय-सारणी पर भी पड़ सकता है। एयरलाइन ने बताया कि उनकी टीमें स्थिति को सामान्य करने और यात्रियों को कम से कम असुविधा हो, इसके लिए लगातार प्रयासरत हैं। एयर इंडिया ने यात्रियों को सलाह दी है कि वे अपनी उड़ानों की नवीनतम स्थिति के बारे में एयर इंडिया की वेबसाइट के माध्यम से जानकारी प्राप्त करते रहें। साथ ही, खराब मौसम के कारण जमीनी संचालन भी प्रभावित हो सकता है, इसलिए यात्रियों को हवाई अड्डे के लिए अतिरिक्त समय लेकर निकलने की सलाह दी गई है। एयर इंडिया ने यात्रियों को हुई असुविधा के लिए खेद व्यक्त करते हुए कहा कि उनकी सर्वोच्च प्राथमिकता यात्रियों की सुरक्षा है और इस दिशा में सभी आवश्यक कदम उठाए जा रहे हैं। गौरतलब है कि शुक्रवार शाम दिल्ली और आसपास के इलाकों में आई तेज धूल भरी आंधी ने आईजीआई एयरपोर्ट पर हवाई सेवाओं को गंभीर रूप से बाधित कर दिया था। इस तूफान के चलते शनिवार सुबह तक 50 से अधिक घरेलू उड़ानों में देरी हुई, लगभग 25 उड़ानों को उनके निर्धारित गंतव्य से हटाकर दूसरे हवाई अड्डों पर उतारा गया और कई उड़ानों को रद्द भी करना पड़ा था। धूल भरी आंधी के कारण दिल्ली आने वाले कई विमानों को अन्य हवाई अड्डों की ओर मोड़ दिया गया था।

यूपीआई सर्वर फिर डाउन, देशभर में हजारों यूजर्स के पेमेंट अटके

नई दिल्ली(एजेंसी) । देश के सबसे लोकप्रिय डिजिटल पेमेंट सिस्टम, यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस (क्कढ्ढ) में शनिवार को एक बार फिर तकनीकी खराबी आ गई। इस गड़बड़ी के कारण देशभर में हजारों यूजर्स को पेमेंट करने और पैसे ट्रांसफर करने में भारी दिक्कतों का सामना करना पड़ा। मिली जानकारी के अनुसार, शनिवार दोपहर को अचानक यूपीआई सेवाएं बाधित हो गईं। इसका असर गूगल पे (त्रशशद्दद्यद्ग क्कड्ड4), फोनपे (क्कद्धशठ्ठद्गक्कद्ग), और पेटीएम (क्कड्ड4ह्लद्व) समेत लगभग सभी प्रमुख यूपीआई ऐप्स पर देखने को मिला। यूजर्स ने शिकायत की कि वे न तो किसी को पैसे भेज पा रहे हैं और न ही पेमेंट प्राप्त कर पा रहे हैं। आउटेज को ट्रैक करने वाली वेबसाइट डाउनडिटेक्टर पर भी यूपीआई डाउन होने की शिकायतों का अंबार लग गया। रिपोर्ट के मुताबिक, दोपहर 12 बजे तक ही यूपीआई में समस्या की शिकायत करने वाले यूजर्स की संख्या 1,000 के आंकड़े को पार कर गई थी। परेशान यूजर्स ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स, खासकर ट्विटर (ङ्ग), पर भी अपनी भड़ास निकाली। कई लोगों ने पेमेंट फेल होने के स्क्रीनशॉट साझा किए और संबंधित बैंकों तथा ह्रक्कष्टढ्ढ (नेशनल पेमेंट्स कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया) से जल्द समाधान की मांग की। गौरतलब है कि यह पहली बार नहीं है जब यूपीआई सिस्टम में इस तरह की दिक्कत आई है। कुछ ही दिन पहले भी यूपीआई सेवाएं अचानक ठप हो गई थीं, जिससे लाखों यूजर्स प्रभावित हुए थे और घंटों तक कोई भी यूपीआई ट्रांजैक्शन नहीं कर पा रहे थे। बार-बार हो रही ऐसी घटनाओं ने यूपीआई सिस्टम की विश्वसनीयता पर सवाल खड़े कर दिए हैं।

खनि निरीक्षक बनने हमर पीएससी संस्थान में चयनित प्रतिभागी देंगे मार्गदर्शन

एकाग्रता और सतत लगन ही सफलता की असली कुंजी है : लाखेश्वर वर्मा

बड़ी संख्या में प्रतिभागियों ने लिया सेमिनार में भाग

हाइब्रिड मोड में होंगी कक्षाएं

रायपुर । आज हमर पीएससी संस्थान में करियर पावर और अड्डा (स्नस्रड्ड) 24*7 द्वारा खनि. निरीक्षक परीक्षा की तैयारी कर रहे प्रतिभागियों के लिए फ्रीट द टॉपर्स ग्रैंड सेमिनार का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विभिन्न वर्षों के चयनित अधिकारीगण विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित रहे और उन्होंने अपने अनुभव व रणनीतियां साझा कीं। सेमिनार का उद्देश्य प्रतिभागियों को खनि. निरीक्षक की परीक्षा की तैयारी के लिए मार्गदर्शन प्रदान करना और उन्हें सफलता की सही दिशा में प्रेरित करना था। अतिथिओं ने पाठ्यक्रम, समय प्रबंधन, मॉक टेस्ट की उपयोगिता तथा कठिन विषयों से निपटने की तकनीकों पर भी प्रकाश डाला। मुख्य वक्ताओं में टॉपर दीपक आनंद (खनि. अधिकारी रैंक 1, 2022 बैच), दीपक तिवारी (खनि. अधिकारी रैंक 1, 2014 बैच), नीरज शर्मा (खनि. निरीक्षक रैंक 2, 2014 बैच), बबलू पांडे (खनि. निरीक्षक रैंक 3, 2014 बैच), देवेंद्र साहू (खनि. निरीक्षक 2014 बैच) शामिल रहे।

संस्था के डायरेक्टर श्री लाखेश्वर वर्मा ने सेमिनार के दौरान कहा, हमारा उद्देश्य केवल परीक्षार्थियों को कोचिंग देना नहीं, बल्कि उन्हें एक ऐसा मंच उपलब्ध कराना है जहां वे सीधे चयनित अधिकारियों से मार्गदर्शन प्राप्त कर सकें। हमारे अनुभव में यही मार्गदर्शन युवाओं को सही दिशा और प्रेरणा देता है। प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता केवल पढ़ाई से नहीं, बल्कि सही रणनीति, आत्मविश्वास और मार्गदर्शक से मिलती है। संस्थान की पहली प्राथमिकता है कि हर प्रतिभागियों को उचित संसाधन, वातावरण और प्रेरणा दी जाए, जिससे वह अपने लक्ष्य को हासिल कर सके।

अधिक जानकारी के लिए प्रतिभागी संस्थान में आकर या मोबाइल नंबर 8982669996 पर संपर्क कर सकते हैं।

दैनिक
विश्व परिवार
महानगर

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

रायपुर, मंगलवार 15 अप्रैल 2025

मृत बालक दिव्यांश के परिवारजनों को मिली 4 लाख रुपए की आर्थिक सहायता

रायपुर (विसं)। मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय द्वारा रायपुर के गुलमोहर पार्क पीएमवाय कॉलोनी में विगत दिवस हुई आकस्मिक दुर्घटना में मृत बालक दिव्यांश के शोकसंतप्त परिवारजनों को तत्काल 4 लाख रुपये आर्थिक सहायता देने के निर्देश पर परिवारजनों को तत्काल सहायता राशि दी गई। मुख्यमंत्री के आदेश पर रायपुर जिला प्रशासन और रायपुर नगर पालिक निगम के अधिकारी, स्वास्थ्य विभाग के चिकित्सकों के साथ सतत संपर्क बनाकर आकस्मिक घटना के तत्काल पश्चात अस्पताल में स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कर रहे दो अन्य बालकों की स्थिति पर निगरानी रखे हुए हैं। दोनों बालकों का स्वास्थ्य निरंतर सुधर रहा है। चिकित्सक गण लगातार दोनों बालकों के स्वास्थ्य की सतत मॉनिटरिंग कर रहे हैं।

संक्षिप्त समाचार

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने डॉ. भीमराव अम्बेडकर की जयंती पर उन्हें किया नमन

रायपुर। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने आज अपने निवास कार्यालय में भारत रत्न डॉ. भीमराव अम्बेडकर की जयंती पर उनके छायाचित्र पर पुष्प अर्पित कर उन्हें श्रद्धापूर्वक नमन किया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि बाबा साहेब का संपूर्ण जीवन संघर्ष की अनुपम मिसाल है। उन्होंने कहा कि डॉ. अम्बेडकर ने हमें एक ऐसा संविधान दिया जो भारत को लोकतंत्र, समानता और न्याय की मजबूत नींव प्रदान करता है। मुख्यमंत्री ने बाबा साहब के विचारों को युगप्रेरक बताते हुए कहा कि आज का दिन हमें यह संकल्प लेने का अवसर देता है कि हम उनके आदर्शों पर चलें, और एक समावेशी, समतामूलक और न्यायप्रिय समाज के निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाएं।

महापौर चौबे ने रायपुर की सभी बीएसयूपी, पीएमवाय कॉलोनियों की सैप्टिक टैंक एवं सम्पवेल के मेनहोल को 24 घंटे के भीतर ढकने के दिए निर्देश

रायपुर (विश्व परिवार)। नगर पालिक निगम रायपुर की महापौर श्रीमती मीनल चौबे ने रायपुर शहर में स्थित सभी बीएसयू पी और

प्रधानमंत्री आवास योजना (पीएमवाय) की कॉलोनियों और अन्य निगम परिसर के सैप्टिक टैंक और सम्पवेल के मेनहोल को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए अगले 24 घण्टे के भीतर ढकने की आवश्यक कार्यवाही करने के निर्देश दिए हैं, ताकि भविष्य में कोई अप्रिय घटना ना हो. आयुक्त श्री विश्वदीप ने महापौर श्रीमती मीनल चौबे के निर्देश पर नगर निगम रायपुर के सभी 10 जोनों के जोन कमिश्नरों को अगले 24 घण्टे के भीतर रायपुर शहर में सभी बीएसयूपी और प्रधानमंत्री आवास योजना कॉलोनियों के सैप्टिक टैंक और सम्पवेल के मेनहोल को ढका जाना सुनिश्चित करने आदेशित किया है. आदेश दिए गए हैं कि 15वां वित्त आयोग की प्रगतिरत कार्य योजना के माध्यम से भी स्थल की आवश्यकता के अनुसार यह कार्य करवाया जा सकता है. ड्रेन कवर का कार्य करवाने स्थल पर इसकी साइज और लोकेशन अनुसार सूची की जानकारी अगले 24 घण्टे के भीतर सभी जोन कमिश्नर स्थल का स्थल का निरीक्षण कर भेजा जाना सुनिश्चित करें, ताकि ड्रेन कवर की उपलब्धता सुनिश्चित की जा सके.आयुक्त ने सभी जोन कमिश्नरों को महापौर के निर्देशानुसार उक्त कार्य को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए करवाने का आदेश दिया है, ताकि भविष्य में कोई अप्रिय स्थिति निर्मित न हो.

संविधान निर्माता डॉ. भीमराव अंबेडकर जी की जयंती पर सांसद बृजमोहन अग्रवाल ने दी श्रद्धांजलि

रायपुर (विश्व परिवार)। भारत रत्न, संविधान निर्माता डॉ. भीमराव अंबेडकर जी की जयंती के अवसर पर रायपुर सांसद श्री बृजमोहन अग्रवाल ने राजधानी रायपुर में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों में भाग लेकर बाबा साहब को श्रद्धांजलि अर्पित की। इस अवसर पर सांसद श्री अग्रवाल ने सबसे पहले मेकाहारा अस्पताल पहुंचकर मरीजों को फल वितरित किए और उनके शीघ्र स्वस्थ होने की कामना की। तत्पश्चात कलेक्ट्रेट चौक स्थित बाबा साहब डॉ. अंबेडकर की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर उन्हें नमन किया।

कार्यक्रम के दौरान अपने संबोधन में श्री बृजमोहन अग्रवाल ने कहा कि डॉ. बाबा साहब अंबेडकर का जीवन हमें यह सिखाता है कि समाज के सबसे कमजोर वर्गों की सेवा ही सच्चे लोकतंत्र की पहचान है। उन्होंने आगे कहा कि बाबा साहब का जीवन वंचितों, पीड़ितों और समाज के अंतिम पंक्ति के व्यक्ति के उत्थान के लिए समर्पित था। उनका मानना था कि जो समाज कमजोर की सेवा नहीं करता, वह अपने अधिकारों का भी सम्मान नहीं कर सकता। उन्होंने यह भी कहा कि भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने डॉ. बाबा साहब अंबेडकर को भारत रत्न देकर उन्हें यथोचित सम्मान दिया। आज यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में देश उनके आदर्शों पर चलते हुए सामाजिक न्याय और आत्मनिर्भर भारत के संकल्प की ओर तेजी से अग्रसर है। इस अवसर पर बड़ी संख्या में जनप्रतिनिधि, सामाजिक कार्यकर्ता और गणमान्यजन उपस्थित रहे।

एसईसीएल में भारत रत्न बाबा साहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर जी की 134वीं जयंती मनाई गई

बिलासपुर (विश्व परिवार)। 14 अप्रैल 2025 को एसईसीएल मुख्यालय में भारत रत्न बाबा साहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर की 134 वीं जयंती अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक श्री हरीश दुहन के मुख्य आतिथ्य, निदेशक तकनीकी (संचालन सह योजना-परियोजना) श्री एन. फ्रेंकलिन जयकुमार, निदेशक (मानव संसाधन) श्री बिरंची दास, मुख्य सतर्कता अधिकारी श्री हिमांशु जैन के विशिष्ट आतिथ्य, विभिन्न विभागाध्यक्षों, विभिन्न श्रमसंघ प्रतिनिधियों, एससी/एसटी एसोसिएशन, सिस्टा के पदाधिकारियों, अधिकारियों, कर्मचारियों, महिलाओं, बच्चों की उपस्थिति में मनाई गई।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक श्री हरीश दुहन ने अपने संबोधन में कहा ऐसे महामानव सदी में एक बार पैदा होते हैं। उन्होने सम्पूर्ण राष्ट्र, सर्व मानव समाज के लिए कार्य किया। उनके समाजोन्मुख सोच के परिणामस्वरूप भारतीय समाज में एक नयी चेतना का विस्तार हुआ, समाज में काफी सकारात्मक बदलाव आए। उनके जीवन से हमें यह भी शिक्षा मिलती है कि विपरीत परिस्थितियों में भी हमें सफलता के लिए रास्ता निकालना चाहिए। इस अवसर पर श्रम संघ प्रतिनिधि ने अपने सम्बोधन में भारत रत्न बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर के जीवन पर विस्तृत प्रकाश डालते हुए कार्यक्रम के आयोजन पर प्रबंधन को धन्यवाद ज्ञापित किया। प्रारंभ में मुख्य अतिथि ने गौतम बुद्ध एवं बाबा साहेब के चित्र के समीप दीप प्रज्जवलित कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया उपरांत गौतम बुद्ध एवं बाबा साहेब के चित्र पर मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथियों ने माल्यार्पण किया।

भीम आर्मी के प्रदेश उपाध्यक्ष मनोज बंजारे ने भारत रत्न बाबा साहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर की नवीन प्रतिमा का अनावरण किया

रायपुर (विश्व परिवार)। भारत रत्न बाबा साहेब डॉ भीमराव अंबेडकर जी की 135 वी जयंती पर ग्राम पंचायत माना बनरसी में बाबा साहेब की नवीन प्रतिमा के अनावरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर प्रसिद्ध समाजसेवी तथा भीम आर्मी के प्रदेश उपाध्यक्ष श्री मनोज बंजारे जी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। श्री बंजारे ने बाबा साहेब की प्रतिमा का अनावरण किया और पुष्प माला अर्पित की। वहां उपस्थित जनसमुदाय को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि बाबा साहेब का जीवन हर व्यक्ति के लिए अपने आप में प्रेरणा स्त्रोत है। हमें शिक्षा के महत्व को समझना होगा और समाज की उन्नति और प्रगति के लिए शत प्रतिशत शिक्षा का लक्ष्य बनाना होगा, ताकि हर वर्ग का विकास हो सके और कोई भी पीछे न रहे। बाबा साहेब के बताए मार्ग और आदर्शों पर चलकर ही हम उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि दे सकते हैं।

इस अवसर पर रायपुर जिला पंचायत के उपाध्यक्ष भाई संदीप यदु, भीम आर्मी प्रदेश सचिव संजू लेखराम गिलहरे जी, प्रगतिशील छत्तीसगढ़ सतनामी समाज के प्रदेश अध्यक्ष राजेंद्र तपहरी जी, खिलन प्रसाद साहू जी, पूर्व सरपंच सतनामी समाज अध्यक्ष राजेंद्र टोडर जी, हेमलाल गीत लहरे गेंदालाल कोसले पन्ना मधुकर हेमेंद्र जोशी ज्ञानू जोशी दूज लाल टंडन वितेश कोसले जितेंद्र कोसले घनश्याम दीदी महेश दीदी सुंदर ओगर दिलबर बंजारे फिलिप्स जांगड़े मनोज रामदास रवि टोडर नरेंद्र भाटपेरी मनोज बंजारे प्रकाश बंदे गंगाधर गिलहरे दुर्गा चेलक रामकुमार बंजारे आदि सैकड़ो लोग उपस्थित रहे।

शहीद भृगुनंदन चौधरी कीर्ति चक्र स्मृति टेनिस टूर्नामेंट सम्पन्न, विजेताओं को किया गया पुरस्कृत

आरंग (विश्व परिवार)। सोमवार को ग्रुप केंद्र, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल भिलाई में शहीद भृगुनंदन चौधरी कीर्ति चक्र स्मृति टेनिस टूर्नामेंट संपन्न हुआ। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि राकेश अग्रवाल भारतीय पुलिस सेवा महानिरीक्षक रहे। जिसमें राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ियों ने भाग लिया।वहीं छत्तीसगढ़ सेक्टर द्वारा सभी विजेता उपविजेता प्रतिभागियों, ग्राउंड स्टाफ, बॉल बाय, लाइन बाय इत्यादि को ट्राफी मेडल, व नगद राशि देकर पुरस्कृत किया गया।

वहीं मुख्य अतिथि ने शहीद भृगुनंदन चौधरी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए टेनिस टूर्नामेंट के सफल आयोजन हेतु अजय कुमार सिंह उपमहानिरीक्षक, ग्रुप केंद्र, केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल भिलाई रायपुर की भूरी भूरी प्रशंसा की एवं पूरे ग्रुप केंद्र के समस्त अधिकारी, कर्मचारीयों एवं अन्य कार्मिकों को बधाई दी। ज्ञात हो कि शहीद भृगुनंदन चौधरी केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के पहले कमांडो रहे हैं जिन्हें मरणोपरांत कीर्ति चक्र से नवाजा गया है। वह नक्सल विरोधी अभियान में अपनी सेवाएं देते हुए बिहार राज्य के गया जिले के चक्रबंधा जंगल में अपने प्राणों को राष्ट्र के नाम न्योछावर कर दिए थेद्ध मुख्य अतिथि महोदय ने भारत सरकार एवं केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के महानिदेशक के द्वारा शहीदों की स्मृति में किये जा रहे सार्थक प्रयासों की भी उन्मुक्त कंठ से प्रशंसा किए।इस अवसर पर सुशील बालानी ज्वांइट सेक्रेटरी छत्तीसगढ़ टेनिस एसोसिएशन, राजेश मिश्रा कोच, आरपीएम टेनिस एकेडमी, एस पी सिंह डीआईजी, ए के सिंह कमांडेंट छत्तीसगढ़ रायपुर, राधेश्याम सिंह कमांडेंट सहित बड़ी संख्या में जवान व उनके परिवार के सदस्यों व खिलाड़ियों की उपस्थिति रही।

खनि निरीक्षक बनने 'हमर पीएससी' संस्थान में चयनित प्रतिभागी देंगे मार्गदर्शन

एकाग्रता और सतत लगन ही सफलता की असली कुंजी है : लाखेश्वर वर्मा

बड़ी संख्या में प्रतिभागियों ने लिया सेमिनार में भाग, हाइब्रिड मोड में होंगी कक्षाएं

रायपुर (विश्व परिवार)। आज 'हमर पीएससी' संस्थान में करियर पावर और अड्डा (Adda) 247 द्वारा खनि. निरीक्षक परीक्षा की तैयारी कर रहे प्रतिभागियों के लिए 'मीट द टॉपर्स' ग्रैंड सेमिनार का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विभिन्न वर्षों के चयनित अधिकारीगण विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित रहे और उन्होंने अपने अनुभव व रणनीतियां साझा कीं। सेमिनार का उद्देश्य प्रतिभागियों को खनि. निरीक्षक की परीक्षा की तैयारी के लिए मार्गदर्शन प्रदान करना और उन्हें सफलता की सही दिशा में प्रेरित करना था। अतिथिओं ने पाठ्यक्रम, समय प्रबंधन, मॉक टेस्ट की उपयोगिता तथा कठिन विषयों से निपटने की तकनीकों पर भी प्रकाश डाला। मुख्य वक्ताओं में टॉपर दीपक आनंद (खनि. अधिकारी रैंक 1, 2022 बैच), दीपक तिवारी (खनि. अधिकारी रैंक 1, 2014 बैच), नीरज शर्मा (खनि. निरीक्षक रैंक 2, 2014 बैच), बबलू पांडे (खनि. निरीक्षक रैंक 3, 2014 बैच), देवेंद्र साहू (खनि. निरीक्षक 2014 बैच) शामिल रहे।

संस्था के डायरेक्टर श्री लाखेश्वर वर्मा ने सेमिनार के दौरान कहा, हमारा उद्देश्य केवल परीक्षार्थियों को कोचिंग देना नहीं, बल्कि उन्हें एक ऐसा मंच उपलब्ध कराना है जहां वे सीधे चयनित अधिकारियों से मार्गदर्शन प्राप्त कर सकें। हमारे अनुभव में यही मार्गदर्शन युवाओं को सही दिशा और प्रेरणा देता है। प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता केवल पढ़ाई से नहीं, बल्कि सही रणनीति, आत्मविश्वास और मार्गदर्शक से मिलती है। संस्थान की पहली प्राथमिकता है कि हर प्रतिभागियों को उचित संसाधन, वातावरण और प्रेरणा दी जाए, जिससे वह अपने लक्ष्य को हासिल कर सके।

अधिक जानकारी के लिए प्रतिभागी संस्थान में आकर या मोबाइल नंबर 8982669996 पर संपर्क कर सकते हैं।

छत्तीसगढ़ का बढ़ाया मान, आईपीएस भावना गुप्ता ने जीता ब्रॉन्ज मेडल

राज्य गठन के बाद पहली बार हुआ ऐसा

गौरेला पेंड्रा मरवाही (विसं)। केरल के कोच्चि में 11 से 14 अप्रैल 2025 तक चलने वाले इस टूर्नामेंट में अखिल भारतीय पुलिस बैडमिंटन एवं टेबल टेनिस टूर्नामेंट 2025 में छत्तीसगढ़ के लिए गर्व का क्षण सामने आया है। जिसमें गौरेला पेंड्रा मरवाही की पुलिस अधीक्षक भावना गुप्ता (IPS) ने महिला व्यक्तिगत एकल टेबल टेनिस प्रतियोगिता में मिजोरम पुलिस को फाइनल में पराजित करते हुए कांस्य पदक अपने नाम किया है।

इस टूर्नामेंट में भावना गुप्ता और डीएसपी प्रोबेशनर आकर्षी कश्यप के नेतृत्व में छत्तीसगढ़ की महिला टेबल टेनिस टीम ने उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए कांस्य पदक प्राप्त किया। यह छत्तीसगढ़ राज्य के गठन के बाद का पहला टीम इवेंट मेडल है, जो पुलिस खेलों में राज्य की बढ़ती हिस्सेदारी और प्रतिभा को दिखाता है।

भावना गुप्ता और आकर्षी कश्यप ने महिला युगल और मिश्रित युगल श्रेणियों में भी शानदार प्रदर्शन करते हुए अगले दौर में प्रवेश किया है। इन मुकाबलों के परिणाम आना अभी बाकी हैं, लेकिन छत्तीसगढ़ टीम को इस इवेंट्स में भी पदक की काफी उम्मीद है।

भारत रत्न संविधान निर्माता डॉ. भीम राव अम्बेडकर की जयन्ती पर विधायक सुनील सोनी ने किया नमन

रायपुर (विश्व परिवार)। आज भारत रत्न संविधान निर्माता डॉक्टर भीम राव अम्बेडकर को उनकी जयन्ती पर नगर पालिक निगम रायपुर के संस्कृति विभाग के तत्वावधान में नगर निगम जोन क्रमांक 4 के सहयोग से राजधानी शहर के महंत घासीदास संग्रहालय के समीप स्थित उनके प्रतिमा स्थल के समक्ष जयन्ती कार्यक्रम रखा गया. नगर निगम संस्कृति विभाग द्वारा रखे गए संक्षिप्त और गरिमामयी जयन्ती आयोजन में पहुंचकर रायपुर दक्षिण विधायक सुनील सोनी, रायपुर नगर पालिक निगम के सभापति सूर्यकान्त राठौड़, नगर निगम संस्कृति विभाग के अध्यक्ष अमर गिदवानी, नगर निगम रायपुर के पूर्व पार्षद सुनील वान्द्रे और नगरवासी विशिष्टजनों, गणमान्यजनों, सामाजिक कार्यकर्त्ताओं, महिलाओं, नवयुवकों, सफाई मित्रों, स्वच्छता दीदियों, श्रमवीरों, अधिकारियों, कर्मचारियों, आमजनों ने सैकड़ों की संख्या में पहुंचकर भारत रत्न संविधान निर्माता डॉक्टर भीम राव अम्बेडकर को जयन्ती पर प्रतिमा स्थल में उनका सादर नमन किया।

जनमानस समझे जैन साधु साध्वियों के पास धन संपत्ति नहीं होती

जैन संवेदना ट्रस्ट ने मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री को लिखा पत्र- जैन साधुओं पर हमले के कारणों का खुलासा करें

रायपुर (विश्व परिवार)। मध्यप्रदेश के सिंगोली के कछाला में पूज्य बलभद्र मुनि जी, मुनीन्द्र मुनि जी व शैलेष मुनि जी जैन साधुओं पर असामाजिक तत्वों द्वारा प्राणघातक हमले की जैन संवेदना ट्रस्ट के महेन्द्र कोचर व विजय चोपड़ा ने कड़े शब्दों में निंदा की है। महेन्द्र कोचर व विजय चोपड़ा ने आगे कहा कि सभ्य समाज में हिंसा का कोई स्थान नही है। जनमानस को समझना चाहिए कि जैन साधु साध्वी संसार की भौतिकता धन संपत्ति को त्याग कर दीक्षा ग्रहण करते हैं। पूरे देश में पदयात्रा करते हैं वाहनों का उपयोग नही करते हैं।जैन संवेदना ट्रस्ट ने मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री श्री मोहन यादव को पत्र लिखकर मांग की है कि प्राणघातक हमले की तह तक जांच होनी चाहिए। धन संपत्ति के लिए जैन साधुओं पर हमले की बात गले नही उतरती है। सम्पूर्ण तहकीकात कर सभी गिरफ्तार लोगों पर कठोर कार्यवाही की जानी चाहिए। कोचर व चोपड़ा ने कहा कि जैन साधु साध्वियों की पदयात्रा के समय श्रावक श्राविकाओं को साथ रहना चाहिए। ज्यादातर पदयात्रा में जैन विहार ग्रुप के लोग साथ रहते हैं लेकिन हमें सम्बंधित थाने में हमेशा सूचित करना चाहिए। जिससे प्रशासन जैन साधु साध्वियों के पदयात्रा को सुगम व सुरक्षित रखने में सहयोगी बन सके।

एनआईटी रायपुर में मनाई गई भारत रत्न बाबासाहेब डॉ. बी.आर. अम्बेडकर की 134वीं जयंती

रायपुर (विश्व परिवार)। राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान रायपुर देशभक्ति के उत्साह और बौद्धिक जोश से गूंज उठा, क्योंकि संस्थान ने भारत रत्न बाबासाहेब डॉ. बी.आर. अम्बेडकर की 134वीं जयंती मनाई। 14 अप्रैल 2025 को आयोजित इस कार्यक्रम, में दूरदर्शी नेता की विरासत और उनके मूल्यों को याद किया गया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि रायपुर के डिवीजनल कमिश्नर व आईएएस अफसर श्री महादेव कावरे रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता एनआईटी रायपुर के निदेशक डॉ. एन. वी. रमना राव ने की। उपस्थित विशिष्ट अतिथियों में रजिस्ट्रार प्रो. एन.डी. लोंढे, डीन (अकादमिक) प्रो. श्रीश वर्मा, डीन (छात्र कल्याण) प्रो. मनोज चोपकर, डीन (प्लानिंग एंड डेवलपमेंट) प्रो. जी.डी. रामटेक्कर, प्रोफेसर, डिपार्टमेंट ऑफ कंप्यूटर एप्लिकेशन, डॉ मिथलेश अतुलकर शामिल रहे 7 इस दौरान विभिन्न फैकल्टी और छात्र भी शामिल रहे।

कार्यक्रम की शुरुआत राष्ट्रीय गीत, वंदे मातरम की भावपूर्ण प्रस्तुति के साथ हुई, जिसके बाद गणमान्य व्यक्तियों ने मोमबत्तियाँ जलाकर और उनकी तस्वीर पर माला चढ़ाकर बाबासाहेब का सम्मान किया।

कार्यक्रम का एक मुख्य आकर्षण सभी उपस्थित लोगों द्वारा संविधान की प्रस्तावना का सामूहिक वाचन था, जो संविधान में निहित सिद्धांतों की पुनः पुष्टि का प्रतीक है, जो डॉ. अंबेडकर के हृदय को प्रिय दस्तावेज़ है। इस दौरान अम्बेडकर साहब के जीवन और योगदान पर प्रकाश डालने वाली एक डॉक्यूमेंट्री भी प्रदर्शित की गई, जो उनकी उल्लेखनीय यात्रा के बारे में जानकारी प्रदान करती है।

अपने उद्घाटन भाषण में डॉ. मिथलेश अतुलकर ने बाबा साहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर को श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि उनकी कलम उनकी तलवार थी और उनके शब्दों ने संविधान का रूप लिया। वे कभी तूफानों से नहीं डरे और सदैव नारी सम्मान एवं गरिमा के पक्षधर रहे। उन्होंने विद्या ददाति विनयम के मंत्र के माध्यम से शिक्षा की महत्ता को रेखांकित किया और बताया कि बाबा साहेब की मूर्ति केवल श्रद्धा का प्रतीक नहीं, बल्कि संघर्ष, शिक्षा, अध्यात्म और राष्ट्रनिर्माण की प्रेरणा है।

संस्थान के रजिस्ट्रार डॉ. नरेंद्र डी. लोंढे ने अपने वक्तव्य में बाबा साहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर को नमन करते हुए कहा कि वे एक ऐसे महापुरुष थे जिन्होंने शिक्षा को सबसे प्रभावशाली हथियार माना। उन्होंने कहा कि शिक्षण संस्थान केवल इमारतें नहीं, बल्कि समाज परिवर्तन के केंद्र होते हैं। बाबा साहेब के विचारों को स्मरण करते हुए उन्होंने कहा कि शिक्षा केवल एक जरिया नहीं, बल्कि अज्ञानता से ज्ञान की ओर जाने का मार्ग है, जो व्यक्ति को सशक्त बनाता है और समाज को दिशा देता है।

एनआईटी रायपुर के निदेशक डॉ. एन. वी. रमना राव ने अपने अध्यक्षीय भाषण में बाबा साहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर को समाज सुधारक, न्यायविद, अर्थशास्त्री, मानवाधिकारों के रक्षक और महान शिक्षाविद बताया।

प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी प्रियेश कुमार जैन द्वारा आसमां पब्लिसर्स इंडिया प्रा.लि. पंजाब नेशनल बैंक के सामने, जयस्तंभ चौक, रायपुर से मुद्रित एवं ओलंपस जिम के पीछे, सेक्टर-1, शंकर नगर रायपुर (छ.ग.) से प्रकाशित। संपादक : प्रदीप कुमार जैन, फोन नं. : 0771- 4017966, मो.- 9981924252 RNI.NO.CHHHIN/2013/50354